कोर्स कोड UHILTE-503

कथाकार प्रेमचंद

बी.ए. सत्र – पाँच

प्रो. विक्की रतन
राजकीय महाविद्यालय, बसोली

इकाई – एक

हिंदी उपन्यास का उद्‌भव एवं विकास

आधुनिक काल की विकसित गद्य विद्याओं में उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी का उपन्यास शब्द अंग्रेजी 'नॉविल' Novel का हिन्दी पयार्य माना जाता है। हिन्दी साहित्य में उपन्यास का उद्‌भव आधुनिक काल से माना जाता है। उपन्यास शब्द दो शब्दों के योग से बना है – 'उप' और 'न्यास'। 'उप' का अर्थ है समीप और 'न्यास' का अर्थ है रखना। इस प्रकार इसका अर्थ हुआ समीप रखना। हिन्दी उपन्यास साहित्य पर यूरोपीय साहित्य का सीधा प्रभाव है। भारतीय क्षेत्र जो सीधे तौर पर अंग्रेजों के संपर्क में था, वहां इसका आरम्भ कुछ पहले हुआ। बांग्ला में हिंदी से पूर्व ही उपन्यास लेखन आरम्भ हो चुका था। अतः हिन्दी उपन्यास पर बंगला उपन्यास का प्रभाव पड़ा।

हिंदी के प्रथम मौलिक उपन्यास के सन्दर्भ में विद्वानों में मतभेद है – इस सम्बन्ध में जिन दो उपन्यासों के नाम आते हैं वे हैं – श्रद्धाराम फुल्लोरी कृत 'भाग्यवती' (सन् 1877) तथा लाला श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षा गुरू' (सन् 1882)। परीक्ष गुरू को अधिकांश विद्वान हिंदी का पहला उपन्यास मानते हैं।

हिंदी उपन्यास परम्परा में प्रेमचन्द का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने उपन्यास को एक नई दिशा प्रदान की तथा युग प्रवर्तक का कार्य किया। प्रेमचन्द को केन्द्र बिन्दु मानकर हिन्दी उपन्यास के विकास को चार भागों में बांटा जा सकता है –

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास

2. प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास

3. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास

4. समकालीन हिन्दी उपन्यास

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास

प्रेमचन्द पूर्व युग के उपन्यास साहित्य को प्रमुख दो वर्गों में रखा जा सकता है – मनोरंजन प्रधान तथा समाजिक चेतना से युक्त।

ऐयारी, तिलस्मी, जासूसी आदि उपन्यास मनोरंजन की प्रवृति से परिचालित थे।

समाजिक उपन्यास प्रायः उपदेश प्रधान एवं सुधारवादी थे। श्रद्धाराम फिल्लौरी कृत 'भाग्यवती' एक सामाजिक उपन्यास है। इसका उद्देश्य भारतखण्ड की नारियों को गृहस्थ धर्म की शिक्षा से अवगत कराना था। 'परीक्षा गुरू' लाला श्रीनिवास दास द्वारा रचित उपदेश प्रधान रचना है। इसमें लेखक ने नायक मदमोहन के चरित्र हो उभारा है।

इस युग में **पं. बालकृष्ण भट्ट** ने 'नूतन ब्रह्मचारी' (1886 ई.) और 'सौ अजान एक सुजान (1892 ई.), **किशोरीलाल गोस्वामी** ने 'त्रिवेणी' (1890 ई.) वा 'सौभाग्यश्रेणी' 'लीलावती' वा 'आदर्शसती' (1901 ई.), 'पुनर्जन्म' (1907 ई.) आदि उपन्यासों की रचना की।

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय ने 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' (1899 ई.), तथा 'अधखिला फूल' (1907 ई.) समाजिक उपन्यास लिखे।

ठाकुर जगमोहन सिंह कृत 'श्यामा स्वप्न' (1888 ई.), **राधाकृष्णदास कृत** 'निस्सहाय हिन्दु' (1890 ई.), **लज्जाराम मेहता** कृत 'धूर्त रसिकलाल' (1889 ई.) आदि इस युग के प्रमुख उपन्यास हैं।

इस काल में तिलस्मी एवं जासूसी उपन्यास लिखे गए, जिनका उद्देश्य मनोरंजन था। इन उपन्यासों में कौतुहल और रोमांच अधिक होता था। इस परम्परा में **देवकीनंदन खत्री** ने 'चंद्रकांता', 'चंद्रकांता संतति', 'भूतनाथ' तथा **गोपालराम गहमरी** ने 'अद्भूत लाश', 'गुप्तचर', 'बेकसूर की फांसी', 'सरकटी लाश' आदि तिलस्मी एवं जासूसी उपन्यासों की रचना की।

ऐतिहासिक उपन्यासों में **किशोरी लाल गोस्वामी** ने 'आर्दश रमणी', 'पन्नाबाई', 'ताराबाई' आदि उपन्यास लिखे। इसके अतिरिक्त गंगाप्रसाद कृत 'पृथ्वीराज रासो' आदि प्रमुख हैं।

इस युग में बंगला, मराठी और अंग्रेजी उपन्यासों के अनुवाद भी हुए।

प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास

हिन्दी उपन्यासों में प्रेमचन्द युग का विशेष महत्व है। प्रेमचन्द जी के आगमन से हिन्दी उपन्यास को नये युग का आरम्भ होता है। उन्होंने हिन्दी कथा साहित्य में मनोरंजन के स्तर से उठाकर यथार्थ से जोड़ने का काम किया। अपने उपन्यासों में उन्होंने सामाजिक कुरीतियों – दहेज प्रथा, विधवा समस्या, निर्धन्ता, अंधविश्वास आदि के साथ राष्ट्रीय भावनाओं, ग्रामीण जीवन की समस्याओं आद का यथार्थ चित्रण किया है। वास्तव में उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द ने बहुमूल्य योगदान दिया है। उन्होंने आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को अपनाकर उपन्यास

रचना की। प्रेमचन्द गाँधीवाद विचारधारा से प्रभावित थे। प्रारम्भ में वह उर्दू में लिखते थे। 'वरदान' 'प्रेमाश्रम' 'सोजेवतन' आदि उनकी प्रारम्भिक रचनाएं हैं।

हिन्दी में सर्वप्रथम सन् 1918 ई. में उनका उपन्यास 'सेवासदन' प्रकाशित हुआ। 'सेवासदन' के बाद उन्होंने 'प्रेमाश्रम', 'निर्मला', 'रंगभूमि', 'कायाकलप', 'गबन', 'कर्मभूमि' तथा 'गोदान' उपन्यास लिखे। 'मंगलसूत्र' उनका अधूरा उपन्यास है। **'सेवासदन'** में उन्होंने सामाजिक अत्याचारों से पीड़ित नारी, समाज का पतन और वेश्यावृति में सुधार की समस्या का विश्लेषण किया है।

प्रेमाश्रम में कृषक जीवन की समस्याओं को चित्रित किया है।

निर्मला में दहेजप्रथा तथा अनमेल विवाह से होने वाले पारिवारिक विघटन का चित्रण किया है।

गबन में प्रर्दशनप्रियता, उधार की समस्या, वेश्यावृति, आभूषण प्रेम के दुष्परिणामों को चित्रित किया गया है।

समाज में हरिजनों की स्थिति और उनकी समस्याओं का चित्रण 'कर्मभूमि' में मिलता है। **रंगभूमि** में ग्रामीणों की स्थिति के साथ–साथ विभिन्न वर्गों का एक साथ विभिन्न रूप में चित्रण किया है। **गोदान** में ग्रामीण जीवन तथा कृषक जीवन की समस्याओं का चित्रण है। ग्रामीण जीवन का सच्चा, व्यापक एवं प्रभावशाली चित्रण जितना इस उपन्यास में हुआ, वह संसार के साहित्य में बेजोड़ है। **कायाकल्प** में जागीरदारी प्रथा तथा किसानों पर किये जाने वाले अत्याचारों का वर्णन है।

प्रेमचन्द के समकालीन उपन्यासकारों ने भी अपने अपने–अपने उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ एवं आर्दश का चित्रण किया है। इस युग में ऐतहासिक उपन्यासों की भी रचना हुई। **विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक** के 'माँ' और 'भिखारिणी' उपन्यास प्रसिद्ध है।

जयशंकर प्रसाद इस युग के उल्लेखनीय उपन्यासकार हैं। उन्होंने 'कंकाल' तथा 'तितली' नामक दो उपन्यासों की रचना की। 'कंकाल' इनकी विशिष्ट रचना है। इस युग के ऐतिहासिक उपन्यासकारों में **वृन्दावनलाल वर्मा** का विशेष स्थान है। 'गढ़कुंडार', 'विराट की पद्मिनी', 'झाँसी की रानी' आदि इनके प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यास हैं। 'लगन', 'कुंडलीचक्र' आदि इनके प्रमुख सामाजिक उपन्यास हैं।

भगवतीप्रसाद वाजपेयी, चतुरसेन शास्त्री, राधिकारमण प्रसाद सिंह, श्रीनाथ सिंह आदि इस युग के प्रमुख उपन्यासकार हैं।

2. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास

प्रेमचन्द के बाद हिन्दी उपन्यास कई मोड़ों से गुजरता हुआ दिखाई देता है। इस युग में ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, आंचलिक, प्रगतिवादी आदि विभिन्न विषयों से सम्बंधित उपन्यास की रचना हुई। इन उपन्यासों में कथानक, भावविचार, शिल्प तथा भाषा की दृष्टि से अनेक परिवर्तन दिखाई दिए।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास – मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों में 'जैनेन्द्र' का नाम प्रसिद्ध है। इन्होंने 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र', 'कल्याणी', 'सुखदा' आदि उपन्यासों की रचना की ।इन में दमित वासनाओं, कुण्ठाओं, अंतर्द्वद आदि मानसिक प्रवृतियों को उजागर किया गया है। इन्होंने नारी

आत्मपीड़ा का मनोवैज्ञानिक ढंग से वर्णन किया है तथा उसके स्वतंत्र अस्तित्व की मांग की हे। **इलाचंद्र जोशी** ने 'लज्जा', 'सन्यासी', 'पर्दे की रानी', 'प्रेत और छाया' आदि प्रमुख उपन्यासों की रचना की। इन्होंने अपने उपन्यासों में व्यक्ति की पीड़ा और मानसिक द्वंद, को प्रस्तुत किया है। **अज्ञेय** जी ने 'शेखर एक जीवनी', 'नदी के द्वीप', 'अपने–अपने अजनबी' आदि प्रमुख उपन्यासों की रचना की। 'शेखर एक जीवनी' हिंदी जगत की सशक्त एवं विशिष्ट रचना है। इनके उपन्यास मनोवैज्ञानिक होने के साथ–साथ दार्शनिकता का पुट लिए हुए हैं।

डॉ. देवराज के 'पथ की खोज', 'बाहर भीतर', **धर्मवीर भारती** के 'गुनाहों का देवता', 'सुरज का सातवाँ घोड़ा', **लक्ष्मीनारायण लाल** कृत 'धरती की आँखें' आदि इस युग के प्रमुख उपन्यास हैं।

सांस्कृति, ऐतिहासिक उपन्यास – **वृन्दावनलाल वर्मा** ने 'विराट की पद्‌मिनी', 'झाँसी की रानी', 'मृगनयनी' आदि प्रसिद्ध उपन्यासों की रचना की। इन्होंने अपने उपन्यासों में राजनीतिक, भौगालिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक समग्रता का सजीव चित्रण किया है।

हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यासकारों में दूसरा उल्लेखनीय नाम **हजारी प्रसाद द्विवेदी** का है। इन्होने अपने उपन्यासों में इतिहास और संस्कृति का अद्‌भुत सम्मिश्रण किया है। 'बाणभट्ट की आत्मकथा', चारूचन्द्र लेख, पुर्नवा, 'अनामदास का पोथा' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। द्विवेदी जी ने अतीत क सन्दर्भ में वर्तमान स्थितियों को पहचानने का प्रयत्न किया है। इसके अतिरिक्त **शिवप्रसाद मिश्र इन्द्र** ने 'बहती गंगा', **राजीव सक्सेना** ने 'पाणीपुत्री', **शिवप्रसाद सिंह** ने 'नीला चाँद', **रांगेयराघव** ने 'लखिमा की आँखें' आदि ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की।

सामाजिक यथार्थवाद उपन्यास – प्रेमचन्दोत्तर युग में सामाजिक यथार्थ की पृष्ठभूमि पर उपन्यास रचना की गई। इन में जीवन के यथार्थ का चित्रण है। **पाण्डेयबेचन शर्म उग्र** कृत 'चंद हसीनों के खतून', 'दिल्ली का दलाल', 'बुधुवा की बेटी', **निराला** कृत 'अप्सरा', 'अलका' 'प्रभावती', **भगवतीचरण वर्मा** कृत 'पतन', 'चित्रलेखा', 'तीन वर्ष', **उपेन्द्र नाथ अश्क** कृत 'बड़ी–बड़ी आँखें' आदि इस युग के प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

अमृतलाल ने 'महाकाल', 'बूंद और समुद्र', नरेश मेहता ने 'डूबते मस्तूल' आदि उपन्यासों की रचना की।

प्रगतिवादी उपन्यास – प्रगतिवादी साहित्यकारों ने जीवन का विश्लेषण मार्क्सवादी दृष्टिकोण से किया। इन्होंने अपने साहित्य में श्रमजीवी वर्ग को विशेष महत्व दिया है, साथ ही पूंजीवाद के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है। यशपाल, रांगेय राघव, राहुल सांकृत्यायन, भैरव प्रसाद आदि की गणना प्रगतिवादी लेखकों में होती है।

यशपाल ने 'दादा कामरेड', 'देशद्रोही', 'दिव्या', 'झुठा सच', 'मेरी तेरी उसकी बात' आदि उपन्यास लिखे। इनके उपन्यासों में भारत विभाजन की त्रासदी, राजनीतिक आन्दोलन, नारी की स्थिति तथा समाजवादी यथार्थ का चित्रण मिलता है। **राहुल सांकृत्यायन** कृत 'जय योधेय', 'सेनापति', **भेरवप्रसाद गुप्त** कृत 'शोले', 'सती मैय्या का चौरा', **अमृराय** कृत 'नागफनी का देश', **रांगेय राघव** कृत 'घरोंदे', 'कब तक पुकारू', **भीष्म साहनी** कृत 'झरोखे', 'तमस' आदि इस युग की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

आँचलिक उपन्यास – आँचलिक उपन्यास में किसी आँचल विशेष को उसकी समग्रता में प्रस्तुत किया जाता है। **फणीश्वरनाथ नाथ रेणु** का 'मैला आँचल' इस परंपरा का प्रथम

उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास में लेखक ने बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव का चित्रण किया है। **नागार्जुन** के 'बलचनमा', 'रतिनाथ की चाची', **राही मासूम रजा** के 'आधा गाँव', 'पानी के प्राचीर', **उदय शंकर भट्ट** का 'सागर लहरें और मनुष्य', **विवेकी राय** कृत 'बबूल', **शैलेश मंटियानी** कृत 'हौलदर' आदि इस परंपरा के प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

स्वातंत्र्योतर व समकालीन हिन्दी उपन्यास – स्वतंत्रा प्राप्ति के बाद हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में बदलाव आया। उपन्यास के कथा–शिल्प में कई नवीन प्रयोग किए गए। प्रेमचन्दोत्तर युग में **धर्मवीर भारती** कृत 'सूरज का सातवां घोड़ा', **सर्वेश्वर दयाल सकसेना** कृत 'सोया हुआ जल' आदि उपन्यास इस श्रेणी में आते हैं। **निर्मल वर्मा** के उपन्यास 'वे दिन', 'लालटीन की छत', **नरेश मेहता** का 'यह पथ बंधु था', **श्रीलाल शुक्ल** का 'रागदरबारी', **मोहन राकेश** कृत 'अंधेरे बंध कमरे', 'एक इंच मुस्कान', **उषा प्रियवंदा** कृत 'पंचपन खम्बे' आदि आधुनिकता बोध के उपन्यास हैं।

समकालीन उपन्यास अनेक विषयों के लेकर आगे बड़ा है। इन उपन्यासों में भारतीय जीवन की चिंता एवं मानसिकता का चित्रण है। उपभोक्तावाद, साम्प्रदायिकता, आदिवासी जीवन का तनाव, पारिवारिक विघटन, पलायन आदि अनेक विषयों से जुड़कर समकालीन साहित्य तीव्र गति से आगे बड़ा।

असगर वजाहत ने 'सात आसमान', **विनोद कुमार शुक्ल** कृत 'नौकर की कमीज', **अमरकांत** कृत 'इन्हीं हथियारों से', **चित्रा मुदग्ल** कृत 'आंवां, **मृदृला गर्ग** का 'कठगुलाब', मेत्रेयी पुष्पा का 'चाक', **चन्द्रकान्ता** कृत 'अर्थान्तर', 'ऐलान गली जिन्दा है', पंकज बिष्ट का

'उस चिड़िया का नाम', **कमलेश्वर** का 'कितने पाकिस्तान' इसी परंपरा के उपन्यास माने जाते हैं।

इस प्रकार हिन्दी उपन्यास साहित्य ने जिस तेजी से विकास किया है, वह निःसंदेह सराहनीय है। अतः माना जा सकता है कि इसका भविष्य उज्जवल है।

प्रेमचन्द

हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त करने वाले मुंशी प्रेमचन्द कथाकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में यथार्थ तथा आदर्श का सम्यक रूप से चित्रण किया है। मुंशी प्रेमचन्द का जनम 31 जुलाई 1880 को वाराणसी से लगभग पाँच किलोमीटर दूर लमही नामक गाँव में एक साधारण मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। पिता अजायबराय उनको धनपतराय और चाचा नवाबराय के नाम से पुकारते थे। परन्तु उनका वास्तविक नाम धनतपतराय था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पाँच वर्ष की आयु में 'उर्दु' से आरम्भ हुई। आठ वर्ष की अवस्था में उनकी माँ का देहान्त हो गया और पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। सौतेली माँ से उन्हें प्रेम की प्राप्ति न हो सकी। प्रेमचन्द का बचपन बड़ी कठिनाई में व्यतीत हुआ। उन्होंने अपने जीवन के विषय में स्वयं लिखा है – "पाँव में जूते न थे। देह पर साबित कपड़े न थे। हेडमास्टर ने फीस माफ कर दी थी। इम्तहान सिर पर था और में बाँस के फाटक पर एक लड़के को पढ़ाने जाता था। पढ़ा कर छः बजे छुट्टी पाता। वहाँ से मेरा घर देहात में पाँच मील पर था। तेज चलने पर भी आठ बजे से पहले घर न पहुँच सकता था।" लगभग पन्द्रह वर्ष की आयु में उनका विवाह करा दिया गया। अगले ही वर्ष प्रेमचन्द के पिता का देहान्त हो गया और घर का सारा भार उनके कंधों पर आ पड़ा। पत्नी और सौतेली

माँ के व्यवहार से वह चिंतित थे। किसी तरह मैट्रिक पास हुए और अठारह रुपये वेतन पर पाठशाला में अध्यापक नियुक्त हो गए। साथ ही लेखन कार्य जारी रखा। 1905 ई. में 'जमाना' नामक पत्रिका में वह कहानियां और साहित्यिक टिप्पणियां लिखने लगे। उसके बाद उनका दूसरा विवाह बालविधवा शिवरानी से सम्पन्न हुआ। सन् 1908 ई. में उनका 'सोजे वतन' कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ था जिसे सरकार ने जब्त कर लिया। सरकारी नौकरी के चलते उनका तबादला कई स्थानों पर होता रहा और वह डिप्टी इन्सपेक्टर के पद तक जा पहुँचे। तत्पश्चात् उन्होंने हिन्दी में लिखना आरम्भ किया साथ ही बी.ए. की परीक्षा उतीर्ण की।

सन् 1921 ई. में गांधी जी की जनसभा से प्रभावित होकर सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। 1923 ई. में उन्होंने बनारस में सरस्वती प्रेस की स्थापना की, पर प्रेस ठीक से चला नहीं। उन्होंने माधुरी, हंस, जागरण आदि नामक कई पत्र पत्रिकाएँ निकाली।

10 अप्रैल 1936 को प्रगतिशील लेखक संघ का प्रथम अधिवेशन हुआ; जिसकी अध्यक्षता प्रेमचन्द ने की। इसी समय उनका 'गोदान' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। वह बीमार पड़ गए और स्वास्थ ने साथ नहीं दिया। अंततः 8 अक्टूबर, 1936 को बनारस में उनका स्वर्गवास हो गया।

कृतित्व – आर्दशमूर्ति यथार्थवादी कलाकार प्रेमचन्द जी को प्रमुख कथाकार के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में तत्कालीन समाज को पूर्ण रूप से चित्रित करते हुए भारत के चिंतन व आदर्शों को भी वर्णित किया है। प्रेमचन्द जी ने जहाँ एक ओर सामाजिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों, अंधपरम्पराओं पर कड़ा प्रहार किया है, वहीं दूसरी ओर मानवीय संवेदनाओं को

भी उभारा है। ग्रामीण जीवन का जैसा वर्णन प्रेमचन्द जी ने किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :–

उपन्यास :– वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, प्रमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र (अपूर्ण)।

कहानी संग्रह :– प्रेमचन्द जी ने लगभग 300 कहानियाँ लिखी हैं। जो वर्तमान में मानसरोवर के आठ भागों में संकलित है। अधिकतर कहानियाँ ग्रामीण जीवन के पारिवारिक सम्बन्धों, मूल्य–बोध और आदर्श प्रस्तुत करने की भावना से जुड़ी हुई है। उनकी कहानियों में ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण भी देखने को मिलता है।

नाटक :– उन्होंने संग्राम, कर्बला और प्रेम की वेदी नाटकों की रचना की।

बाल साहित्य :– जंगल की कहानियां, कुत्ते की कहानी, रामचर्चा आदि।

अनुदित साहित्य :– इसके अतिरिक्त प्रेमचन्द जी ने जार्ज इलियट, टालस्टाय, गॉल्सवर्दी आदि की रचनाओं का अनुवाद भी किया।

जीवनी :– प्रेमचन्द जी की महात्मा शेखसादी, दुर्गादास आदि जीवनी पुस्तकें भी प्रकाशित हुई थी।

आरम्भ से अंत तक राजनीतिक और मानसिक दासता से मुक्ति ही उनके साहित्य की मुख्य ध्वनि है। उनके साहित्य की विशेषताएं निम्नलिखित हैं :–

यथार्थवाद और आदर्शवाद :– दास्य भाव से मुक्ति ही समाज के कल्याण का मुख्य द्वार है। प्रेमचन्द की दृष्टि में मुक्ति प्राप्ति के क्या–क्या साधन हैं? इस विषय में आदर्श को लेकर चले। ज्यों–ज्यों उनका सामाजिक और राजनीतिक ज्ञान बढ़ता रहा, उनके विचारों में वृद्धि

होती गई। इस कारण वह आदर्शवादी से यथार्थवादी बन गए। उन्होंने अपनी रचनाओं में आदर्शवाद के साथ–साथ सामाजिक यथार्थ के अन्तर्गत अंधविश्वास, रूढ़ियों, कुरीतियों आदि का मार्मिक चित्रण किया है। 'पंचपरमेश्वर' कहानी एक आदर्शवादी कहानी है। जिसमें लेखक ने समाज में इस आदर्शवादी धारणा को प्रस्तुत करना चाहा है कि पंच में परमेश्वर का वास होता है। 'गोदान' उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने 'होरी' के माध्यम से भारतीय कृषक जीवन को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। इसके अतिरिक्त उनकी कई रचनाएँ आदर्श और यथार्थ पर आधारित है।

राष्ट्रीय प्रेम :– राष्ट्रीय चेतना का परिचय उनके आरम्भिक चरित्र और लेखन से ही मिलने लगता है। 'जमाना' में उन्होंने राजनीतिक तथा देशप्रेम से सम्बंधित कहानियाँ तथा टिप्पणियां लिखीं। उनकी रचनाओं में देश प्रेम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रेमचन्द जी ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेशी का प्रचार, पुलिस के अत्याचारों आदि विषयों को अपनी रचनाओं का आधार बनाया। स्त्रियों का सत्यग्रह अन्दोलन में भाग लेना और जेल जाने का चित्रण भी उनकी रचनाओं में होने लगा। उन्होंने अपने उपन्यासों में भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से देश प्रेम का वर्णन किया है।

नारी दृष्टिकोण :– प्रेमचन्द की रचनाओं में नारी पात्रों की अधिकता है, जिन पर दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि नारी, प्रेम और विवाह रूपी समस्याओं के विषय में क्या विचारधारा थी। यह बात निर्विवाद सत्य है कि इस रूढ़िगत और पुरुष प्रधान समाज में स्त्री का व्यक्तित्व कुचला हुआ है। कहने को मानव जीवन की कर्णधार, देवी, सती चाहे कुछ भी कह दो पर उसकी वास्तविकता दासी से अधिक नहीं थी। समाज में हो रहे शोषण को

देखकर ही प्रेमचन्द ने स्त्री के प्रति अन्यायों का विरोध अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। उनके अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी है। उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं – अनमेल विवाह, वेश्यावृति, पर्दा प्रथा, कुरूपता आदि के साथ उस पर होन वाले अत्याचारों का विरोध किया हे। वह नारी को पुरुष के समान अधिकार देने के पक्ष में थे। प्रेमचन्द जी ने 'सेवासदन' तथा 'निर्मला' उपन्यास में दहेज के अभाव के कारण उत्पन्न अनमेल विवाह की समस्या को दर्शाया है। 'सुमन' तथा 'निर्मला' दोनों का अनमेल विवाह दहेज की कुप्रथा के कारण ही हुआ था। वह नारी जीवन की समस्याओं को सुलझाना आवश्यक समझते थे।

ग्रामीण कृषकों की समस्या :– सभी वर्गों को विषय बनाकर लिखने वाले मुंशी प्रेमचन्द मुख्य रूप से किसानों के लेखक कहे जाते हैं। किसानों के प्रति उनका गहरा लगाव था। यही कारण था कि उनकी रचनाओं में ज्यादातर रचनाएं किसान जीवन और ग्रामीण समस्याओं पर आधारित हैं। इस विषय पर उनका पहला वृह्द ग्रन्थ 'प्रेमाश्रम' उपन्यास है। उपन्यास की भूमिका में 'श्रीरामदास गौड' लिखते हैं कि "बिना लिखे साहित्य का भावी इतिहास –लेखक जब भारतीय उपन्यास की चर्चा करेंगे, उसे किसानों के जीवन की सच्ची फोटो खींचने का श्रेय प्रेमचन्द को देना पड़ेगा।" 'गोदान' उपन्यास में लेखक ने 'होरी' के माध्यम से कृषक जीवन की विसंगतियों का यथार्थ चित्रण किया है। 'प्रेमाश्रम' में उन्होंने ग्रामीण जीवन को चित्रित करते हुए सामन्ती और जमींदार सभ्यता के खोखलेपन को उजागर किया है।

चरित्र–चित्रण :– प्रेमचन्द जी ने अपनी रचनाओं में सभी वर्गों के पात्रों का चयन किया है। उनके रचना पात्र समाज के प्रत्येक क्षेत्र और हर वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। 'गोदान' का

'होरी' कृषक वर्ग का प्रतिनिधि है, 'गबन' का 'रमानाथ' मध्यवर्गीय दुर्बलताओं का प्रतिनिधित्व करता है और 'रंगभूमि' का 'जनसेवक' उद्योगपति, पूंजीपति वर्ग का प्रतिनिधि है। प्रेमचन्द के पात्र आदर्शवादी और यथार्थवादी दोनों कोटियों के अर्न्तगत हैं। आदर्शवादी पात्र मानव के उदारवादी चेष्टाओं के प्रतिरूप हैं तथा यथार्थवादी दुर्बलताओं से सम्बंधित हैं। लेखक ने बड़े कलात्मक ढंग से इन पात्रों का चित्रण किया है। यही कारण है कि उनका चरित्र–चित्रण प्रशंसनीय है।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द समाज के उत्कृष्ट कथाकार थे। उन्होंने प्रत्येक वर्ग का उनके जीवन के अनुरूप चित्रण किया है। प्रेमचन्द जी ने शोषित वर्ग की प्रत्येक समस्या को स्वयं अनुभव किया और उन समस्याओं को आधार बनाकर उनके विरुद्ध आवाज उठाई। साथ ही उन्होंने उन समस्याओं का समाधान करने का भी प्रयत्न किया।

गबन उपन्यास की तात्विक समस्या

जिन उपकरणों की सहायता से उपन्यास का निर्माण होता है शास्त्रीय भाषा में उसे उपन्यास तत्व कहा जाता है। अधिकांश विद्वानों ने उपन्यास के छः तत्व स्वीकार किये हैं – कथावस्तु, पात्र–योजना, संवाद योजना, देशकाल और वातावरण, भाषा शैली और उद्धेश्य। उपर्युक्त तत्वों के आधार पर 'गबन' उपन्यास का विवेचन इस प्रकार है –

कथावस्तु :– कथावस्तु उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। इसे उपन्यास का मूल आधार तथा प्राण भी माना जाता है। कथावस्तु के बिना किसी भी उपन्यास की रचना संभव नहीं है।

उपन्यास की कथावस्तु का चयन इतिहास, पुराण जीवन के विस्तृत आयामों आदि कहीं से भी किया जा सकता है। एक अच्छी कथावस्तु से ही एक अच्छे उपन्यास की रचना होती है। कथावस्तु में मौलिकता, रोचकता, सुसंगठिता, संभाव्यता आदि गुण विद्यमान होने चाहिए।

'गबन' उपन्यास में प्रेमचन्द ने मूल रूप से मध्यवर्गीय परिवार की इच्छा–आकांक्षाओं, प्रदर्शनप्रियता तथा उससे उत्पन्न कई कठिनाइयों तथा समस्याओं को चित्रित किया है। रमानाथ तथा जालपा के माध्यम से उपन्यासकार ने मध्यवर्गीय परिवार का बड़ा मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। जालपा दीनदयाल तथा मानकी की इकलौती पुत्री है। दीनदयाल पाँच रुपये मासिक वेतन की एक छोटी नौकरी के बावजूद अपना जीवन बड़ी ठाठ तथा शानोशौकत से जीता है। लाड़–प्यार में पली जालपा बचपन से ही बड़ी महत्वकांक्षिणी हो जाती हे। उसे आभूषणों से अत्यंत प्रेम था। माता–पिता तथा सखियों द्वारा उसके मस्तिष्क में यह बात बिठा दी जाती है कि विवाह में उसे ससुराल से चंद्रहार की प्राप्ति होगी। परन्तु जब उसे ससुराल से चंद्रहार नहीं मिलता तो वह निराश हो जाती है और पति को 'गबन' तक के लिए विवश कर देती है। उसे अपनी भूल का एहसास तब होता है जब रमानाथ कलकत्ता भाग जाता है।

रमानाथ दयानाथ का पुत्र है। दयानाथ एक ईमानदार और सत्यनिष्ठ व्यक्ति है। अपनी इसी ईमानदारी के चलते उसे अभाव का जीवन व्यतीत करना पड़ता है। परन्तु रमानाथ इसके विपरीत मध्यवर्गीय प्रदर्शनप्रियता से प्रभावित है। वह पढ़ाई लिखाई से अधिक फेशन को महत्व देता है। अपने विवाह पर कर्ज लेकर पत्नी के लिए गहने खरीदता है और कर्ज न चुकाने की स्थिति में गबन तक करता है। वह पत्नी को बिना कुछ बताए कलकत्ता भाग जाता है। जहाँ पुलिस के चक्रव्यूह में फंस जाता है और झूठी गवाही देने के लिए राजी हो जाता है। अंत में

पत्नी जालपा तथा जोहरा की सहायता से जज को सब कुछ बता देता है और अपनी भूल का पश्चाताप करता है।

उपन्यासकार ने मुख्य कथा को गति देने के लिए रतन, देवीदीन तथा जोहरा से सम्बन्धित कईं प्रासंगिक कथाओं को बड़ी कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। साथ ही आभूषण के दुष्परिणाम, कर्ज, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं को बड़ी सफलतापूर्वक उजागर किया है।

पात्र और चरित्र–चित्रण :– उपन्यास की घटनाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव जिन पर पड़ता है वही उपन्यास के पात्र कहलाते हैं। उपन्यास के पात्रों के क्रिया–कलापों से ही कथावस्तु का निर्माण होता है। अतः उपन्यास के पात्रों में स्वाभाविकता और सजीवता होना अति आवश्यक है। तीनों वर्गों का यथार्थ रूप से अंकन करने वाले मुंशी प्रेमचन्द ने वकील इन्द्रभूषण, उनकी पत्नी रत्न और मणिभूषण को उच्चवर्ग के पात्रों में, दीनदयाल रमानाथ, दयानाथ और जालापा को मध्यवर्ग के पात्रों में तथा देवीदीन और जोहरा को निम्न वर्ग के पात्रों के रूप में चित्रित किया है। अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले ये पात्र अपनी व्यक्तिगत विशेषताएं भी रखते हैं। ये सभी पात्र यथार्थवादी होते हुए भी आदर्शोन्मुख हैं। सभी पात्रों का यथार्थ रूप में वर्णन करने पर भी उन्हें आदर्श के मार्ग पर अग्रसर करना मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता है। जालपा और रमानाथ इसका स्पष्ट उदाहरण है। जालपा के त्याग भाव से प्रभावित होकर जोहरा का वेश्यावृति को छोड़ना इसका दूसरा उदाहरण है। जालपा और रत्न का प्रेमभाव तथा सहानुभूति उपन्यास का तीसरा उदाहरण है जो इनके आदर्शवादी रूप को प्रस्तुत करते हैं। लेखक ने बड़े कलात्मक ढ़ग से इन पात्रों का चरित्र–चित्रण कुछ बुद्धि के बल पर तो कुछ इनके पारस्परिक वार्तालाप को आधार बनाकर किया है।

संवाद योजना :– पात्रों के पारस्परिक वार्तालाप को संवाद या कथोपकथन कहते हैं। पात्रों के चारित्रिक विशेषताओं तथा आपसी संबन्धों को स्पष्ट करने में, घटनाओं में श्रृंखला तथा सम्बन्ध स्थापित करने में और उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट करने में संवादों की मुख्य भूमिका होती है। संवाद सहज, सरल, स्वाभाविक, संक्षिप्त, सार्थक तथा पात्रानुकूल होने चाहिए।

'गबन' उपन्यास में नाटकीय संवाद स्थान–स्थान पर दृष्टिगोचर होते हैं। देवीदीन तथा रमानाथ का यह संवाद उदाहरण रूप में लिया जा सकता है –

"तुम्हारे बाल–बच्चे तो हैं न भैया?"

"रमा ने इस भाव से कहा मानों हैं, पर न के बराबर हैं – हाँ हैं तो।"

"कोई चिट्ठी चपाती आई थी?"

"ना"

"और न तुमने लिखी? अरे तीन महीने से काई चिट्ठी नहीं भेजी? घबराते न होंगे लोग?"

"अरे भले आदमी, इतना तो लिख दो मैं यहां कुशल से हूँ।

घर से भाग आए थे। उन लोगों को कितनी चिन्ता हो रही होगी। मां–बाप तो हैं न।"

"हाँ हैं तो।"

नाटकीय सौंदर्य से परिपूर्ण यह संवाद रमानाथ की संकोची मनोवृति का स्पष्ट उदाहरण है।

देशकाल और वातावरण :– कथानक की वास्तविकता सिद्ध करने वाले देशकाल तथा वातावरण तत्व की उपन्यास में अहम भूमिका होती है। देशकाल तथा वातावरण के अर्न्तगत

युग विशेष की सामाजिक, आर्थिक , राजनीतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के साथ–साथ लोगों की आस्थाएँ, रीतिरिवाज, विश्वास, वेशभूषा, रहन–सहन, खान–पान आदि का चित्रण होता है।

'गबन' उपन्यास में लेखक ने तत्कालीन (1930–31) समाज में मध्यवर्गीय परिवार की मानसिकता, प्रदर्शनप्रियता, कर्ज की प्रवृति, पुलिस की दमनकारी नीति, वेश्यावृति आदि समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। उपन्यास के प्रारम्भ में ही प्राकृतिक परिवेश का मनोहरम चित्रण प्रस्तुत किया गया है। सावन ऋतु के अनुपम सौंदर्य का वर्णन करते हुए उपन्यासकार लिखता है –

"बरसात के दिन हैं, सावन का महीना है। आकाश में सुनहरी घटाएं छायी हुई हैं। रह–रह कर रिमझिम वर्षा होने लगती है। अभी तीसरा पहर है पर ऐसा मालूम हो रहा है, शाम हो गयी। आमों के बाग में झूला पड़ा हुआ है।"

भाषा–शैली :– उपन्यासकार जिस माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को उजागर करता है, उसे भाषा कहते हैं। उपन्यास की भाषा, सरल, सुबोध, सरस, सहज, पात्रानुकूल होने के साथ–साथ पाठक और लेखक के बीच तादात्म्य स्थापित करने में सहायक होती है। शैली उपन्यासकार की निजी वस्तु है। उपन्यास लिखने में लेखक वर्णनात्मक, भावात्मक, पत्रात्मक आदि कई शैलियों का प्रयोग करता है।

'गबन' उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने सरल, सहज, प्रवाहमय तथा पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। उपन्यास को सफल बनाने में लेखक ने तत्सम–वज्रपात, प्रतिध्वनि, तद्भव–मरण, सराब, सुराज, देशज शब्दों में – माची, जाकड़, विदेशी (अंग्रेज) शब्द – टेनिस, शर्ट, हेडक्लर्क, उर्दू–फारसी के शब्दों में – दस्तूर, कबूल, रिश्वत आदि शब्दों का प्रयोग किया

है। उपन्यास की भाषा को प्रभावशाली बनाने में लोकप्रचलित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। जैसे – हराम की कमाई हराम में जाना', जले पर नमक छिड़कना आदि 'गबन' उपन्यास में लेखक ने वर्णनात्मक, भावात्मक, विचारात्मक आदि शैलियों का भी सफल प्रयोग किया है।

उद्देश्य :– बिना उद्देश्य के किसी भी रचना का निर्माण असम्भव है। अर्थात प्रत्येक रचना का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। प्रेमचन्द जी के अनुसार – "मानव चरित्र पर प्रकाश डालना तथा उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है।

'गबन' उपन्यास एक उद्देश्य प्रधान रचना है। इसमें लेखक ने मध्यवर्गीय समाज की प्रदर्शप्रियता, आभूषणप्रियता, भ्रष्टाचार, पुलिस की दमनकारी नीति, कर्ज आदि से उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं का पर्दाफाश किया है। उपन्यासकार ने इन समस्याओं को दुखों का कारण मानते हुए इनके दुष्परिणामों से बचने का तथा सरल एवं सात्विक जीवन जीने का संदेश दिया है ताकि एक उन्नत समाज का निर्माण हो सके।

अभ्यास के प्रश्न

1. 'गबन' उपन्यास के उदभव एवं विकास पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
2. 'गबन' उपन्यास की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।
3. प्रेमचन्द जी का साहित्यिक परिचय दीजिए।
4. 'गबन' उपन्यास की संवाद–योजना पर प्रकाश डालें।
5. 'गबन' उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

कोर्स कोड UHILTE-503

कथाकार प्रेमचंद

बी.ए. सत्र – पाँच

प्रो. विक्की रतन

राजकीय महाविद्यालय, बसोली

इकाई – एक

हिंदी उपन्यास का उद्‌भव एवं विकास

आधुनिक काल की विकसित गद्य विद्याओं में उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी का उपन्यास शब्द अंग्रेजी 'नॉविल' Novel का हिन्दी पयार्य माना जाता है। हिन्दी साहित्य में उपन्यास का उद्‌भव आधुनिक काल से माना जाता है। उपन्यास शब्द दो शब्दों के योग से बना है – 'उप' और 'न्यास'। 'उप' का अर्थ है समीप और 'न्यास' का अर्थ है रखना। इस प्रकार इसका अर्थ हुआ समीप रखना। हिन्दी उपन्यास साहित्य पर यूरोपीय साहित्य का सीधा प्रभाव है। भारतीय क्षेत्र जो सीधे तौर पर अंग्रेजों के संपर्क में था, वहां इसका आरम्भ कुछ पहले हुआ। बांग्ला में हिंदी से पूर्व ही उपन्यास लेखन आरम्भ हो चुका था। अतः हिन्दी उपन्यास पर बंगला उपन्यास का प्रभाव पड़ा।

हिंदी के प्रथम मौलिक उपन्यास के सन्दर्भ में विद्वानों में मतभेद है – इस सम्बन्ध में जिन दो उपन्यासों के नाम आते हैं वे हैं – श्रद्धाराम फुल्लोरी कृत 'भाग्यवती' (सन् 1877) तथा लाला श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षा गुरू' (सन् 1882)। परीक्ष गुरू को अधिकांश विद्वान हिंदी का पहला उपन्यास मानते हैं।

हिंदी उपन्यास परम्परा में प्रेमचन्द का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने उपन्यास को एक नई दिशा प्रदान की तथा युग प्रवर्तक का कार्य किया। प्रेमचन्द को केन्द्र बिन्दु मानकर हिन्दी उपन्यास के विकास को चार भागों में बांटा जा सकता है –

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास

2. प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास

3. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास

4. समकालीन हिन्दी उपन्यास

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास

प्रेमचन्द पूर्व युग के उपन्यास साहित्य को प्रमुख दो वर्गों में रखा जा सकता है – मनोरंजन प्रधान तथा समाजिक चेतना से युक्त।

ऐयारी, तिलस्मी, जासूसी आदि उपन्यास मनोरंजन की प्रवृति से परिचालित थे।

समाजिक उपन्यास प्रायः उपदेश प्रधान एवं सुधारवादी थे। श्रद्धाराम फिल्लौरी कृत 'भाग्यवती' एक सामाजिक उपन्यास है। इसका उद्देश्य भारतखण्ड की नारियों को गृहस्थ धर्म की शिक्षा से अवगत कराना था। 'परीक्षा गुरू' लाला श्रीनिवास दास द्वारा रचित उपदेश प्रधान रचना है। इसमें लेखक ने नायक मदमोहन के चरित्र हो उभारा है।

इस युग में **पं. बालकृष्ण भट्ट** ने 'नूतन ब्रह्मचारी' (1886 ई.) और 'सौ अजान एक सुजान (1892 ई.), **किशोरीलाल गोस्वामी** ने 'त्रिवेणी' (1890 ई.) वा 'सौभाग्यश्रेणी' 'लीलावती' वा 'आदर्शसती' (1901 ई.), 'पुनर्जन्म' (1907 ई.) आदि उपन्यासों की रचना की।

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय ने 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' (1899 ई.), तथा 'अधखिला फूल' (1907 ई.) समाजिक उपन्यास लिखे।

ठाकुर जगमोहन सिंह कृत 'श्यामा स्वप्न' (1888 ई.), **राधाकृष्णदास कृत** 'निस्सहाय हिन्दु' (1890 ई.), **लज्जाराम मेहता** कृत 'धूर्त रसिकलाल' (1889 ई.) आदि इस युग के प्रमुख उपन्यास हैं।

इस काल में तिलस्मी एवं जासूसी उपन्यास लिखे गए, जिनका उद्देश्य मनोरंजन था। इन उपन्यासों में कौतुहल और रोमांच अधिक होता था। इस परम्परा में **देवकीनंदन खत्री** ने 'चंद्रकांता', 'चंद्रकांता संतति', 'भूतनाथ' तथा **गोपालराम गहमरी** ने 'अद्‌भूत लाश', 'गुप्तचर', 'बेकसूर की फांसी', 'सरकटी लाश' आदि तिलस्मी एवं जासूसी उपन्यासों की रचना की।

ऐतिहासिक उपन्यासों में **किशोरी लाल गोस्वामी** ने 'आर्दश रमणी', 'पन्नाबाई', 'ताराबाई' आदि उपन्यास लिखे। इसके अतिरिक्त गंगाप्रसाद कृत 'पृथ्वीराज रासो' आदि प्रमुख हैं।

इस युग में बंगला, मराठी और अंग्रेजी उपन्यासों के अनुवाद भी हुए।

प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास

हिन्दी उपन्यासों में प्रेमचन्द युग का विशेष महत्व है। प्रेमचन्द जी के आगमन से हिन्दी उपन्यास को नये युग का आरम्भ होता है। उन्होंने हिन्दी कथा साहित्य में मनोरंजन के स्तर से उठाकर यथार्थ से जोड़ने का काम किया। अपने उपन्यासों में उन्होंने सामाजिक कुरीतियों – दहेज प्रथा, विधवा समस्या, निर्धन्ता, अंधविश्वास आदि के साथ राष्ट्रीय भावनाओं, ग्रामीण जीवन की समस्याओं आद का यथार्थ चित्रण किया है। वास्तव में उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द ने बहुमूल्य योगदान दिया है। उन्होंने आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को अपनाकर उपन्यास

रचना की। प्रेमचन्द गाँधीवाद विचारधारा से प्रभावित थे। प्रारम्भ में वह उर्दू में लिखते थे। 'वरदान' 'प्रेमाश्रम' 'सोजेवतन' आदि उनकी प्रारम्भिक रचनाएं हैं।

हिन्दी में सर्वप्रथम सन् 1918 ई. में उनका उपन्यास 'सेवासदन' प्रकाशित हुआ। 'सेवासदन' के बाद उन्होंने 'प्रेमाश्रम', 'निर्मला', 'रंगभूमि', 'कायाकलप', 'गबन', 'कर्मभूमि' तथा 'गोदान' उपन्यास लिखे। 'मंगलसूत्र' उनका अधूरा उपन्यास है। **'सेवासदन'** में उन्होंने सामाजिक अत्याचारों से पीड़ित नारी, समाज का पतन और वेश्यावृति में सुधार की समस्या का विश्लेषण किया है।

प्रेमाश्रम में कृषक जीवन की समस्याओं को चित्रित किया है।

निर्मला में दहेजप्रथा तथा अनमेल विवाह से होने वाले पारिवारिक विघटन का चित्रण किया है।

गबन में प्रर्दशनप्रियता, उधार की समस्या, वेश्यावृति, आभूषण प्रेम के दुष्परिणामों को चित्रित किया गया है।

समाज में हरिजनों की स्थिति और उनकी समस्याओं का चित्रण 'कर्मभूमि' में मिलता है। **रंगभूमि** में ग्रामीणों की स्थिति के साथ–साथ विभिन्न वर्गों का एक साथ विभिन्न रूप में चित्रण किया है। **गोदान** में ग्रामीण जीवन तथा कृषक जीवन की समस्याओं का चित्रण है। ग्रामीण जीवन का सच्चा, व्यापक एवं प्रभावशाली चित्रण जितना इस उपन्यास में हुआ, वह संसार के साहित्य में बेजोड़ है। **कायाकल्प** में जागीरदारी प्रथा तथा किसानों पर किये जाने वाले अत्याचारों का वर्णन है।

प्रेमचन्द के समकालीन उपन्यासकारों ने भी अपने अपने–अपने उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ एवं आर्दश का चित्रण किया है। इस युग में ऐतहासिक उपन्यासों की भी रचना हुई। **विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक** के 'माँ' और 'भिखारिणी' उपन्यास प्रसिद्ध है।

जयशंकर प्रसाद इस युग के उल्लेखनीय उपन्यासकार हैं। उन्होंने 'कंकाल' तथा 'तितली' नामक दो उपन्यासों की रचना की। 'कंकाल' इनकी विशिष्ट रचना है। इस युग के ऐतिहासिक उपन्यासकारों में **वृन्दावनलाल वर्मा** का विशेष स्थान है। 'गढ़कुंडार', 'विराट की पद्मिनी', 'झाँसी की रानी' आदि इनके प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यास हैं। 'लगन', 'कुंडलीचक्र' आदि इनके प्रमुख सामाजिक उपन्यास हैं।

भगवतीप्रसाद वाजपेयी, चतुरसेन शास्त्री, राधिकारमण प्रसाद सिंह, श्रीनाथ सिंह आदि इस युग के प्रमुख उपन्यासकार हैं।

2. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास

प्रेमचन्द के बाद हिन्दी उपन्यास कई मोड़ों से गुजरता हुआ दिखाई देता है। इस युग में ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, आंचलिक, प्रगतिवादी आदि विभिन्न विषयों से सम्बंधित उपन्यास की रचना हुई। इन उपन्यासों में कथानक, भावविचार, शिल्प तथा भाषा की दृष्टि से अनेक परिवर्तन दिखाई दिए।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास – मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों में 'जैनेन्द्र' का नाम प्रसिद्ध है। इन्होंने 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र', 'कल्याणी', 'सुखदा' आदि उपन्यासों की रचना की ।इन में दमित वासनाओं, कुण्ठाओं, अंतर्द्वद आदि मानसिक प्रवृतियों को उजागर किया गया है। इन्होंने नारी

आत्मपीड़ा का मनोवैज्ञानिक ढंग से वर्णन किया है तथा उसके स्वतंत्र अस्तित्व की मांग की हे। **इलाचंद्र जोशी** ने 'लज्जा', 'सन्यासी', 'पर्दे की रानी', 'प्रेत और छाया' आदि प्रमुख उपन्यासों की रचना की। इन्होंने अपने उपन्यासों में व्यक्ति की पीड़ा और मानसिक द्वंद, को प्रस्तुत किया है। **अज्ञेय** जी ने 'शेखर एक जीवनी', 'नदी के द्वीप', 'अपने–अपने अजनबी' आदि प्रमुख उपन्यासों की रचना की। 'शेखर एक जीवनी' हिंदी जगत की सशक्त एवं विशिष्ट रचना है। इनके उपन्यास मनोवैज्ञानिक होने के साथ–साथ दार्शनिकता का पुट लिए हुए हैं।

डॉ. देवराज के 'पथ की खोज', 'बाहर भीतर', **धर्मवीर भारती** के 'गुनाहों का देवता', 'सुरज का सातवाँ घोड़ा', **लक्ष्मीनारायण लाल** कृत 'धरती की आँखें' आदि इस युग के प्रमुख उपन्यास हैं।

सांस्कृति, ऐतिहासिक उपन्यास – **वृन्दावनलाल वर्मा** ने 'विराट की पद्मिनी', 'झाँसी की रानी', 'मृगनयनी' आदि प्रसिद्ध उपन्यासों की रचना की। इन्होंने अपने उपन्यासों में राजनीतिक, भौगालिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक समग्रता का सजीव चित्रण किया है।

हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यासकारों में दूसरा उल्लेखनीय नाम **हजारी प्रसाद द्विवेदी** का है। इन्होने अपने उपन्यासों में इतिहास और संस्कृति का अद्भुत सम्मिश्रण किया है। 'बाणभट्ट की आत्मकथा', चारूचन्द्र लेख, पुर्नवा, 'अनामदास का पोथा' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। द्विवेदी जी ने अतीत क सन्दर्भ में वर्तमान स्थितियों को पहचानने का प्रयत्न किया है। इसके अतिरिक्त **शिवप्रसाद मिश्र इन्द्र** ने 'बहती गंगा', **राजीव सक्सेना** ने 'पाणीपुत्री', **शिवप्रसाद सिंह** ने 'नीला चाँद', **रांगेयराघव** ने 'लखिमा की आँखें' आदि ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की।

सामाजिक यथार्थवाद उपन्यास – प्रेमचन्दोत्तर युग में सामाजिक यथार्थ की पृष्ठभूमि पर उपन्यास रचना की गई। इन में जीवन के यथार्थ का चित्रण है। **पाण्डेयबेचन शर्म उग्र** कृत 'चंद हसीनों के खतून', 'दिल्ली का दलाल', 'बुधुवा की बेटी', **निराला** कृत 'अप्सरा', 'अलका' 'प्रभावती', **भगवतीचरण वर्मा** कृत 'पतन', 'चित्रलेखा', 'तीन वर्ष', **उपेन्द्र नाथ अश्क** कृत 'बड़ी–बड़ी आँखें' आदि इस युग के प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

अमृतलाल ने 'महाकाल', 'बूंद और समुद्र', नरेश मेहता ने 'डूबते मस्तूल' आदि उपन्यासों की रचना की।

प्रगतिवादी उपन्यास – प्रगतिवादी साहित्यकारों ने जीवन का विश्लेषण मार्क्सवादी दृष्टिकोण से किया। इन्होंने अपने साहित्य में श्रमजीवी वर्ग को विशेष महत्व दिया है, साथ ही पूंजीवाद के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है। यशपाल, रांगेय राघव, राहुल सांकृत्यायन, भैरव प्रसाद आदि की गणना प्रगतिवादी लेखकों में होती है।

यशपाल ने 'दादा कामरेड', 'देशद्रोही', 'दिव्या', 'झुठा सच', 'मेरी तेरी उसकी बात' आदि उपन्यास लिखे। इनके उपन्यासों में भारत विभाजन की त्रासदी, राजनीतिक आन्दोलन, नारी की स्थिति तथा समाजवादी यथार्थ का चित्रण मिलता है। **राहुल सांकृत्यायन** कृत 'जय योधेय', 'सेनापति', **भेरवप्रसाद गुप्त** कृत 'शोले', 'सती मैय्या का चौरा', **अमृराय** कृत 'नागफनी का देश', **रांगेय राघव** कृत 'घरोंदे', 'कब तक पुकारू', **भीष्म साहनी** कृत 'झरोखे', 'तमस' आदि इस युग की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

आँचलिक उपन्यास – आँचलिक उपन्यास में किसी आँचल विशेष को उसकी समग्रता में प्रस्तुत किया जाता है। **फणीश्वरनाथ नाथ रेणु** का 'मैला आँचल' इस परंपरा का प्रथम

उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास में लेखक ने बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव का चित्रण किया है। **नागार्जुन** के 'बलचनमा', 'रतिनाथ की चाची', **राही मासूम रजा** के 'आधा गाँव', 'पानी के प्राचीर', **उदय शंकर भट्ट** का 'सागर लहरें और मनुष्य', **विवेकी राय** कृत 'बबूल', **शैलेश मंटियानी** कृत 'हौलदर' आदि इस परंपरा के प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

स्वातंत्र्योतर व समकालीन हिन्दी उपन्यास – स्वतंत्रा प्राप्ति के बाद हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में बदलाव आया। उपन्यास के कथा–शिल्प में कई नवीन प्रयोग किए गए। प्रेमचन्दोत्तर युग में **धर्मवीर भारती** कृत 'सूरज का सातवां घोड़ा', **सर्वेश्वर दयाल सकसेना** कृत 'सोया हुआ जल' आदि उपन्यास इस श्रेणी में आते हैं। **निर्मल वर्मा** के उपन्यास 'वे दिन', 'लालटीन की छत', **नरेश मेहता** का 'यह पथ बंधु था', **श्रीलाल शुक्ल** का 'रागदरबारी', **मोहन राकेश** कृत 'अंधेरे बंध कमरे', 'एक इंच मुस्कान', **उषा प्रियवंदा** कृत 'पंचपन खम्बे' आदि आधुनिकता बोध के उपन्यास हैं।

समकालीन उपन्यास अनेक विषयों के लेकर आगे बड़ा है। इन उपन्यासों में भारतीय जीवन की चिंता एवं मानसिकता का चित्रण है। उपभोक्तावाद, साम्प्रदायिकता, आदिवासी जीवन का तनाव, पारिवारिक विघटन, पलायन आदि अनेक विषयों से जुड़कर समकालीन साहित्य तीव्र गति से आगे बड़ा।

असगर वजाहत ने 'सात आसमान', **विनोद कुमार शुक्ल** कृत 'नौकर की कमीज', **अमरकांत** कृत 'इन्हीं हथियारों से', **चित्रा मुदग्ल** कृत 'आंवां, **मृदृला गर्ग** का 'कठगुलाब', मेत्रेयी पुष्पा का 'चाक', **चन्द्रकान्ता** कृत 'अर्थान्तर', 'ऐलान गली जिन्दा है', पंकज बिष्ट का

'उस चिड़िया का नाम', **कमलेश्वर** का 'कितने पाकिस्तान' इसी परंपरा के उपन्यास माने जाते हैं।

इस प्रकार हिन्दी उपन्यास साहित्य ने जिस तेजी से विकास किया है, वह निःसंदेह सराहनीय है। अतः माना जा सकता है कि इसका भविष्य उज्जवल है।

प्रेमचन्द

हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त करने वाले मुंशी प्रेमचन्द कथाकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में यथार्थ तथा आदर्श का सम्यक रूप से चित्रण किया है। मुंशी प्रेमचन्द का जनम 31 जुलाई 1880 को वाराणसी से लगभग पाँच किलोमीटर दूर लमही नामक गाँव में एक साधारण मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। पिता अजायबराय उनको धनपतराय और चाचा नवाबराय के नाम से पुकारते थे। परन्तु उनका वास्तविक नाम धनतपतराय था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पाँच वर्ष की आयु में 'उर्दु' से आरम्भ हुई। आठ वर्ष की अवस्था में उनकी माँ का देहान्त हो गया और पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। सौतेली माँ से उन्हें प्रेम की प्राप्ति न हो सकी। प्रेमचन्द का बचपन बड़ी कठिनाई में व्यतीत हुआ। उन्होंने अपने जीवन के विषय में स्वयं लिखा है – "पाँव में जूते न थे। देह पर साबित कपड़े न थे। हेडमास्टर ने फीस माफ कर दी थी। इम्तहान सिर पर था और में बाँस के फाटक पर एक लड़के को पढ़ाने जाता था। पढ़ा कर छः बजे छुट्टी पाता। वहाँ से मेरा घर देहात में पाँच मील पर था। तेज चलने पर भी आठ बजे से पहले घर न पहुँच सकता था।" लगभग पन्द्रह वर्ष की आयु में उनका विवाह करा दिया गया। अगले ही वर्ष प्रेमचन्द के पिता का देहान्त हो गया और घर का सारा भार उनके कंधों पर आ पड़ा। पत्नी और सौतेली

माँ के व्यवहार से वह चिंतित थे। किसी तरह मैट्रिक पास हुए और अठारह रुपये वेतन पर पाठशाला में अध्यापक नियुक्त हो गए। साथ ही लेखन कार्य जारी रखा। 1905 ई. में 'जमाना' नामक पत्रिका में वह कहानियां और साहित्यिक टिप्पणियां लिखने लगे। उसके बाद उनका दूसरा विवाह बालविधवा शिवरानी से सम्पन्न हुआ। सन् 1908 ई. में उनका 'सोजे वतन' कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ था जिसे सरकार ने जब्त कर लिया। सरकारी नौकरी के चलते उनका तबादला कई स्थानों पर होता रहा और वह डिप्टी इन्सपेक्टर के पद तक जा पहुँचे। तत्पश्चात् उन्होंने हिन्दी में लिखना आरम्भ किया साथ ही बी.ए. की परीक्षा उतीर्ण की।

सन् 1921 ई. में गांधी जी की जनसभा से प्रभावित होकर सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। 1923 ई. में उन्होंने बनारस में सरस्वती प्रेस की स्थापना की, पर प्रेस ठीक से चला नहीं। उन्होंने माधुरी, हंस, जागरण आदि नामक कई पत्र पत्रिकाएँ निकाली।

10 अप्रैल 1936 को प्रगतिशील लेखक संघ का प्रथम अधिवेशन हुआ; जिसकी अध्यक्षता प्रेमचन्द ने की। इसी समय उनका 'गोदान' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। वह बीमार पड़ गए और स्वास्थ ने साथ नहीं दिया। अंततः 8 अक्टूबर, 1936 को बनारस में उनका स्वर्गवास हो गया।

कृतित्व – आर्दशमूर्ति यथार्थवादी कलाकार प्रेमचन्द जी को प्रमुख कथाकार के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में तत्कालीन समाज को पूर्ण रूप से चित्रित करते हुए भारत के चिंतन व आदर्शों को भी वर्णित किया है। प्रेमचन्द जी ने जहाँ एक ओर सामाजिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों, अंधपरम्पराओं पर कड़ा प्रहार किया है, वहीं दूसरी ओर मानवीय संवेदनाओं को

भी उभारा है। ग्रामीण जीवन का जैसा वर्णन प्रेमचन्द जी ने किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :–

उपन्यास :– वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, प्रमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र (अपूर्ण)।

कहानी संग्रह :– प्रेमचन्द जी ने लगभग 300 कहानियाँ लिखी हैं। जो वर्तमान में मानसरोवर के आठ भागों में संकलित है। अधिकतर कहानियाँ ग्रामीण जीवन के पारिवारिक सम्बन्धों, मूल्य–बोध और आदर्श प्रस्तुत करने की भावना से जुड़ी हुई है। उनकी कहानियों में ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण भी देखने को मिलता है।

नाटक :– उन्होंने संग्राम, कर्बला और प्रेम की वेदी नाटकों की रचना की।

बाल साहित्य :– जंगल की कहानियां, कुत्ते की कहानी, रामचर्चा आदि।

अनुदित साहित्य :– इसके अतिरिक्त प्रेमचन्द जी ने जार्ज इलियट, टालस्टाय, गॉल्सवर्दी आदि की रचनाओं का अनुवाद भी किया।

जीवनी :– प्रेमचन्द जी की महात्मा शेखसादी, दुर्गादास आदि जीवनी पुस्तकें भी प्रकाशित हुई थी।

आरम्भ से अंत तक राजनीतिक और मानसिक दासता से मुक्ति ही उनके साहित्य की मुख्य ध्वनि है। उनके साहित्य की विशेषताएं निम्नलिखित हैं :–

यथार्थवाद और आदर्शवाद :– दास्य भाव से मुक्ति ही समाज के कल्याण का मुख्य द्वार है। प्रेमचन्द की दृष्टि में मुक्ति प्राप्ति के क्या–क्या साधन हैं? इस विषय में आदर्श को लेकर चले। ज्यों–ज्यों उनका सामाजिक और राजनीतिक ज्ञान बढ़ता रहा, उनके विचारों में वृद्धि

होती गई। इस कारण वह आदर्शवादी से यथार्थवादी बन गए। उन्होंने अपनी रचनाओं में आदर्शवाद के साथ–साथ सामाजिक यथार्थ के अन्तर्गत अंधविश्वास, रूढ़ियों, कुरीतियों आदि का मार्मिक चित्रण किया है। 'पंचपरमेश्वर' कहानी एक आदर्शवादी कहानी है। जिसमें लेखक ने समाज में इस आदर्शवादी धारणा को प्रस्तुत करना चाहा है कि पंच में परमेश्वर का वास होता है। 'गोदान' उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने 'होरी' के माध्यम से भारतीय कृषक जीवन को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। इसके अतिरिक्त उनकी कई रचनाएँ आदर्श और यथार्थ पर आधारित है।

राष्ट्रीय प्रेम :– राष्ट्रीय चेतना का परिचय उनके आरम्भिक चरित्र और लेखन से ही मिलने लगता है। 'जमाना' में उन्होंने राजनीतिक तथा देशप्रेम से सम्बंधित कहानियाँ तथा टिप्पणियां लिखीं। उनकी रचनाओं में देश प्रेम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रेमचन्द जी ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेशी का प्रचार, पुलिस के अत्याचारों आदि विषयों को अपनी रचनाओं का आधार बनाया। स्त्रियों का सत्यग्रह अन्दोलन में भाग लेना और जेल जाने का चित्रण भी उनकी रचनाओं में होने लगा। उन्होंने अपने उपन्यासों में भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से देश प्रेम का वर्णन किया है।

नारी दृष्टिकोण :– प्रेमचन्द की रचनाओं में नारी पात्रों की अधिकता है, जिन पर दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि नारी, प्रेम और विवाह रूपी समस्याओं के विषय में क्या विचारधारा थी। यह बात निर्विवाद सत्य है कि इस रूढ़िगत और पुरुष प्रधान समाज में स्त्री का व्यक्तित्व कुचला हुआ है। कहने को मानव जीवन की कर्णधार, देवी, सती चाहे कुछ भी कह दो पर उसकी वास्तविकता दासी से अधिक नहीं थी। समाज में हो रहे शोषण को

देखकर ही प्रेमचन्द ने स्त्री के प्रति अन्यायों का विरोध अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। उनके अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी है। उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं – अनमेल विवाह, वेश्यावृति, पर्दा प्रथा, कुरूपता आदि के साथ उस पर होन वाले अत्याचारों का विरोध किया हे। वह नारी को पुरुष के समान अधिकार देने के पक्ष में थे। प्रेमचन्द जी ने 'सेवासदन' तथा 'निर्मला' उपन्यास में दहेज के अभाव के कारण उत्पन्न अनमेल विवाह की समस्या को दर्शाया है। 'सुमन' तथा 'निर्मला' दोनों का अनमेल विवाह दहेज की कुप्रथा के कारण ही हुआ था। वह नारी जीवन की समस्याओं को सुलझाना आवश्यक समझते थे।

ग्रामीण कृषकों की समस्या :– सभी वर्गों को विषय बनाकर लिखने वाले मुंशी प्रेमचन्द मुख्य रूप से किसानों के लेखक कहे जाते हैं। किसानों के प्रति उनका गहरा लगाव था। यही कारण था कि उनकी रचनाओं में ज्यादातर रचनाएं किसान जीवन और ग्रामीण समस्याओं पर आधारित हैं।" इस विषय पर उनका पहला वृह्द ग्रन्थ 'प्रेमाश्रम' उपन्यास है। उपन्यास की भूमिका में 'श्रीरामदास गौड' लिखते हैं कि "बिना लिखे साहित्य का भावी इतिहास –लेखक जब भारतीय उपन्यास की चर्चा करेंगे, उसे किसानों के जीवन की सच्ची फोटो खींचने का श्रेय प्रेमचन्द को देना पड़ेगा।" 'गोदान' उपन्यास में लेखक ने 'होरी' के माध्यम से कृषक जीवन की विसंगतियों का यथार्थ चित्रण किया है। 'प्रेमाश्रम' में उन्होंने ग्रामीण जीवन को चित्रित करते हुए सामन्ती और जमींदार सभ्यता के खोखलेपन को उजागर किया है।

चरित्र–चित्रण :– प्रेमचन्द जी ने अपनी रचनाओं में सभी वर्गों के पात्रों का चयन किया है। उनके रचना पात्र समाज के प्रत्येक क्षेत्र और हर वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। 'गोदान' का

'होरी' कृषक वर्ग का प्रतिनिधि है, 'गबन' का 'रमानाथ' मध्यवर्गीय दुर्बलताओं का प्रतिनिधित्व करता है और 'रंगभूमि' का 'जनसेवक' उद्योगपति, पूंजीपति वर्ग का प्रतिनिधि है। प्रेमचन्द के पात्र आदर्शवादी और यथार्थवादी दोनों कोटियों के अर्न्तगत हैं। आदर्शवादी पात्र मानव के उदारवादी चेष्टाओं के प्रतिरूप हैं तथा यथार्थवादी दुर्बलताओं से सम्बंधित हैं। लेखक ने बड़े कलात्मक ढंग से इन पात्रों का चित्रण किया है। यही कारण है कि उनका चरित्र–चित्रण प्रशंसनीय है।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द समाज के उत्कृष्ट कथाकार थे। उन्होंने प्रत्येक वर्ग का उनके जीवन के अनुरूप चित्रण किया है। प्रेमचन्द जी ने शोषित वर्ग की प्रत्येक समस्या को स्वयं अनुभव किया और उन समस्याओं को आधार बनाकर उनके विरुद्ध आवाज उठाई। साथ ही उन्होंने उन समस्याओं का समाधान करने का भी प्रयत्न किया।

गबन उपन्यास की तात्विक समस्या

जिन उपकरणों की सहायता से उपन्यास का निर्माण होता है शास्त्रीय भाषा में उसे उपन्यास तत्व कहा जाता है। अधिकांश विद्वानों ने उपन्यास के छः तत्व स्वीकार किये हैं – कथावस्तु, पात्र–योजना, संवाद योजना, देशकाल और वातावरण, भाषा शैली और उद्धेश्य। उपर्युक्त तत्वों के आधार पर 'गबन' उपन्यास का विवेचन इस प्रकार है –

कथावस्तु :– कथावस्तु उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। इसे उपन्यास का मूल आधार तथा प्राण भी माना जाता है। कथावस्तु के बिना किसी भी उपन्यास की रचना संभव नहीं है।

उपन्यास की कथावस्तु का चयन इतिहास, पुराण जीवन के विस्तृत आयामों आदि कहीं से भी किया जा सकता है। एक अच्छी कथावस्तु से ही एक अच्छे उपन्यास की रचना होती है। कथावस्तु में मौलिकता, रोचकता, सुसंगठिता, संभाव्यता आदि गुण विद्यमान होने चाहिए।

'गबन' उपन्यास में प्रेमचन्द ने मूल रूप से मध्यवर्गीय परिवार की इच्छा–आकांक्षाओं, प्रदर्शनप्रियता तथा उससे उत्पन्न कई कठिनाइयों तथा समस्याओं को चित्रित किया है। रमानाथ तथा जालपा के माध्यम से उपन्यासकार ने मध्यवर्गीय परिवार का बड़ा मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। जालपा दीनदयाल तथा मानकी की इकलौती पुत्री है। दीनदयाल पाँच रुपये मासिक वेतन की एक छोटी नौकरी के बावजूद अपना जीवन बड़ी ठाठ तथा शानोशौकत से जीता है। लाड़–प्यार में पली जालपा बचपन से ही बड़ी महत्वकांक्षिणी हो जाती हे। उसे आभूषणों से अत्यंत प्रेम था। माता–पिता तथा सखियों द्वारा उसके मस्तिष्क में यह बात बिठा दी जाती है कि विवाह में उसे ससुराल से चंद्रहार की प्राप्ति होगी। परन्तु जब उसे ससुराल से चंद्रहार नहीं मिलता तो वह निराश हो जाती है और पति को 'गबन' तक के लिए विवश कर देती है। उसे अपनी भूल का एहसास तब होता है जब रमानाथ कलकत्ता भाग जाता है।

रमानाथ दयानाथ का पुत्र है। दयानाथ एक ईमानदार और सत्यनिष्ठ व्यक्ति है। अपनी इसी ईमानदारी के चलते उसे अभाव का जीवन व्यतीत करना पड़ता है। परन्तु रमानाथ इसके विपरीत मध्यवर्गीय प्रदर्शनप्रियता से प्रभावित है। वह पढ़ाई लिखाई से अधिक फेशन को महत्व देता है। अपने विवाह पर कर्ज लेकर पत्नी के लिए गहने खरीदता है और कर्ज न चुकाने की स्थिति में गबन तक करता है। वह पत्नी को बिना कुछ बताए कलकत्ता भाग जाता है। जहाँ पुलिस के चक्रव्यूह में फंस जाता है और झूठी गवाही देने के लिए राजी हो जाता है। अंत में

पत्नी जालपा तथा जोहरा की सहायता से जज को सब कुछ बता देता है और अपनी भूल का पश्चाताप करता है।

उपन्यासकार ने मुख्य कथा को गति देने के लिए रतन, देवीदीन तथा जोहरा से सम्बन्धित कईं प्रासंगिक कथाओं को बड़ी कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। साथ ही आभूषण के दुष्परिणाम, कर्ज, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं को बड़ी सफलतापूर्वक उजागर किया है।

पात्र और चरित्र–चित्रण :– उपन्यास की घटनाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव जिन पर पड़ता है वही उपन्यास के पात्र कहलाते हैं। उपन्यास के पात्रों के क्रिया–कलापों से ही कथावस्तु का निर्माण होता है। अतः उपन्यास के पात्रों में स्वाभाविकता और सजीवता होना अति आवश्यक है। तीनों वर्गों का यथार्थ रूप से अंकन करने वाले मुंशी प्रेमचन्द ने वकील इन्द्रभूषण, उनकी पत्नी रत्न और मणिभूषण को उच्चवर्ग के पात्रों में, दीनदयाल रमानाथ, दयानाथ और जालापा को मध्यवर्ग के पात्रों में तथा देवीदीन और जोहरा को निम्न वर्ग के पात्रों के रूप में चित्रित किया है। अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले ये पात्र अपनी व्यक्तिगत विशेषताएं भी रखते हैं। ये सभी पात्र यथार्थवादी होते हुए भी आदर्शोन्मुख हैं। सभी पात्रों का यथार्थ रूप में वर्णन करने पर भी उन्हें आदर्श के मार्ग पर अग्रसर करना मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता है। जालपा और रमानाथ इसका स्पष्ट उदाहरण है। जालपा के त्याग भाव से प्रभावित होकर जोहरा का वेश्यावृति को छोड़ना इसका दूसरा उदाहरण है। जालपा और रत्न का प्रेमभाव तथा सहानुभूति उपन्यास का तीसरा उदाहरण है जो इनके आदर्शवादी रूप को प्रस्तुत करते हैं। लेखक ने बड़े कलात्मक ढ़ग से इन पात्रों का चरित्र–चित्रण कुछ बुद्धि के बल पर तो कुछ इनके पारस्परिक वार्तालाप को आधार बनाकर किया है।

संवाद योजना :– पात्रों के पारस्परिक वार्तालाप को संवाद या कथोपकथन कहते हैं। पात्रों के चारित्रिक विशेषताओं तथा आपसी संबन्धों को स्पष्ट करने में, घटनाओं में श्रृंखला तथा सम्बन्ध स्थापित करने में और उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट करने में संवादों की मुख्य भूमिका होती है। संवाद सहज, सरल, स्वाभाविक, संक्षिप्त, सार्थक तथा पात्रानुकूल होने चाहिए।

'गबन' उपन्यास में नाटकीय संवाद स्थान–स्थान पर दृष्टिगोचर होते हैं। देवीदीन तथा रमानाथ का यह संवाद उदाहरण रूप में लिया जा सकता है –

"तुम्हारे बाल–बच्चे तो हैं न भैया?"

"रमा ने इस भाव से कहा मानों हैं, पर न के बराबर हैं – हाँ हैं तो।"

"कोई चिट्ठी चपाती आई थी?"

"ना"

"और न तुमने लिखी? अरे तीन महीने से काई चिट्ठी नहीं भेजी? घबराते न होंगे लोग?"

"अरे भले आदमी, इतना तो लिख दो मैं यहां कुशल से हूँ।

घर से भाग आए थे। उन लोगों को कितनी चिन्ता हो रही होगी। मां–बाप तो हैं न।"

"हाँ हैं तो।"

नाटकीय सौंदर्य से परिपूर्ण यह संवाद रमानाथ की संकोची मनोवृति का स्पष्ट उदाहरण है।

देशकाल और वातावरण :– कथानक की वास्तविकता सिद्ध करने वाले देशकाल तथा वातावरण तत्व की उपन्यास में अहम भूमिका होती है। देशकाल तथा वातावरण के अर्न्तगत

युग विशेष की सामाजिक, आर्थिक , राजनीतिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के साथ–साथ लोगों की आस्थाएँ, रीतिरिवाज, विश्वास, वेशभूषा, रहन–सहन, खान–पान आदि का चित्रण होता है।

'गबन' उपन्यास में लेखक ने तत्कालीन (1930–31) समाज में मध्यवर्गीय परिवार की मानसिकता, प्रदर्शनप्रियता, कर्ज की प्रवृति, पुलिस की दमनकारी नीति, वेश्यावृति आदि समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। उपन्यास के प्रारम्भ में ही प्राकृतिक परिवेश का मनोहरम चित्रण प्रस्तुत किया गया है। सावन ऋतु के अनुपम सौंदर्य का वर्णन करते हुए उपन्यासकार लिखता है –

"बरसात के दिन हैं, सावन का महीना है। आकाश में सुनहरी घटाएं छायी हुई हैं। रह–रह कर रिमझिम वर्षा होने लगती है। अभी तीसरा पहर है पर ऐसा मालूम हो रहा है, शाम हो गयी। आमों के बाग में झूला पड़ा हुआ है।"

भाषा–शैली :– उपन्यासकार जिस माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को उजागर करता है, उसे भाषा कहते हैं। उपन्यास की भाषा, सरल, सुबोध, सरस, सहज, पात्रानुकूल होने के साथ–साथ पाठक और लेखक के बीच तादात्म्य स्थापित करने में सहायक होती है। शैली उपन्यासकार की निजी वस्तु है। उपन्यास लिखने में लेखक वर्णनात्मक, भावात्मक, पत्रात्मक आदि कई शैलियों का प्रयोग करता है।

'गबन' उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने सरल, सहज, प्रवाहमय तथा पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। उपन्यास को सफल बनाने में लेखक ने तत्सम–वज्रपात, प्रतिध्वनि, तद्भव–मरण, सराब, सुराज, देशज शब्दों में – माची, जाकड़, विदेशी (अंग्रेज) शब्द – टेनिस, शर्ट, हेडक्लर्क, उर्दू–फारसी के शब्दों में – दस्तूर, कबूल, रिश्वत आदि शब्दों का प्रयोग किया

है। उपन्यास की भाषा को प्रभावशाली बनाने में लोकप्रचलित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। जैसे – हराम की कमाई हराम में जाना', जले पर नमक छिड़कना आदि 'गबन' उपन्यास में लेखक ने वर्णनात्मक, भावात्मक, विचारात्मक आदि शैलियों का भी सफल प्रयोग किया है।

उद्देश्य :– बिना उद्देश्य के किसी भी रचना का निर्माण असम्भव है। अर्थात प्रत्येक रचना का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। प्रेमचन्द जी के अनुसार – "मानव चरित्र पर प्रकाश डालना तथा उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है।

'गबन' उपन्यास एक उद्देश्य प्रधान रचना है। इसमें लेखक ने मध्यवर्गीय समाज की प्रदर्शप्रियता, आभूषणप्रियता, भ्रष्टाचार, पुलिस की दमनकारी नीति, कर्ज आदि से उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं का पर्दाफाश किया है। उपन्यासकार ने इन समस्याओं को दुखों का कारण मानते हुए इनके दुष्परिणामों से बचने का तथा सरल एवं सात्विक जीवन जीने का संदेश दिया है ताकि एक उन्नत समाज का निर्माण हो सके।

इकाई – दो

गबन के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण

जालपा

जालपा 'गबन' उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र एवं नायिका है। वह उपन्यास का केन्द्र बिन्दु है क्योंकि सम्पूर्ण कथा जालपा के इर्द–गिर्द घूमती है। वह मुंशी दीनदयाल की इकलौती पुत्री तथा रमानाथ की पत्नी है। अपने माता–पिता की इकलौती संतान होने के कारण उसका जीवन बड़े लाड–प्यार में बीता। पिता दीनदयाल उसकी हर इच्छा की पूर्ति करते थे। वह जहाँ कही भी जाते उसके लिए कोई न कोई वस्तु अवश्य लाते विशेषकर आभूषण। इसी कारण जालपा का आभूषणों के प्रति प्रेम एवं आकर्षण स्वाभाविक था। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :–

आभूषणों के प्रति तीव्र लालसा :– जालपा को बचपन से ही आभूषणों के प्रति विशेष प्रेम था। क्योंकि वह आरम्भ से ही जिस पारिवारिक वातावरण में पली बड़ी वहाँ आभूषणों को बड़ा महत्व दिया जाता था। पिता अक्सर उसे आभूषण दिया करते थे। माँ उसे बिसाती से बिल्लौरी चंद्रहार दिलवा देती है जो उसे सभी आभूषणों से अधिक प्रिय था। आभूषण ही उसके खिलौने तथा बाल संपत्ति थी। गाँव में कोई त्यौहार या उत्सव आता तो वह उसे पहन कर जाती। चंद्रहार के अतिरिक्त उसे कोई दूसरा आभूषण अच्छा ही नहीं लगता।

जब वह बड़ी हुई तो उसके मन में असली चंद्रहार लेने की तीव्र इच्छा हुई। उसे आश्वासन दिया गया कि विवाह के समय ससुराल से उसके लिए चंद्रहार आएगा। परन्तु ऐसा

न हुआ विवाह के समय आभूषणों में जब उसे चंद्रहार कही नज़र नहीं आता तो वह फूट–फूट कर रोने लगती है। "जब मालूम हो गया कि चंद्रहार नहीं है तो उसके कलेजे पर चोट सी लग गई। मालूम हुआ देह में रक्त की एक बूंद भी नहीं है। मानो उसे मूर्छा आ जाती है। वह उन्माद की सी दशा में अपने कमरे में आई और फूट–फूटकर रोने लगी।"

जालपा के आभूषण प्रियता एवं हठ के कारण ही रमानाथ उधार के आभूषण लाता हे। यह उधार 'गबन' का कारण बन जाता है।

विवेकशील नारी :– जालपा एक बुद्धिवान नारी है। वह विषम परिस्थितियों का बड़े साहस के साथ सामना करती है। जब रमानाथ घर छोड़कर चला जाता है तो वह धेर्य का परिचय देती है तथा सारी स्थिति को समझ लेने के पश्चात रमानाथ को ढूंढने निकलती है। वह अपने आभूषणों को बेचकर म्यूनिस्पैलिटी दफतर में पैसे जमा करवाती है और पति को बचा लेती है। रमानाथ का पता लगाने हेतु वह शतरंज की पहेली को प्रकाशित करवाती है और उसे ढूंढ लेती है। अपनी बुद्धि कौशल से ही वह रमानाथ को गवाही न देने के लिए राज़ी करती है जिससे उसकी बुद्धिमता का पता चलता है।

आदर्श पत्नी :– जालपा आदर्श पत्नी थी। उसका आभूषणों के प्रति आग्रह इसलिए हुआ कि रमानाथ उससे अपने आर्थिक रूप से सम्पन्न होने की बड़ी–बड़ी बातें करता रहता था। वो वास्तविक परिस्थितियों से अनजान थी। वह ऐसा कभी नहीं चाहती थी कि उसका पति कर्ज लेकर उसके लिए आभूषण खरीदे। परन्तु जब उसे वास्तविक स्थिति का बोध होता है तो वह दुखी हो जाती है। अपने को दोषी मानती है और पश्चाताप की अग्नि में जल उठती है।

जालपा अपने आभूषणों को बेचकर सारे ऋण का भुगतान करती है। ऐसा करके उसे सच्चे सुख की अनुभूति होती है।

जालपा का रमानाथ को यह कहना कि सारा दोष मेरा है उसके आदर्श पत्नी स्वरूप को दर्शाता है।

"इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं, सरासर मेरा दोष है। अगर मैं भली होती तो आज यह दिन क्यों आता, जो पुरुष तीस चालीस रुपये महीने का नौकर हो, उसकी स्त्री अगर दो–चार रुपये खर्च करे, हजार दो हजार के गहने पहनने की नीयत रखे तो वह अपनी और उसकी तबाही का सामान तैयार कर रही है। अतः तुमने मुझे धन लौलुप समझा तो कोई अन्याय नहीं किया। मगर एक बार जिस आग में जल चुकी उसमें फिर न कुदूंगी।"

आत्म–सम्मान की भावना :– जालपा आत्म–सम्मान से परिपूर्ण नारी है। उसमें स्वाभिमान कूट–कूट कर भरा हुआ है। माँ द्वारा भेजे हुए चंद्रहार को स्वीकार नहीं करती है। वह उसे अपना–अपमान समझती है – "दान भिखारियों को दिया जाता है। मैं किसी का दान न लुंगी, चाहे वह माता ही क्यों न हो।"

रामनाथ द्वारा झूठी गवाही देने पर वह उसे फटकारती है। जालपा विषम परिस्थितियों में भी माता–पिता, सास–ससुर, रतन किसी से सहायता नहीं लेती है। वह गहनों को बेचकर सारी समस्याओं से छुटकारा पा लेती है।

रमानाथ जब उधार के पैसों से आभूषण खरीदने की बात कहता है तो जालपा उसका विरोध करती हुई कहती है – "मैं वेश्या नहीं कि तुम्हें नोच–खसोट कर अपना लूँ। मुझे तुम्हारे

साथ जीना मरना है यदि मुझे सारी उम्र बे गहनों के रहना पड़े तो भी मैं कर्ज लेने को नहीं कहूंगी।"

रमानाथ

प्रेमचन्द द्वारा लिखे गये उपन्यास 'गबन' में रमानाथ की भूमिका नायक के रूप में है। मुंशी दयानाथ की सबसे बड़ी सन्तान अर्थात तीन सुपुत्रों में सबसे बड़ा पढ़ने–लिखने में उसकी कोई आस्था नहीं किन्तु बुरे कार्यों अपितु शतरंज आदि निन्दनीय खेलों मे रुचि रखने वाला है। अपने अध्ययन अध्यापन को अर्ध मार्ग में ही त्यागकर सारा समय व्यर्थ ही गवां बैठता है और साथ ही बड़ा मानकर छोटे भाइयों पर हुकम भी चलाता है। इस सारे क्रियाकलाप को देखकर घर वाले उसकी शादी जालपा से कर देते हैं ताकि वह सही मार्ग का अनुसरण कर सके परन्तु पत्नी के आभूषण प्रेम को पूरा करने के लिए उधार चुकाने में अपने कार्यालय के रुपए गबन करके कलकत्ता भाग जाता है जहां पकड़े जाने के भय से पुलिस के कहने पर निर्दोषों के विरुद्ध झूठी गवाही देता है। जालपा और जोहरा उसे इस षडयंत्र से मुक्त करवाती हैं। इस षड़यंत्र से मुक्ति ही उसे आदर्श गृहस्थ का जीवन जीने के प्रति प्रेरित करती है। रमानाथ के चरित्र की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं :–

व्यक्तित्व :– रामनाथ एक दर्शनीय युवक है जिसकी सुन्दर आकृति सभी को आकर्षित करती है जब वह सफेद टैनिस शर्ट, पतलून और कैनवास का जूता डालता तो पूरा खानदानी प्रतीत होता था। पत्नी जालपा भी उसकी इसी आकृति पर तथा अपने भाग्य पर गर्व करती है और श्री कृष्ण जी से सदैव ऐसा ही रहे भाग्य यह निश्चय करती है। कार्यालय में मात्र चुंगी कलर्क

के पद पर आसीन या (कार्यरत) उस रामनाथ के प्रभावशाली व्यक्तित्व को चपरासी ही नहीं बड़े लोग भी सलाम करते थे।

अकर्मण्य युवक :— उपन्यास की प्रारम्भिक स्थिति में लेखक ने रमानाथ को मतिहीन तथा पथभ्रष्ट युवक के रूप में चित्रित किया है। लेखक के अनुसार रमानाथ अवगुणी और दिशाहीन व्यक्ति है उसके अवगुणों में सर्वप्रथम उसकी शिक्षा का स्थान है जो वह हाई स्कूल के बाद त्याग चुका था उसके बाद अपना समय यहां—वहां बैठ कर व्यर्थ गंवाने वाला, दोस्तों से अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति करने वाला किसी भी कार्य में रुचि न रखने वाला, दो साल निरन्तर बिना किसी कार्य के घर पर ही बैठने वाला, निन्दनीय खेल शतरंज आदि के प्रति लगन रखने वाला घर में बड़ा होने के नाते अहंकारवश छोटे भाइयों पर क्रोधित होने वाला, मित्रों के बल पर शोक पूरे करने वाला किसी की चेस्टर मांग ली, किसी का पम्प शू, किसी की घड़ी पहन ली, कभी बनारसी फैशन तो कभी लखनवी और तो ओर दस दोस्तों ने यदि एक—एक सूट सिलवाया तो रमानाथ के मानो दस दिन ठाठ—बाठ से निकल गए। मांग कर जीवन निर्वाह करना, बेकार बैठना इसी अकर्मण्यता को देखकर लेखक ने रमानाथ को एक अकर्मण्य युवक के रूप में चित्रित किया है।

संकोचहीनता :— अपनी वास्तविक स्थिति को हमेशा संकोच तले दबाकर रखने के कारण ही रमानाथ जीवन में अनेक सकंटों का सामना करता है। अपने मन की बात को सगे सम्बन्धियों से भी छुपाकर रखना यहां तक कि अपनी जीवनसाथी जालपा को भी नहीं बताना रमानाथ की सबसे बड़ी कमी है। पारिवारिक दशा को पत्नी के समक्ष बेहतरीन साबित करने वाला रमानाथ गबन जैसी निन्दनीय घटना को अंजाम देता है यह उसके मिथ्या शोक का ही परिणाम है यदि

उसने जालपा को अपने पारिवारिक माहौल से अवगत कराया होता तो न ही पत्नी उससे गहनों की मांग करती और न ही रमानाथ यह अपराध करता साथ ही जब पुलिस ने षड़यंत्र रचकर उसे झूठी गवाही देने के लिए मजबूर किया था तब जालपा के धैर्य बंधाने पर और बार–बार कहने पर भी कि वह पुलिस के द्वारा रचे गये षड़यंत्र को जज के सामने कह डाले पर वह ऐसा नहीं कर सका यह उसकी संकोच प्रवृत्ति का ही परिणाम है यह संकोचहीनता ही रमानाथ की जीवनरूपी विपत्तियों का महान कारण है।

कायरता :– आ बैल मुझे मार की तरह ही पहले उलझनों को न्योता देना बाद में उनसे मुकाबला करने के बजाय हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाना रमानाथ का स्वाभाविक लक्षण है। उसकी कायरता यहीं से सिद्ध हो जाती है पत्नी से घर की स्थिति को बढ़–चढ़कर दिखाना, उसकी खुशी के लिए गहनें उधार लेकर दुःख को आमंत्रित करना, रत्न के जेवर दाँव पर लगाना, सरकारी पैसों का गबन करना इस स्थिति से लड़ना तो दूर उल्टा कायर बनकर कलकत्ता भाग जाना वहां जाकर भी पुलिस से बचने के लिए झूठी गवाही का सहारा लेना इस सारे कायरता रूपी व्यवहार को देख जालपा उसे खूब धिक्कारती है। इस तरह पुरुषार्थ से रहित रमानाथ आजीवन कायरता का शिकार बना रहता है। उसकी कायरता का दृश्य उपन्यास के अन्त में भी देखने को मिलता है जब बाढ़ में डूबती हुई स्त्री को बचाने के लिए जोहरा जाती है तो रमानाथ उसे यह कहकर रोकने का प्रयास करता है "क्यों नाहक जान देने जाती हो? वहां शायद एक गड्डा है। मैं तो जा ही रहा था" में भी रमानाथ की कायरता सिद्ध होती है।

पत्नी से अनन्य प्रेम :– जालपा पर मोहित होना उससे अगाध प्रेम करने का कारण रमानाथ के मन में बसी उसकी अद्भुत आकृति अर्थात छवि है। जालपा की सुन्दरता ने उसे इतना बाधित कर रखा है कि वह अपनी वास्तविकता को भी पत्नी से छिपाकर उसे हर सम्भव प्रयास से खुश रख्ना चाहता है। पत्नी की खुशी के लिए वह हर अच्छे–बुरे कार्य का कोई विचार नहीं करता। रमानाथ की बुद्धि पत्नी के अनन्य प्रेम में इतनी एकाग्र हो चुकी है कि वह पत्नी को किसी भी कार्य के लिए 'ना' शब्द कहकर अघात पहुँचाना नहीं चाहता। यही कारण था कि वह पत्नी की प्रसन्नता के लिए गहने उधार लेता है। जिसकी भरपाई वह गबन करके करता है। रमानाथ जालपा बाहरी प्रसाधनों से हमेशा प्रसन्न रहे इसके लिए वह कोई कसर नहीं छोड़ताा परन्तु जालपा की मानसिक स्थिति अर्थात भाव क्या है इसके प्रति रमानाथ एक अनुभवहीन पुरुष है।

दयानाथ

कथा प्रधान रमानाथ के पिता दयानाथ आदर्श और सात्विकता की साक्षात मूर्ति है। बेईमानी, रिश्वत आदि निन्दनीय कार्य दयानाथ के स्वभाव के विरुद्ध हैं अपनी सच्चाई पर आँच न आने देने के कारण अनेक दुःखों का सामना करने वाले दयानाथ पुत्र का विवाह तब तक नहीं करना चाहते जब तक वह सही मार्ग का अनुसरण किसी काम काज पर नहीं लग जाता परन्तु माता की पुत्र के प्रति लालसा उसे शादी के लिए विवश कर देती है और वह उधार लेकर आभूषण बनवाकर बड़े चाव से विवाह की रस्म पूरी करता है। परिणाम यह हुआ कि कर्ज के बोझ तले दबा दयानाथ निरन्तर दुःखी रहता है। साधारण कर्मचारी के पद पर आसीन दयानाथ अपनी आय से कर्ज मुक्त नहीं हो सकता था। परिवार उसे अन्य लोगों की तरह

रिश्वत लेने के लिए प्रेरित करता है परन्तु वह अपनी निष्ठा पर किसी भी तरह दाग नहीं लगने देता। एक दिन रमानाथ जालपा के जेवर उस सर्राफ को लौटाकर कर्जे से मुक्ति तो पा लेते हैं किन्तु इस बात से दयानाथ के मन पर गहरा आघात लगता है। वह पश्चाताप की अग्नि में निरन्तर जलता तो है लेकिन अपने आदर्शों का सौदा कदापि नहीं करता। दयानाथ का यही संकल्प था कि चाहे मुझे नौकरी छोड़नी पड़े परन्तु अपने सात्विक व्यवहार को मैला नहीं करूंगा इन्हीं गुणों के आधार पर दयानाथ का कथा में साक्षात्कार होता है। दयानाथ की चारित्रिक विशेषताएं इस प्रकार हैं :–

ईमानदारी :– कचहरी में मात्र पचास रुपये मासिक वेतन लेने वाले रमानाथ के पिता दयानाथ अपने सिद्धांतों के प्रति पूर्ण निष्ठावान है। दयानाथ ऐसे स्थान अर्थात विभाग में कार्यरत है जहाँ वह जब चाहे जितने चाहे रुपये कमा सकता है पर उसे पाप–पुण्य का पूर्ण ज्ञान है। महान विपत्ति में पड़ने पर भी वह अपने आदर्शें पर अडिग रहता है जैसे जोहरी के बार–बार तंग करने पर भी वह रिश्वत नहीं लेता यह उसकी सात्विक वृति का स्पष्ट प्रमाण है।

सामर्थ्य से अधिक व्यय :– पुत्र के व्यवहार को देखकर दयानाथ अत्यंत दुःखी थे। उनके दुःख का कारण पुत्र की बेकारी था। पुत्र कोई काम नहीं करता था यही कारण था कि दयानाथ रमानाथ की शादी तब तक नहीं करना चाहते थे जब तक वह अपनी जिम्मेदारियों को ठीक से समझ न ले और आलस्य को त्यागकर काम–काज के प्रति जागरुक न हो परन्तु मां की ममता दयानाथ को विवश कर देती है और दयानाथ कर्ज लेकर सामर्थ्य से अधिक व्यय कर देते हैं। उसकी शादी पर, इस व्यय का मुख्य कारण पुत्र विवाह के प्रति दयानाथ की खुशी थी जिसे प्रेमचन्द ने निम्न पंक्तियों में दर्शाया है – "पहले जोड़े गहने को उन्होंने

गौण समझ रखा था। अब वही सबसे मुख्य हो गया। ऐसा चढ़ावा हो कि मड़ने वाले देखकर फड़क उठें।"

अन्तर्विरोध :– दयानाथ के चरित्र में अन्तर्विरोधी प्रवृत्ति के दो रूप हैं। पहली प्रवृत्ति उनकी सत्यनिष्ठा का स्पष्ट प्रमाण देती है जिसमें परिवार उसे रिश्वत आदि बुरे कार्यों के प्रति प्रेरित करता है परन्तु उसकी सात्विक वृत्ति उसे इस कार्य को करने के लिए प्रतिक्षण बाधित करती है। दूसरी अन्तर्विरोधी प्रवृत्ति तब स्पष्ट होती है जब रमानाथ जालपा के आभूषण वापिस करवाकर कर्ज मुक्त होता है। दयानाथ इस सारे वृतान्त को देख विरोध भी करता है परन्तु स्वयं मौन भी हो जाता है क्योंकि इस सारे घटनाक्रम का मुख्य कारण उसका आय से अधिक व्यय था जिसे वह भली–भांति जानता था।

अध्ययनशीलता :– स्थिरता दयानाथ के चरित्र का महान गुण है। बड़ी से बड़ी विपत्ति आने पर भी वह अपने चरित्र में किसी प्रकार भी बदलाव नहीं आने देता। समय के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की भावनाएं परिवार में बदल जाती हैं और परिवार दयानाथ को भी समयानुसार चलने की प्रेरणा देता है। परन्तु अपनी भावनाओं को न बदलने वाला अपने चरित्र का सौदा कदापि नहीं करता। यही कारण था कि जब वह अत्यंत दुःखी होता है तो अपने अध्ययन को माध्यम बनाकर चित्त को शांति प्रदान करता है। अपनी हर उलझन का समाधान वह पुस्तकालय जाकर अध्ययन को शांतिदूत मानकर करता है। दयानाथ एक सामान्य व्यक्ति है और चरित्र भी उसी के समान है जो किसी घटनाक्रम को देखकर भी नहीं डगमगाता है। अतः स्थिर चित वाले इस अनुभवी व्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि वह आरम्भ से अन्त तक एक ही स्थिति में जीवन व्यतीत करता है।

'गबन' उपन्यास की प्रमुख समस्याएं

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। कोई भी साहित्यकार सामाजिक परिवेश से अछूता नहीं रह सकता। समाज में क्या घटित हो रहा है, साहित्यकार उन समस्याओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से उजागर करने का प्रयत्न करता है ताकि लोगों को उनसे शिक्षा मिल सके। कोई भी रचना बिना उद्देश्य के संभव नहीं। उसमें कोई न कोई उद्देश्य या प्रेरणा निहित रहती है। प्रेमचन्द भी ऐसे ही साहित्यकार रहे हैं जिनकी रचनाएं सोउद्देश्यपूर्ण हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में तत्कालीन समाज के विभिन्न वर्गों की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं नारी मनोविज्ञान आदि समस्याओं का यथार्थपूर्ण चित्रण किया है। प्रेमचन्द जी ने उपन्यास को यथार्थ जीवन से जोड़कर, इस विद्या को एक नई दिशा प्रदान की।

'गबन' उपन्यास समस्यात्मक उपन्यास है। जिसमें लेखक ने मध्यवर्गीय समाज की प्रदर्शनप्रियता, कुंठित कामनाएं, उधार लेने की प्रवृत्ति, पुलिस की दमनकारी नीति, अनमेल विवाह आदि समस्यओं को उजागर करते हुए इन के दुष्परिणामों से सजग रहने का भी संदेश दिया है।

आभूषण प्रेम :– 'गबन' उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने स्त्रियों के आभूषण प्रेम से उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। स्त्रियों को आभूषणों से विशेष प्रेम होता है। समय के साथ उसमें वृद्धि भी होती रहती है। परन्तु जब यह प्रेम अत्याधिक हो जाता है तो उसकी कामनापूर्ति हेतु व्यक्ति विभिन्न माध्यमों को अपनाता है। वह भूल जाता है कि जाने–अनजाने में अपने लिए कई समस्याएं उत्पन्न कर रहा है। 'जालपा' को बाल्यकाल से ही आभूषणों से प्रेम था। उसका मनोवैज्ञानिक कारण है कि वह बचपन से ही जिस पारिवारिक

परिवेश में पली–बढ़ी वहां आभूषणों को विशेष महत्व दिया जाता था। जालपा को चंद्रहार की लालसा बचपन से ही थी। परन्तु विवाह पर जब उसे चंद्रहार नहीं मिलता तो वह दुखी हो जाती है और तय करती है – "जब तक चन्द्रहार नहीं बन जाएगा वह कोई भी गहना नहीं पहनेगी।" सर्राफा का उधार चुकता करने के लिए जब उसके गहने चुरा लिए जाते हैं तो वह टूट जाती है और फूट–फूट कर रोने लगती है। उसके जीवन में मानो अंधकार सा छा जाता है। पत्नी प्रेम के चलते ही रामानाथ उधार के आभूषण लाता है। आभूषणों को पाकर जालपा प्रसन्न हो जाती है। रमानाथ इन आभूषणों का कर्ज चुकाने में असमर्थ होता है और यही गबन का कारण बनता है। इस प्रकार लेखक ने आभूषण प्रेम के दुष्परिणामों से सजग रहने की प्रेरणा दी है।

मिथ्या आत्मसम्मान या प्रदर्शन :– मध्यवर्गीय परिवार की सबसे बड़ी समस्या है – मिथ्या आत्मसम्मान व प्रदर्शन। इसी झूठे प्रदर्शन के बल पर मध्यम वर्ग का व्यक्ति उच्चवर्गीय व्यक्ति से तुलना करने लगता है। वह सारी सुख–सुविधाएँ व ऐश्वर्य प्राप्त करने का प्रयास करता है जो उच्च वर्ग के पास है। वह अपना वास्तविक जीवन, अपने यथार्थ को भूला बैठता है। यही कारण है कि अपने यथार्थ जीवन से कोसों दूर रहकर , कर्ज लेने से भी नहीं हिचकता है। जब अपने को कर्ज चुकाने में असमर्थ पाता है तो चोरी, रिश्वतखोरी, गबन आदि घिनौने कार्य करने लगता है।

जालपा, रमानाथ, रमेश बाबू, दयानाथ आदि सभी इस समस्या से ग्रस्त है। जालपा का आभूषणों के प्रति प्रेम, दयानाथ का रमानाथ के विवाह पर अपने सामर्थ्य से अधिक खर्च करना, रमानाथ का मित्रों के कपड़े पहन कर स्वयं को फेशनेबल दिखाना, अपनी पत्नी को

घुमाना–फिराना तथा सिनेमा दिखाना आदि मध्यवर्ग के प्रदर्शनप्रियता के प्रतीक हैं। इस झूठे दिखावे से जब पर्दा हटता है तो कई समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं।

अनमेल विवाह :– नारी जीवन की विविध समस्याओं में 'अनमेल विवाह' भी एक विकट समस्या है। आर्थिक असमर्थता के कारण माता–पिता अपनी बेटियों का विवाह किसी प्रौढ़ व्यक्ति से कर देते हैं, जो उनके जीवन के लिए एक अभिशाप बन जाता है। 'रतन' भी गबन उपन्यास की एक ऐसी पात्र है जिसका विवाह साठ वर्षीय वकीकल इन्द्रभूषण से करा दिया जाता है। जहाँ रत्न को पैसों की कमी न थी। परन्तु उसे न तो पति से प्रेम, न ही उस सुख की प्राप्ति हो सकी, जिसकी कामना एक पत्नी अपने पति से करती है। उन दोनों में जो प्राकृतिक भेद था उसे पाट पाना दोनों के लिए असंभव था। विवाह के कुछ वर्षों बाद इन्द्रभूषण स्वर्ग सिधार जाते हैं और रत्न निराश्रित हो जाती है। उसे सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा है। मणिभूषण रत्न को स्पष्ट कह देता है – "आपका इस घर पर और चाचा जी का सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं। वह मेरी सम्पत्ति है। आप मुझ से केवल गुजारे का सवाल कर सकती हैं?" दुर्भाग्य से यह समस्या आज भी समाज में व्यापक स्तर पर है।

पुलिस की दमनकारी नीति की समस्या :– हमारे समाज में चोरी, घूसखोरी, रिश्वतखोरी, बलात्कार, गबन जैसी समस्याएं आज भी विद्यमान हैं परन्तु अपराधियों के विरुद्ध पुलिस के रवैये पर हमेशा से ही प्रश्न चिन्ह लगता आ रहा है। पुलिस असली गुनहगारों को पकड़ने के बजाय किसी बेबस, लाचार को अपने षड़यंत्र में फांस कर उस निरापराध को मुजरिम करार

दिया जाता है। अपराधी खुले आम घूमते हैं। समाज में रहने वाला प्रत्येक सभ्य एवं सच्चा व्यक्ति पुलिस से दूरी बनाए रखने में खुद को सुरक्षित महसूस करता है।

'गबन' उपन्यास में भी प्रेमचन्द जी ने पुलिस के षड़यंत्रों एवं दमनकारी नीतियों का पर्दाफाश किया है। किस प्रकार क्रान्तिकारियों को डकैती के आरोप में फंसा लेने के लिए रमानाथ को प्रलोभन दिया जाता है। रमानाथ चुंगी के पैसे लौटाने में स्वयं को असमर्थ पाकर कलकत्ता भाग जाता है। परन्तु उसे अपनी गिरफतारी का डर हमेशा सताता रहता है। अपने इसी भय के कारण वह पुलिस के चक्रव्यूह में फंस जाता है। पुलिस उसे क्रान्तिकारियों के विरुद्ध झूठी गवाही देने के बदले में गबन के आरोप से मुक्त करने तथा नौकरी दिलाने का लालच देती है। इतना ही नहीं पुलिस उसकी खातिरदारी भी करती है। जोहरा नामक वेश्य को उसका मन बहलाने के लिए भेज दिया जाता है। पुलिस द्वारा अपनाए गए हथकंडे एवं षड़यंत्र उस युग की ही नहीं बल्कि आज भी एक गम्भीर समस्या बनी हुई है।

वेश्या समस्या :– स्त्री जाति की एक बड़ी समस्या है वेश्या जीवन। अधिकतर स्त्रियाँ आर्थिक विषमताओं और अत्याचारों के कारण इस वृत्ति का सहारा लेती है। कई ऐसी स्त्रियाँ भी हैं जिन्हें जबरन इस देह व्यापार में धकेल दिया जाता है। यह समाज उन्हें कुदृष्टि से देखता है तथा वासना तृप्ति का साधन मात्र समझता है। समाज की यह मानसिकता ही उनके पतन का कारण बनती जा रही है।

'गबन' उपन्यास की पात्र जोहरा एक वेश्या है। जिसे पुलिस द्वारा रमानाथ को फसाने के लिए भेज दिया जाता है। वह अपने हाव–भाव द्वारा रमानाथ को आकर्षित करती है तथा अपने मोहजाल में फंसा लेती है। जोहरा को जब इस बात का एहसास हो जाता है कि

रमानाथ का प्रेम उसके प्रति सच्चा तथा निष्कपट है तो वह भी उससे प्रेम करने लगती है। जोहरा जालपा के सेवाभाव तथा आदर्शों से प्रभावित हो जाती है। वह निश्चय करती है कि इस पाप जीवन को त्याग कर पवित्र जीवन व्यतीत करेगी। वह रमानाथ के परिवार की सदस्य बन जाती है और अंत में बाढ़ में डूबती हुई स्त्री को बचाने के प्रयास में अपने प्राणों की आहुति दे देती है। जोहरा के हृदय परिवर्तन के माध्यम से प्रेमचंद जी ने वेश्याओं के जीवन के उज्जवल पक्ष से समाज को अवगत कराया है। ताकि उनके प्रति लोगों की मानसिकता में परिवर्तन आ सके।

रिश्वत की समस्या :— रिश्वतखोरी आज हमारे देश की एक अहम् समस्या बनी हुई है जिसने सम्पूर्ण समाज को खोखला और भ्रष्ट बना दिया है। मनुष्य के हृदय में कई इच्छाएँ व अभिलाषाएँ पनपती रहती हैं, जिनकी पूर्ति वह अपने आमदनी से नहीं कर पाता है, परिणामस्वरूप वह रिश्वत लेने लगता है। प्रेमचन्द जी का मानना था कि यदि व्यक्ति अपने खर्च पर नियंत्रण कर ले तो इस रोग से बचा जा सकता है।

'गबन' उपन्यास के पात्र दयानाथ रिश्वत लेने के पक्ष में नहीं थे। वह रिश्वत को हराम समझते थे। अपने सीमित साधनों में ही उन्होंने परिवार का पालन किया। वह रमानाथ से कहते हैं — "ईमानदारी से काम करोगे, तो किसी अच्छे पद पर पहुँच जाओगे। मेरा यही उपदेश है कि पराये पैसे को हराम सझना।" इसके विपरीत रमानाथ अधिक से अधिक रिश्वत लेने चाहता है ताकि वह अपने तथा पत्नी के शौक पूरे कर सके। पुलिस रमानाथ को नौकरी की रिश्वत देकर झूठी गवाही दिलाने के लिए तैयार करती है।

उधार की समस्या :– मनुष्य को अपने सीमित साधनों में ही प्रसन्न रहना चाहिए। मध्यवर्गीय समाज की यह विड़म्बना है कि वह अपने झूठे आत्मसम्मान व प्रदर्शनप्रियता के लिए उधार तक लेने लगता है। व्यक्ति जब एक बार कर्ज के बोझ तले दब जाता है तो वहाँ से निकल पाना कठिन हो जाता है।

'गबन' उपन्यास में लेखक ने कर्ज से उत्पन्न हुई समस्याओं को चित्रित किया है। दयानाथ रमानाथ के विवाह पर उधार के गहने बहु के लिए बनवाता है जिसका उधार चुकाने के लिए रमानाथ द्वारा जालपा के गहनों को चुरा लिया जाता है। गहनों के चोरी होने के कारण दामपत्य जीवन में खटास उत्पन्न हो जाती है।

इसके बाद भी रमानाथ नहीं सुधरता है। जब उसकी नौकरी लगती है तो वह सरार्फा से उधार के गहने बनवाता है, जिसका कर्ज न चुका पाने पर उसे अपना घर तक छोड़ना पड़ता है। वह कई मुसीबतों में फंस जाता है।

इस प्रकार लेखक यह संदेश देना चाहता है कि मनुष्य को अपने सीमित साधनों के अनुरूप ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेनी चाहिए। मनुष्य यदि एक बार इस रोग से ग्रस्त हो जाता है तो उसे कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

'गब़न' उपन्यास में नारी मनोविज्ञान

मनोविज्ञान को मानस शास्त्र या आत्मविद्या भी कहा जाता है अर्थात वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियां या मन में उठने वाले विचारों आदि का विवेचन होता है। या हम यह कह सकते हैं कि वह आत्म–चिन्तन जो मन के विभिन्न क्रिया–कलापों का, उन क्रिया कलापों से पड़ने वाले असर आदि का मंथन करता है या विवेचन करता है। 'गब़न' उपन्यास में मुंशी

प्रेमचन्द जी ने नारी को इस रूप में चित्रित किया है कि उनके हाव–भाव–क्रिया–कलापों आदि को देखकर यह सिद्ध हो जाता है कि 'गबन' उपन्यास की नारी मनोवैज्ञानिकता की प्रतिमूर्ति है। मुंशी प्रेमचन्द ने नारी मानस शास्त्र या उनकी मानसिक दशा का इस रूप में वर्णन किया है कि नारी उपन्यास को एक जीवित रूप प्रदान करती प्रतीत होती है। उपन्यास में प्रत्येक पात्र की अपनी–अपनी भूमिकाएं, अपने–अपने विचार हैं, अपने–अपने क्रिया–कलाप हैं। जालपा, जोहरा, रत्न आदि का अपना–अपना किरदार है। इन सभी को आधार बनाकर ही प्रेमचन्द जी ने नारी की मनोवैज्ञानिकता का निरूपण किया है। लेखक की बुद्धि और कला–कौशल इतना प्रबल है कि उपन्यास पढ़ने वाला प्रत्येक व्यक्ति इसमें चित्रित हर एक घटनाक्रम को अपने जीवन के साथ जोड़कर अनुभव करता है। 'गब़न' उपन्यास के लेखक ने मानो व्यक्ति को जाँच–परख कर उसके मनोभावों को गबन करके ही चित्रित किया है।

जालपा – आभूषणों के प्रति प्रेम जालपा की मनोवैज्ञानिकता का ही प्रतीक है। बचपन से ही जालपा को गहने मिलते रहने से कारण उसकी मानसिक प्रवृत्ति उनके प्रति ललायित थी। विवाह के बाद भी जालपा की यही लालसा पति को भी मार्गभ्रष्ट करती है। पत्नी से अनन्य प्रेम और उसकी गहनों के प्रति उत्सुकता रमानाथ को पैसे गब़न करने तक को मजबूर कर देती है। रुपये गब़न करके वह कलकत्ता भग जाता है वहीं पर पुलिस के कहने पर झूठी गवाही देने को तैयार हो जाता है। यह सारा वृतान्त मनोवैज्ञानिकता का ही प्रतीक है क्योंकि एक तरफ जालपा की लालसा (आभूषणप्रियता) और दूसरी तरफ पत्नी को हर सुख प्रदान करने वाले पति का दम्भी कार्य दोनों की मनोवैज्ञानिकता को दर्शाता है।

रत्न – रत्न एक पतिव्रता स्त्री है उसके पतिव्रता होने का प्रमाण हमें इस संवाद में मिलता है जब वह जालपा को यह बताती हुई कहती है कि मेरी हर क्रिया मेरे पति के लिए ही है मैंने कभी एक पल के लिए भी नहीं सोचा कि मैं जवान हूँ और पति वृद्ध है। मैं पत्नी हूँ और वह मेरे आदर्श हैं। मन में जितना प्रेम, अनुराग है सब उनके लिए ही है। रत्न का पति के प्रति अन्न्य प्रेम, विश्वास उसकी मानसिक स्थिति का परिचायक है। रत्न के जीवन में यह घटनाक्रम भी उसकी मानसिक प्रवृत्ति का उदाहरण है – "जब पति की अनुपस्थिति में वह हार लेना चाहती है परन्तु रुपए कम होने की वजह से वह हार खरीद नहीं पाती।" घर की लालसा में रत्न इतनी मुग्ध हो चुकी है कि उसकी मानसिक पीड़ा सामने झलकती है। पति की मृत्यु के बाद रत्न में विराग की भावना आभूषण प्रियता का त्याग और दान यह भी उसकी मनोवैज्ञानिकता को ही सिद्ध करता है।

जोहरा – जोहरा एक वैश्या है, तरह–तरह के लोगों से मिलना उसका पेशा है। आत्म विद्या वह साधन है जो व्यक्ति को किसी भी कार्य में संलग्न कर सकता है। यदि यह मानसिक क्रिया शुद्ध हो तो व्यक्ति अचछे मार्ग पर चलता है और अगर अशुद्ध हो तो व्यक्ति बुरे मार्ग का अनुसरण करता है। जोहरा भी इसी अशुद्ध मार्ग को लक्ष्य करके पुलिस के कहने पर रमानाथ को अपने प्रेम जाल में फँसाने आयी थी, परन्तु रमानाथ की सरलता को देख जोहरा की बुरी नीयत अच्छी प्रवृत्ति का रूप धारण कर लेती है, और वह रमानाथ से सच्चा प्रेम करने लगती है। जोहरा की मनोवैज्ञानिकता सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होती है। बुरे से अच्छा बनना उसके जीवन का सबसे बड़ा प्रमाण है। जोहरा का रमानाथ से प्रेम करना, जालपा से भी वैर–भाव न रखना, रमानाथ की सहायता करना, जालपा के आदर्शों से प्रभावित होना, उसके आदर्शों को

देख अपने गन्दे जीवन को कोसना, अपने आप पर सवाल करना, जालपा की सहायक बनना, उसके आदर्शों को अपनाकर अपना जीवन सेवा और त्याग में परिवर्तित करना, कलकत्ता छोड़कर देवीदीन के आश्रम में निवास करना, पूर्व कृत कर्मों का प्रायश्चित करना यह सारे विचार और क्रियाएं जोहरा की मनोवैज्ञानिकता को उजागर करती हैं।

अतः स्पष्ट है कि लेखक ने नारी मनोविज्ञान को सहज और सरल भाव से चित्रित किया है। प्रेमचन्द जी के इस वर्णन से यह सिद्ध हो जाता है कि नारी मनोविज्ञान में उस समय की सम्पूर्ण घटनाएं वर्तमान समय में भी विद्यमान हैं और समाज उनका पूर्ण रूप से साक्षात्कार भी कर रहा है।

इकाई – तीन

'पंचपरमेश्वर' कहानी की तात्विक समीक्षा

'पंचपरमेश्वर' कहानी प्रेमचन्द जी द्वारा रचित एक आदर्शवादी कहानी है। कहानी का शीर्षक मूल कथ्य के अनुरूप है। जीवन को प्रत्यक्ष रूप में चित्रित करने वाली इस कहानी में पात्रों की अन्तः स्थिति का बहुत ही मार्मिक एवं सुन्दर चित्रण हुआ है। जहाँ एक ओर लेखक ने अलगू चौधरी और जुम्मन शेख की मित्रता के माध्यम से समाज को प्रेम–भाव का सुदृढ़ संदेश दिया है, वही दूसरी ओर उनके अंतर्द्वंद को उजागर कर कर्तव्य और सत्य की विजय पताका को भी लहराया है। कहानी के तत्वों के आधार पर 'पंचपरमेश्वर' कहानी की समीक्षा इस प्रकार है :–

कथावस्तु :– कहानी का निर्माण कथावस्तु के आधार पर होता है। समाज, धर्म, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, पुराण, जीवनदर्शन, जीवन की किसी भी आवश्यक घटना को कहानी का विषय बनाया जा सकता है। कहानी में मौलिकता, रोचकता, क्रमबद्धता, विश्वसनीयता, प्रभावात्मकता आदि गुण होने चाहिए।

मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित 'पंचपरमेश्वर' एक आदर्शवादी कहानी है। इस कहानी में कहानीकार ने अलगू चौधरी और जुम्मन शेख की मित्रता, अंतर्द्वंद के साथ ही जुम्मन के खालाजान के प्रति कर्तव्य की सफल अभिव्यक्ति की है। जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में घनिष्ठ मित्रता थी। इसका कारण उनका विचारों का मिलना था। दोनों एक दूसरे के प्रति गहरा विश्वास रखते थे। जब कभी भी उन्हें घर से बाहर जाना पड़ता तो वह एक दूसरे के भरोसे अपना घर छोड़कर जाते। जुम्मन शेख की एक बूढ़ी मौसी थी, वह जुम्मन के साथ ही

रहती थी। जुम्मन ने मौसी से जीवन भर उसकी सेवा का वायदा किया था परन्तु जमीन–जायदाद अपने नाम करवाने के बाद से ही मौसी की सेवा, सत्कार बंद हो गया। इस बात से मौसी और जुम्मन की पत्नी में आय दिन झगड़े होने लगे। मौसी के प्रति जुम्मन के व्यवहार में भी बदलाव आ गया था। पति–पत्नी के इस कठोर व्यवहार से मौसी बहुत दःखी हो गई थी। उसने पंचायत बुलाने का निर्णय किया। अलगू चौधरी को सभी की सम्मति से सरपंच नियुक्त किया जाता है। पंचायत ने मौसी की करुण कथा सुनने के बाद फैसला मौसी के पक्ष में सुना दिया। इस फैसले के बाद से ही जुम्मन अलगू को अपने शत्रु मानने लगा और उससे बदला लेने की ठान लेता है। शीघ्र ही उसे यह अवसर अलगू और समझू साहू के बीच चल रहे झगड़े में प्राप्त हो गया। जुम्मन को सरपंच चुना गया। सरपंच के पद की मर्यादा रखते हुए जुम्मन ने न्यायसंगत फैसला सुनाया। सब हैरान थे। फैसला अलगू चौधरी के पक्ष में आता है। पंचपरमेश्वर की जयघोष होने लगती है।

कहानी की कथावस्तु में मौलिकता, रोचकता, विश्वसनीयता आदि गुण स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हैं। अतः कथावस्तु की दृष्टि से 'पंचपरमेश्वर' एक सफल कहानी है।

पात्रयोजना :– कहानी के तत्वों में पात्रों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। कहानी की घटनाओं और परिस्थितियों का परिचालन करने वाले को पात्र कहते हैं। लेखक पात्रों के माध्यम से ही मानवता का बहुपक्षीय रूप प्रस्तुत करता है। कहानी को नाटकीयता प्रदान करने में भी पात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

'पंचपरमेश्वर' कहानी में अलगू चौधरी तथा जुम्मन शेख को मुख्य पात्रों के रूप में चित्रित किया गया है। बूढ़ी मौसी, समझू साहू आदि गौण पात्र हैं। लेखक ने बड़ी स्वभाविकता

के साथ इन पात्रों का चरित्र–चित्रण किया है। अलगू तथा जुम्मन परम मित्र थे। उनमें प्रेम, सेवा, त्याग और कर्तव्य जैसे गुण विद्यमान थे। अलगू के मन में मित्र के लिए प्रेम तथा जनता के प्रति सेवा भावना भी है। वहीं जुम्मन मित्र प्रेम और कर्तव्य के अंतर्द्वंद में चित्रित गतिशील पात्र है। कहानी के अंत में लेखक ने जुम्मन शेख का हृदय परिवर्तन कराकर उसे एक सच्चे मित्र के रूप में चित्रित किया है। बूढ़ी मौसी, समझू साहू के चरित्र को लेखक ने बड़े कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है।

संवाद योजना :– संवाद योजना भी कहानी का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। पात्रों के वार्तालाप को संवाद या कथोपकथन कहा जाता है। संवादों से कथावस्तु को गति प्रदान होती है तथा पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्‌घाटन होता है। कहानी के संवाद सरल, सहज, सजीव एवं स्वाभाविक होने चाहिए। 'पंचपरमेश्वर' कहानी के संवाद सरल, सहज, सटीक, स्वाभाविक तथा पात्रानुकूल है। उदाहरण –

अलगू – मुझे बुलाकर क्या करोगी? कई गाँव के आदमी तो आवेंगे ही।

खाला – अपनी विपद तो सबके सामने रो आई। अब आने न आने का अखितयार उनको है।

अलगू – यों आने को आ जाऊँगा, मगर पंचायत में मुँह न खोलूँगा।

खाला – क्यों बेटा?

अलगू – अब इसका क्या जवाब दूँ? अपनी खुशी। ... जुम्मन मेरा पुराना मित्र है ...

खाला – बेटा, क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?

कहानी के संवाद दीर्घ एवं संक्षिप्त दोनों प्रकार के हैं। संवाद योजना से कहानी सफल बन पड़ी है।

देशकाल और वातावरण :– कहानी में सजीवता और स्वाभाविकता लाने वाले तत्वों में वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान है। कहानी को विश्वसनीय बनाने के लिए वहाँ का वातावरण निर्माण किया जाता है। इस दृष्टि से प्रेमचन्द द्वारा रचित 'पंचपरमेश्वर' एक विशिष्ट कहानी है। इस कहानी में लेखक ने संध्या काल होने वाली ग्राम पंचायत का सुंदर चित्रण किया है। संध्या समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठती है। जुम्मन ने पहले सी तैयारी कर रखी थी। फर्श बिछा हुआ था, पान–इलायची, हुक्के–तम्बाकू का भी प्रबंध था। सूर्यग्रस्त होते ही चिड़ियों की चहचाहट में पंचायत शुरू हुई। सारी फर्श लोगों से भर गई थी। अधिकांश लोग दर्शक ही थे। भीड़ के एक कोने में आग जल रही थी। सुलगते हुए उपलों तथा चिलम के धुएँ से वातावरण धुंधला गया था। चारों ओर कोलाहल मचा हुआ था। लड़के इधर–उधर दौड़ रहे थे।

कहानी के अंत में भी पुनः यह दृश्य उत्पन्न होता है। एक बार फिर पंचायत बैठती है। पंचायत की तैयारियाँ होने लगीं। दोनों पक्षों ने अपने दल बनाने शुरू किए। वही संध्या का समय था। उसी वृक्ष के नीचे पंचायत बैठी। खेतों में कौए बातचीत कर रहे थे। विषय था कि "मटर की फलियों पर उनका स्वत्व है या नहीं, ...। पेड़ों की डालियों पर शुकमंडली बैठी हुई थी।"

इस प्रकार लेखक ने देशकाल और वातावरण का सुंदर और यथार्थ चित्रण किया है।

भाषा–शैली :– अभिव्यक्ति की कुशलता पर ही कहानीकार की सफलता निर्भर करती है। कहानी सभी वर्ग के लोग पढ़ते हैं, अतः कहानी की भाषा सरल, स्पष्ट, प्रवाहपूर्ण चुस्त और

सशक्त होनी चाहिए। लेखक ने 'पंचपरमेश्वर' कहानी में सरल, सहज तथा व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया है, जो पात्रानुकूल है। उनकी भाषा में तत्सम, तद्भव, उर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। कहीं–कहीं आमबोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग ने भाषा को और भी स्वाभाविक बना दिया है। भाषा में चित्रात्मकता का गुण विद्यमान है। 'पंच परमेश्वर' कहानी में वर्णनात्मक, संवादात्मक तथा मनोविश्लेषणात्मक शैली का भी प्रयोग हुआ है। अतः भाषा शैली की दृष्टि से यह एक सफल कहानी है।

उद्देश्य :– बिना उद्देश्य के कोई भी रचना संभव नहीं है। 'पंचपरमेश्वर' कहानी एक सोद्देश्यपूर्ण रचना है। लेखक ने समाज में इस आदर्श को प्रस्तुत करना चाहा है कि पंच में परमात्मा का वास होता है। उसके मुख से निकलने वाला प्रत्येक शब्द परमात्मा का शब्द होता है। पंच न तो किसी का मित्र न शत्रु होता है। वह केवल न्याय का हितैषी होता है। उसे अपने कर्तव्य पालन की चिन्ता रहती है।

अतः स्पष्ट है कि कहानी हमें स्वार्थ भाव को त्यागकर निष्पक्ष तथा न्याय संगत निर्णय लेने की प्रेरणा देती है।

अलगू चौधरी का चरित्र चित्रण

कहानी में मुख्य पात्र की भूमिका निभाने वाले अलगू चौधरी के चरित्र को लेखक ने 'पंच परमेश्वर' कहानी में जुम्मन शेख के बाद वर्णित किया है। 'पंच परमेश्वर' कहानी के स्थिर पात्र अलगू चौधरी के चरित्र को लेखक ने बड़ी कुशलता पूर्वक वर्णित किया है। कथानक पर दृष्टिपात करते हुए अलगू के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :–

सच्चा मित्र :– सच्ची मित्रता का प्रमाण स्वरूप अलगू चौधरी के मन में धर्म का कोई भेद नहीं। जुम्मन उसके मैत्री भाव का आदर मन से करता है परन्तु यह मैत्री भाव जुम्मन से अधिक अलगू के मन में दिखता है। मैत्री भाव का स्पष्ट प्रमाण और उनके घनिष्ठ सम्बन्ध का पता हमें तब चलता है जब जुम्मन शेख की बूढ़ी खाला उसे पंचायत में बुलाती है तब अलगू उसे यह उत्तर देता हुआ कहता है कि :–

अलगू – मुझे बुलाकर क्या करोगी? कई गाँव के आदमी तो आवेंगे ही।

खाला – अपनी विपद तो सबके सामने रो आई। ...

अलगू – यों आने को आ जाऊँगा, मगर पंचायत में मुँह न खोलूँगा।

खाला – क्यों बेटा?

अलगू – अब इसका क्या जवाब दूँ? अपनी खुशी। ... जुम्मन मेरा पुराना मित्र है। उससे बिगाड़ नहीं कर सकता।

उक्त वाक्य उनकी मित्रता का साक्षात् प्रमाण है।

अधिकारों के प्रति सचेत :– अलगू चौधरी अपने अधिकारों को किसी प्रकार की भी हानि बर्दाशत न करने वाला, अपने कर्तव्य के प्रति जागरुक और पूर्णतया सचेत पात्र है। बैलों का सौदा उसकी कर्तव्य परायणता का स्पष्ट प्रमाण है। जब समझू साहू बैल खरीद कर उसे पैसे नहीं देता तो अलगू इस निर्णय के लिए पंचायत बिठाता है अपने अधिकार को पाने तथा समझू साहू के दुर्व्यवहार का वह पूरी पंचायत के सामने भाण्डा फोड़ता है।

गुरूभक्त :– अलगू के विचार गुरू भक्ति में दृढ़ हैं वह गुरू को कल्याण मार्ग में सर्वश्रेष्ठ साधन मानता है और तन–मन–धन से उनके आदेशों और उपदेशों का पालन करता है। गुरू

के प्रति आस्था अलगू के ह्रदय में पारिवारिक संस्कार से अर्थात पिता की प्रेरणा से जागृत हुई। गुरू का हर दृष्टि से सम्मान हो इसके लिए अलगू का गुरू के जूते साफ करना, बर्तन धोना और एक पल के लिए भी हुक्का बन्द न होने देना सब कार्य आदर–सम्मान के परिचायक हैं यहां तक कि अध्ययन करते समय भी वह गुरू का पूर्ण ध्यान रखता था।

सत्यप्रिय :– अलगू सात्विक वृत्ति वाला व्यक्ति है उसकी सात्विक वृत्ति और घनिष्ठ मैत्री सम्बन्ध समाज के लिए उदाहरण हैं। परन्तु जितना अधिक वह अपनी मित्रता पर गर्व करता था उससे भी कहीं और अधिक उसे सत्य पर अटल रहना पसन्द था। सत्य का पक्ष लेना और उसमें जीवन व्यतीत करना उसके लिए सर्वश्रेष्ठ था तथा व्यर्थ के कार्यों का बोझ अपने मन न बनने देना ही उसकी शुद्धता काा प्रतीक है।

स्पष्टवादी :– अलगू एक स्पष्ट विचारों वाला व्यक्ति है उसे जो बात सटीक लगती है उससे परहेज न कर वह खुले मन से बोलता है क्योंकि अलगू जब जुम्मन से पंचायत में प्रश्न करता है तो अलगू का एकाएक सवाल उसकी छाती पर हथौड़े की तरह प्रहार करता है परन्तु सत्य पर अटल रहने वाला अलगू मित्रता को छोड़ न्याय को अधिक मान्यता देता है। यही उसकी स्पष्टवादिता का प्रमाण है।

निष्कर्ष :– अतः हम यह कह सकते हैं कि अलगू में हर वो गुण विद्यमान है जो एक सात्विक पुरुष में होना चाहिए। अपने गुणों के आधार पर ही अलगू और जुम्मन समाज के लिए स्पष्ट प्रमाण अर्थात् उदाहरण है।

जुम्मन शेख

'पंचपरमेश्वर' कहानी में अलगू चौधरी की तरह ही जुम्मन शेख एक प्रमुख पुरुष पात्र है। कहानी में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। लेखक ने उसे गतिशील पात्र के रूप में चित्रित किया है। उसके चरित्र की विशेषताएं इस प्रकार से हैं :–

अलगू से मित्रता :– जुम्मन शेख की अलगू से घनिष्ठ मित्रता थी। वह उस पर स्वयं से अधिक विश्वास रखता था। दोनों मित्र एक दूसरे के प्रति अपने कर्तव्य को बड़ी निष्ठा से निभाते थे। जुम्मन जब हज करने गए थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गये थे और अलगू जब कभी घर से बाहर जाता तो अपना घर जुम्मन को सौंप देता। उनमें वैचारिक समानता थी।

मौसी की उपेक्षा तथा दुर्व्यवहार :– जुम्मन शेख की एक बूढ़ी मौसी थी। उसके पास अपनी जमीन थी। जब तक जमीन मौसी के पास थी, तब तक तो जुम्मन तथा उसकी पत्नी ने मौसी का खूब आदर किया। परन्तु जब मौसी ने अपनी जमीन जुम्मन के नाम की, तब से उसके व्यवहार में परिवर्तन आया। अब न तो पहले जैसी ही मौसी की सेवा तथा आदर होता न ही स्वादिष्ट भोजन खाने को मिलता था। पति–पत्नी दोनों का व्यवहार मौसी के प्रति निष्ठुर हो गया। मौसी की बात–बात पर उपेक्षा होती थी, उसे प्रताड़ित भी किया जाने लगा। जब बात हद तक पहुँच गयी, तब खाला ने जुम्मन से अपने निर्वाह के लिए रुपयों की माँग की। इस पर जुम्मन बड़ी धृष्टता से उत्तर देता है – "रुपये क्या यहाँ फलते हैं?"

बदले की भावना :– जब पंचायत में अलगू चौधरी द्वारा जुम्मन शेख से प्रश्न पूछे जाते हैं तो वह स्वयं को अपमानित महसूस करता है। उसे विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि उसका

मित्र जो सरपंच की भूमिका में था, उससे इस प्रकार प्रश्न पूछ कर अपमानित करेगा – "जुम्मन चक्ति थे कि अलगू को क्या हो गया। अभी यह अलगू मेरे साथ बैठा हुआ कैसी–कैसी बातें कर रहा था। इतनी ही देर में ऐसी कायापलट हो गई कि मेरी जड़ खोदने पर तुला हुआ है। न मालूम कब की कसर निकाल रहा है।" वह अलगू से बदला लेने की ठान लेता है और उसी घड़ी का बेसबरी से इंतजार करता है।

हृदय परिवर्तन :– जुम्मन शेख अलगू से वैर ठाने हुए था। संयोग से ही शीघ्र उसे भी अलगू चौधरी तथा समझू साहू के झगड़े में सरपंच की भूमिका निभाने का अवसर प्राप्त होता है। परन्तु सरपंच का उच्च स्थान ग्रहण करते ही उसे अपनी जिम्मेदारी का एहसास होता है। उसमें सत्यता का भाव जागृत होता है। वह सोचता है – "मैं इस वक्त न्याय और धर्म के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से इस समय जो कुछ निकलेगा, वह देववाणी के सदृश है और देववाणी में मेरे मनोविकारों का कदापि समावेश न होना चाहिए। मुझे सत्य से जौ–भर भी टलना उचित नहीं है।" उसका वैर समाप्त हो जाता है और वह न्यायसंगत फैसला सुनाता है।

पश्चाताप (पश्‍चाताप) :– अलगू चौधरी के फैसले सुनाने के बाद से ही जुम्मन के मन में अलगू से बदला लेने की भावना जागृत होती है। परन्तु सरपंच का पद ग्रहण करते ही उसे एहसास हो जाता है। पंचायत समाप्त होने के बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उन्हें गले लगाकर बोले – "भैया जब से तुम ने मेरी पंचायत की, तब से मैं तुम्हारा प्राण–घातक शत्रु बन गया था, पर आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठ कर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे कुछ नहीं सूझता। मुझे विश्वास हो गया कि पंच की

ज़बान से खुदा बोलता है।" जुम्मन पश्चाताप की अग्नि में जल उठता है। उसकी बातें सुनकर अलगू की आँखें भर आती हैं, वह रोने लगता है।

इस दृष्टांत के बाद दोनों का मैत्रीभाव पुनः जागृत हो उठता है।

कोर्स कोड UHILTE-503

कथाकार प्रेमचंद

बी.ए. सत्र – पाँच

प्रो. विक्की रतन
राजकीय महाविद्यालय, बसोली

इकाई – दो

गबन के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण

जालपा

जालपा 'गबन' उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र एवं नायिका है। वह उपन्यास का केन्द्र बिन्दु है क्योंकि सम्पूर्ण कथा जालपा के इर्द–गिर्द घूमती है। वह मुंशी दीनदयाल की इकलौती पुत्री तथा रमानाथ की पत्नी है। अपने माता–पिता की इकलौती संतान होने के कारण उसका जीवन बड़े लाड–प्यार में बीता। पिता दीनदयाल उसकी हर इच्छा की पूर्ति करते थे। वह जहाँ कही भी जाते उसके लिए कोई न कोई वस्तु अवश्य लाते विशेषकर आभूषण। इसी कारण जालपा का आभूषणों के प्रति प्रेम एवं आकर्षण स्वाभाविक था। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :–

आभूषणों के प्रति तीव्र लालसा :– जालपा को बचपन से ही आभूषणों के प्रति विशेष प्रेम था। क्योंकि वह आरम्भ से ही जिस पारिवारिक वातावरण में पली बड़ी वहाँ आभूषणों को बड़ा महत्व दिया जाता था। पिता अक्सर उसे आभूषण दिया करते थे। माँ उसे बिसाती से बिल्लौरी चंद्रहार दिलवा देती है जो उसे सभी आभूषणों से अधिक प्रिय था। आभूषण ही उसके खिलौने तथा बाल संपत्ति थी। गाँव में कोई त्यौहार या उत्सव आता तो वह उसे पहन कर जाती। चंद्रहार के अतिरिक्त उसे कोई दूसरा आभूषण अच्छा ही नहीं लगता।

जब वह बड़ी हुई तो उसके मन में असली चंद्रहार लेने की तीव्र इच्छा हुई। उसे आश्वासन दिया गया कि विवाह के समय ससुराल से उसके लिए चंद्रहार आएगा। परन्तु ऐसा

न हुआ विवाह के समय आभूषणों में जब उसे चंद्रहार कही नज़र नहीं आता तो वह फूट–फूट कर रोने लगती है। "जब मालूम हो गया कि चंद्रहार नहीं है तो उसके कलेजे पर चोट सी लग गई। मालूम हुआ देह में रक्त की एक बूंद भी नहीं है। मानो उसे मूर्छा आ जाती है। वह उन्माद की सी दशा में अपने कमरे में आई और फूट–फूटकर रोने लगी।"

जालपा के आभूषण प्रियता एवं हठ के कारण ही रमानाथ उधार के आभूषण लाता हे। यह उधार 'गबन' का कारण बन जाता है।

विवेकशील नारी :– जालपा एक बुद्धिवान नारी है। वह विषम परिस्थितियों का बड़े साहस के साथ सामना करती है। जब रमानाथ घर छोड़कर चला जाता है तो वह धेर्य का परिचय देती है तथा सारी स्थिति को समझ लेने के पश्चात रमानाथ को ढूंढने निकलती है। वह अपने आभूषणों को बेचकर म्यूनिस्पैलिटी दफतर में पैसे जमा करवाती है और पति को बचा लेती है। रमानाथ का पता लगाने हेतु वह शतरंज की पहेली को प्रकाशित करवाती है और उसे ढूंढ लेती है। अपनी बुद्धि कौशल से ही वह रमानाथ को गवाही न देने के लिए राज़ी करती है जिससे उसकी बुद्धिमता का पता चलता है।

आदर्श पत्नी :– जालपा आदर्श पत्नी थी। उसका आभूषणों के प्रति आग्रह इसलिए हुआ कि रमानाथ उससे अपने आर्थिक रूप से सम्पन्न होने की बड़ी–बड़ी बातें करता रहता था। वो वास्तविक परिस्थितियों से अनजान थी। वह ऐसा कभी नहीं चाहती थी कि उसका पति कर्ज लेकर उसके लिए आभूषण खरीदे। परन्तु जब उसे वास्तविक स्थिति का बोध होता है तो वह दुखी हो जाती है। अपने को दोषी मानती है और पश्चाताप की अग्नि में जल उठती है।

जालपा अपने आभूषणों को बेचकर सारे ऋण का भुगतान करती है। ऐसा करके उसे सच्चे सुख की अनुभूति होती है।

जालपा का रमानाथ को यह कहना कि सारा दोष मेरा है उसके आदर्श पत्नी स्वरूप को दर्शाता है।

"इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं, सरासर मेरा दोष है। अगर मैं भली होती तो आज यह दिन क्यों आता, जो पुरुष तीस चालीस रुपये महीने का नौकर हो, उसकी स्त्री अगर दो–चार रुपये खर्च करे, हजार दो हजार के गहने पहनने की नीयत रखे तो वह अपनी और उसकी तबाही का सामान तैयार कर रही है। अतः तुमने मुझे धन लौलुप समझा तो कोई अन्याय नहीं किया। मगर एक बार जिस आग में जल चुकी उसमें फिर न कुदूंगी।"

आत्म–सम्मान की भावना :– जालपा आत्म–सम्मान से परिपूर्ण नारी है। उसमें स्वाभिमान कूट–कूट कर भरा हुआ है। माँ द्वारा भेजे हुए चंद्रहार को स्वीकार नहीं करती है। वह उसे अपना–अपमान समझती है – "दान भिखारियों को दिया जाता है। मैं किसी का दान न लुंगी, चाहे वह माता ही क्यों न हो।"

रामनाथ द्वारा झूठी गवाही देने पर वह उसे फटकारती है। जालपा विषम परिस्थितियों में भी माता–पिता, सास–ससुर, रतन किसी से सहायता नहीं लेती है। वह गहनों को बेचकर सारी समस्याओं से छुटकारा पा लेती है।

रमानाथ जब उधार के पैसों से आभूषण खरीदने की बात कहता है तो जालपा उसका विरोध करती हुई कहती है – "मैं वेश्या नहीं कि तुम्हें नोच–खसोट कर अपना लूँ। मुझे तुम्हारे

साथ जीना मरना है यदि मुझे सारी उम्र बे गहनों के रहना पड़े तो भी मैं कर्ज लेने को नहीं कहूंगी।"

रमानाथ

प्रेमचन्द द्वारा लिखे गये उपन्यास 'गबन' में रमानाथ की भूमिका नायक के रूप में है। मुंशी दयानाथ की सबसे बड़ी सन्तान अर्थात तीन सुपुत्रों में सबसे बड़ा पढ़ने–लिखने में उसकी कोई आस्था नहीं किन्तु बुरे कार्यों अपितु शतरंज आदि निन्दनीय खेलों मे रुचि रखने वाला है। अपने अध्ययन अध्यापन को अर्ध मार्ग में ही त्यागकर सारा समय व्यर्थ ही गवां बैठता है और साथ ही बड़ा मानकर छोटे भाइयों पर हुकम भी चलाता है। इस सारे क्रियाकलाप को देखकर घर वाले उसकी शादी जालपा से कर देते हैं ताकि वह सही मार्ग का अनुसरण कर सके परन्तु पत्नी के आभूषण प्रेम को पूरा करने के लिए उधार चुकाने में अपने कार्यालय के रुपए गबन करके कलकत्ता भाग जाता है जहां पकड़े जाने के भय से पुलिस के कहने पर निर्दोषों के विरुद्ध झूठी गवाही देता है। जालपा और जोहरा उसे इस षडयंत्र से मुक्त करवाती हैं। इस षड़यंत्र से मुक्ति ही उसे आदर्श गृहस्थ का जीवन जीने के प्रति प्रेरित करती है। रमानाथ के चरित्र की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं :–

व्यक्तित्व :– रामनाथ एक दर्शनीय युवक है जिसकी सुन्दर आकृति सभी को आकर्षित करती है जब वह सफेद टैनिस शर्ट, पतलून और कैनवास का जूता डालता तो पूरा खानदानी प्रतीत होता था। पत्नी जालपा भी उसकी इसी आकृति पर तथा अपने भाग्य पर गर्व करती है और श्री कृष्ण जी से सदैव ऐसा ही रहे भाग्य यह निश्चय करती है। कार्यालय में मात्र चुंगी कलर्क

के पद पर आसीन या (कार्यरत) उस रामनाथ के प्रभावशाली व्यक्तित्व को चपरासी ही नहीं बड़े लोग भी सलाम करते थे।

अकर्मण्य युवक :– उपन्यास की प्रारम्भिक स्थिति में लेखक ने रमानाथ को मतिहीन तथा पथभ्रष्ट युवक के रूप में चित्रित किया है। लेखक के अनुसार रमानाथ अवगुणी और दिशाहीन व्यक्ति है उसके अवगुणों में सर्वप्रथम उसकी शिक्षा का स्थान है जो वह हाई स्कूल के बाद त्याग चुका था उसके बाद अपना समय यहां–वहां बैठ कर व्यर्थ गंवाने वाला, दोस्तों से अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति करने वाला किसी भी कार्य में रुचि न रखने वाला, दो साल निरन्तर बिना किसी कार्य के घर पर ही बैठने वाला, निन्दनीय खेल शतरंज आदि के प्रति लगन रखने वाला घर में बड़ा होने के नाते अहंकारवश छोटे भाइयों पर क्रोधित होने वाला, मित्रों के बल पर शोक पूरे करने वाला किसी की चेस्टर मांग ली, किसी का पम्प शू, किसी की घड़ी पहन ली, कभी बनारसी फैशन तो कभी लखनवी और तो ओर दस दोस्तों ने यदि एक–एक सूट सिलवाया तो रमानाथ के मानो दस दिन ठाठ–बाठ से निकल गए। मांग कर जीवन निर्वाह करना, बेकार बैठना इसी अकर्मण्यता को देखकर लेखक ने रमानाथ को एक अकर्मण्य युवक के रूप में चित्रित किया है।

संकोचहीनता :– अपनी वास्तविक स्थिति को हमेशा संकोच तले दबाकर रखने के कारण ही रमानाथ जीवन में अनेक सकंटों का सामना करता है। अपने मन की बात को सगे सम्बन्धियों से भी छुपाकर रखना यहां तक कि अपनी जीवनसाथी जालपा को भी नहीं बताना रमानाथ की सबसे बड़ी कमी है। पारिवारिक दशा को पत्नी के समक्ष बेहतरीन साबित करने वाला रमानाथ गबन जैसी निन्दनीय घटना को अंजाम देता है यह उसके मिथ्या शोक का ही परिणाम है यदि

उसने जालपा को अपने पारिवारिक माहौल से अवगत कराया होता तो न ही पत्नी उससे गहनों की मांग करती और न ही रमानाथ यह अपराध करता साथ ही जब पुलिस ने षड़यंत्र रचकर उसे झूठी गवाही देने के लिए मजबूर किया था तब जालपा के धैर्य बंधाने पर और बार–बार कहने पर भी कि वह पुलिस के द्वारा रचे गये षड़यंत्र को जज के सामने कह डाले पर वह ऐसा नहीं कर सका यह उसकी संकोच प्रवृत्ति का ही परिणाम है यह संकोचहीनता ही रमानाथ की जीवनरूपी विपत्तियों का महान कारण है।

कायरता :– आ बैल मुझे मार की तरह ही पहले उलझनों को न्योता देना बाद में उनसे मुकाबला करने के बजाय हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाना रमानाथ का स्वाभाविक लक्षण है। उसकी कायरता यहीं से सिद्ध हो जाती है पत्नी से घर की स्थिति को बढ़–चढ़कर दिखाना, उसकी खुशी के लिए गहनें उधार लेकर दुःख को आमंत्रित करना, रत्न के जेवर दाँव पर लगाना, सरकारी पैसों का गबन करना इस स्थिति से लड़ना तो दूर उल्टा कायर बनकर कलकत्ता भाग जाना वहां जाकर भी पुलिस से बचने के लिए झूठी गवाही का सहारा लेना इस सारे कायरता रूपी व्यवहार को देख जालपा उसे खूब धिक्कारती है। इस तरह पुरुषार्थ से रहित रमानाथ आजीवन कायरता का शिकार बना रहता है। उसकी कायरता का दृश्य उपन्यास के अन्त में भी देखने को मिलता है जब बाढ़ में डूबती हुई स्त्री को बचाने के लिए जोहरा जाती है तो रमानाथ उसे यह कहकर रोकने का प्रयास करता है "क्यों नाहक जान देने जाती हो? वहां शायद एक गड्डा है। मैं तो जा ही रहा था" में भी रमानाथ की कायरता सिद्ध होती है।

पत्नी से अनन्य प्रेम :— जालपा पर मोहित होना उससे अगाध प्रेम करने का कारण रमानाथ के मन में बसी उसकी अद्‌भुत आकृति अर्थात छवि है। जालपा की सुन्दरता ने उसे इतना बाधित कर रखा है कि वह अपनी वास्तविकता को भी पत्नी से छिपाकर उसे हर सम्भव प्रयास से खुश रख्ना चाहता है। पत्नी की खुशी के लिए वह हर अच्छे—बुरे कार्य का कोई विचार नहीं करता। रमानाथ की बुद्धि पत्नी के अनन्य प्रेम में इतनी एकाग्र हो चुकी है कि वह पत्नी को किसी भी कार्य के लिए 'ना' शब्द कहकर अघात पहुँचाना नहीं चाहता। यही कारण था कि वह पत्नी की प्रसन्नता के लिए गहने उधार लेता है। जिसकी भरपाई वह गबन करके करता है। रमानाथ जालपा बाहरी प्रसाधनों से हमेशा प्रसन्न रहे इसके लिए वह कोई कसर नहीं छोड़ताा परन्तु जालपा की मानसिक स्थिति अर्थात भाव क्या है इसके प्रति रमानाथ एक अनुभवहीन पुरुष है।

दयानाथ

कथा प्रधान रमानाथ के पिता दयानाथ आदर्श और सात्विकता की साक्षात मूर्ति है। बेईमानी, रिश्वत आदि निन्दनीय कार्य दयानाथ के स्वभाव के विरुद्ध हैं अपनी सच्चाई पर आँच न आने देने के कारण अनेक दुःखों का सामना करने वाले दयानाथ पुत्र का विवाह तब तक नहीं करना चाहते जब तक वह सही मार्ग का अनुसरण किसी काम काज पर नहीं लग जाता परन्तु माता की पुत्र के प्रति लालसा उसे शादी के लिए विवश कर देती है और वह उधार लेकर आभूषण बनवाकर बड़े चाव से विवाह की रस्म पूरी करता है। परिणाम यह हुआ कि कर्ज के बोझ तले दबा दयानाथ निरन्तर दुःखी रहता है। साधारण कर्मचारी के पद पर आसीन दयानाथ अपनी आय से कर्ज मुक्त नहीं हो सकता था। परिवार उसे अन्य लोगों की तरह

रिश्वत लेने के लिए प्रेरित करता है परन्तु वह अपनी निष्ठा पर किसी भी तरह दाग नहीं लगने देता। एक दिन रमानाथ जालपा के जेवर उस सर्राफ को लौटाकर कर्जे से मुक्ति तो पा लेते हैं किन्तु इस बात से दयानाथ के मन पर गहरा आघात लगता है। वह पश्चाताप की अग्नि में निरन्तर जलता तो है लेकिन अपने आदर्शों का सौदा कदापि नहीं करता। दयानाथ का यही संकल्प था कि चाहे मुझे नौकरी छोड़नी पड़े परन्तु अपने सात्विक व्यवहार को मैला नहीं करूंगा इन्हीं गुणों के आधार पर दयानाथ का कथा में साक्षात्कार होता है। दयानाथ की चारित्रिक विशेषताएं इस प्रकार हैं :–

ईमानदारी :– कचहरी में मात्र पचास रुपये मासिक वेतन लेने वाले रमानाथ के पिता दयानाथ अपने सिद्धांतों के प्रति पूर्ण निष्ठावान है। दयानाथ ऐसे स्थान अर्थात विभाग में कार्यरत है जहाँ वह जब चाहे जितने चाहे रुपये कमा सकता है पर उसे पाप–पुण्य का पूर्ण ज्ञान है। महान विपत्ति में पड़ने पर भी वह अपने आदर्शे पर अडिग रहता है जैसे जोहरी के बार–बार तंग करने पर भी वह रिश्वत नहीं लेता यह उसकी सात्विक वृति का स्पष्ट प्रमाण है।

सामर्थ्य से अधिक व्यय :– पुत्र के व्यवहार को देखकर दयानाथ अत्यंत दुःखी थे। उनके दुःख का कारण पुत्र की बेकारी था। पुत्र कोई काम नहीं करता था यही कारण था कि दयानाथ रमानाथ की शादी तब तक नहीं करना चाहते थे जब तक वह अपनी जिम्मेदारियों को ठीक से समझ न ले और आलस्य को त्यागकर काम–काज के प्रति जागरुक न हो परन्तु मां की ममता दयानाथ को विवश कर देती है और दयानाथ कर्ज लेकर सामर्थ्य से अधिक व्यय कर देते हैं। उसकी शादी पर, इस व्यय का मुख्य कारण पुत्र विवाह के प्रति दयानाथ की खुशी थी जिसे प्रेमचन्द ने निम्न पंक्तियों में दर्शाया है – "पहले जोड़े गहने को उन्होंने

गौण समझ रखा था। अब वही सबसे मुख्य हो गया। ऐसा चढ़ावा हो कि मड़ने वाले देखकर फड़क उठें।"

अन्तर्विरोध :– दयानाथ के चरित्र में अन्तर्विरोधी प्रवृत्ति के दो रूप हैं। पहली प्रवृत्ति उनकी सत्यनिष्ठा का स्पष्ट प्रमाण देती है जिसमें परिवार उसे रिश्वत आदि बुरे कार्यों के प्रति प्रेरित करता है परन्तु उसकी सात्विक वृत्ति उसे इस कार्य को करने के लिए प्रतिक्षण बाधित करती है। दूसरी अन्तर्विरोधी प्रवृत्ति तब स्पष्ट होती है जब रमानाथ जालपा के आभूषण वापिस करवाकर कर्ज मुक्त होता है। दयानाथ इस सारे वृतान्त को देख विरोध भी करता है परन्तु स्वयं मौन भी हो जाता है क्योंकि इस सारे घटनाक्रम का मुख्य कारण उसका आय से अधिक व्यय था जिसे वह भली–भांति जानता था।

अध्ययनशीलता :– स्थिरता दयानाथ के चरित्र का महान गुण है। बड़ी से बड़ी विपत्ति आने पर भी वह अपने चरित्र में किसी प्रकार भी बदलाव नहीं आने देता। समय के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की भावनाएं परिवार में बदल जाती हैं और परिवार दयानाथ को भी समयानुसार चलने की प्रेरणा देता है। परन्तु अपनी भावनाओं को न बदलने वाला अपने चरित्र का सौदा कदापि नहीं करता। यही कारण था कि जब वह अत्यंत दुःखी होता है तो अपने अध्ययन को माध्यम बनाकर चित्त को शांति प्रदान करता है। अपनी हर उलझन का समाधान वह पुस्तकालय जाकर अध्ययन को शांतिदूत मानकर करता है। दयानाथ एक सामान्य व्यक्ति है और चरित्र भी उसी के समान है जो किसी घटनाक्रम को देखकर भी नहीं डगमगाता है। अतः स्थिर चित वाले इस अनुभवी व्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि वह आरम्भ से अन्त तक एक ही स्थिति में जीवन व्यतीत करता है।

'गबन' उपन्यास की प्रमुख समस्याएं

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। कोई भी साहित्यकार सामाजिक परिवेश से अछूता नहीं रह सकता। समाज में क्या घटित हो रहा है, साहित्यकार उन समस्याओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से उजागर करने का प्रयत्न करता है ताकि लोगों को उनसे शिक्षा मिल सके। कोई भी रचना बिना उद्देश्य के संभव नहीं। उसमें कोई न कोई उद्देश्य या प्रेरणा निहित रहती है। प्रेमचन्द भी ऐसे ही साहित्यकार रहे हैं जिनकी रचनाएं सोउद्देश्यपूर्ण हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में तत्कालीन समाज के विभिन्न वर्गों की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं नारी मनोविज्ञान आदि समस्याओं का यथार्थपूर्ण चित्रण किया है। प्रेमचन्द जी ने उपन्यास को यथार्थ जीवन से जोड़कर, इस विद्या को एक नई दिशा प्रदान की।

'गबन' उपन्यास समस्यात्मक उपन्यास है। जिसमें लेखक ने मध्यवर्गीय समाज की प्रदर्शनप्रियता, कुंठित कामनाएं, उधार लेने की प्रवृत्ति, पुलिस की दमनकारी नीति, अनमेल विवाह आदि समस्यओं को उजागर करते हुए इन के दुष्परिणामों से सजग रहने का भी संदेश दिया है।

आभूषण प्रेम :– 'गबन' उपन्यास में प्रेमचन्द जी ने स्त्रियों के आभूषण प्रेम से उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। स्त्रियों को आभूषणों से विशेष प्रेम होता है। समय के साथ उसमें वृद्धि भी होती रहती है। परन्तु जब यह प्रेम अत्याधिक हो जाता है तो उसकी कामनापूर्ति हेतु व्यक्ति विभिन्न माध्यमों को अपनाता है। वह भूल जाता है कि जाने–अनजाने में अपने लिए कई समस्याएं उत्पन्न कर रहा है। 'जालपा' को बाल्यकाल से ही आभूषणों से प्रेम था। उसका मनोवैज्ञानिक कारण है कि वह बचपन से ही जिस पारिवारिक

परिवेश में पली–बढ़ी वहां आभूषणों को विशेष महत्व दिया जाता था। जालपा को चंद्रहार की लालसा बचपन से ही थी। परन्तु विवाह पर जब उसे चंद्रहार नहीं मिलता तो वह दुखी हो जाती है और तय करती है – "जब तक चन्द्रहार नहीं बन जाएगा वह कोई भी गहना नहीं पहनेगी।" सर्राफा का उधार चुकता करने के लिए जब उसके गहने चुरा लिए जाते हैं तो वह टूट जाती है और फूट–फूट कर रोने लगती है। उसके जीवन में मानो अंधकार सा छा जाता है। पत्नी प्रेम के चलते ही रामानाथ उधार के आभूषण लाता है। आभूषणों को पाकर जालपा प्रसन्न हो जाती है। रमानाथ इन आभूषणों का कर्ज चुकाने में असमर्थ होता है और यही गबन का कारण बनता है। इस प्रकार लेखक ने आभूषण प्रेम के दुष्परिणामों से सजग रहने की प्रेरणा दी है।

मिथ्या आत्मसम्मान या प्रदर्शन :– मध्यवर्गीय परिवार की सबसे बड़ी समस्या है – मिथ्या आत्मसम्मान व प्रदर्शन। इसी झूठे प्रदर्शन के बल पर मध्यम वर्ग का व्यक्ति उच्चवर्गीय व्यक्ति से तुलना करने लगता है। वह सारी सुख–सुविधाएँ व ऐश्वर्य प्राप्त करने का प्रयास करता है जो उच्च वर्ग के पास है। वह अपना वास्तविक जीवन, अपने यथार्थ को भूला बैठता है। यही कारण है कि अपने यथार्थ जीवन से कोसों दूर रहकर , कर्ज लेने से भी नहीं हिचकता है। जब अपने को कर्ज चुकाने में असमर्थ पाता है तो चोरी, रिश्वतखोरी, गबन आदि घिनौने कार्य करने लगता है।

जालपा, रमानाथ, रमेश बाबू, दयानाथ आदि सभी इस समस्या से ग्रस्त है। जालपा का आभूषणों के प्रति प्रेम, दयानाथ का रमानाथ के विवाह पर अपने सामर्थ्य से अधिक खर्च करना, रमानाथ का मित्रों के कपड़े पहन कर स्वयं को फेशनेबल दिखाना, अपनी पत्नी को

घुमाना–फिराना तथा सिनेमा दिखाना आदि मध्यवर्ग के प्रदर्शनप्रियता के प्रतीक हैं। इस झूठे दिखावे से जब पर्दा हटता है तो कई समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं।

अनमेल विवाह :– नारी जीवन की विविध समस्याओं में 'अनमेल विवाह' भी एक विकट समस्या है। आर्थिक असमर्थता के कारण माता–पिता अपनी बेटियों का विवाह किसी प्रौढ़ व्यक्ति से कर देते हैं, जो उनके जीवन के लिए एक अभिशाप बन जाता है। 'रतन' भी गबन उपन्यास की एक ऐसी पात्र है जिसका विवाह साठ वर्षीय वकीकल इन्द्रभूषण से करा दिया जाता है। जहाँ रत्न को पैसों की कमी न थी। परन्तु उसे न तो पति से प्रेम, न ही उस सुख की प्राप्ति हो सकी, जिसकी कामना एक पत्नी अपने पति से करती है। उन दोनों में जो प्राकृतिक भेद था उसे पाट पाना दोनों के लिए असंभव था। विवाह के कुछ वर्षों बाद इन्द्रभूषण स्वर्ग सिधार जाते हैं और रत्न निराश्रित हो जाती है। उसे सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा है। मणिभूषण रत्न को स्पष्ट कह देता है – "आपका इस घर पर और चाचा जी का सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं। वह मेरी सम्पत्ति है। आप मुझ से केवल गुजारे का सवाल कर सकती हैं?" दुर्भाग्य से यह समस्या आज भी समाज में व्यापक स्तर पर है।

पुलिस की दमनकारी नीति की समस्या :– हमारे समाज में चोरी, घूसखोरी, रिश्वतखोरी, बलात्कार, गबन जैसी समस्याएं आज भी विद्यमान हैं परन्तु अपराधियों के विरुद्ध पुलिस के रवैये पर हमेशा से ही प्रश्न चिन्ह लगता आ रहा है। पुलिस असली गुनहगारों को पकड़ने के बजाय किसी बेबस, लाचार को अपने षड़यंत्र में फांस कर उस निरापराध को मुजरिम करार

दिया जाता है। अपराधी खुले आम घूमते हैं। समाज में रहने वाला प्रत्येक सभ्य एवं सच्चा व्यक्ति पुलिस से दूरी बनाए रखने में खुद को सुरक्षित महसूस करता है।

'गबन' उपन्यास में भी प्रेमचन्द जी ने पुलिस के षड़यंत्रों एवं दमनकारी नीतियों का पर्दाफाश किया है। किस प्रकार क्रान्तिकारियों को डकैती के आरोप में फंसा लेने के लिए रमानाथ को प्रलोभन दिया जाता है। रमानाथ चुंगी के पैसे लौटाने में स्वयं को असमर्थ पाकर कलकत्ता भाग जाता है। परन्तु उसे अपनी गिरफतारी का डर हमेशा सताता रहता है। अपने इसी भय के कारण वह पुलिस के चक्रव्यूह में फंस जाता है। पुलिस उसे क्रान्तिकारियों के विरुद्ध झूठी गवाही देने के बदले में गबन के आरोप से मुक्त करने तथा नौकरी दिलाने का लालच देती है। इतना ही नहीं पुलिस उसकी खातिरदारी भी करती है। जोहरा नामक वेश्य को उसका मन बहलाने के लिए भेज दिया जाता है। पुलिस द्वारा अपनाए गए हथकंडे एवं षड़यंत्र उस युग की ही नहीं बल्कि आज भी एक गम्भीर समस्या बनी हुई है।

वेश्या समस्या :– स्त्री जाति की एक बड़ी समस्या है वेश्या जीवन। अधिकतर स्त्रियाँ आर्थिक विषमताओं और अत्याचारों के कारण इस वृत्ति का सहारा लेती है। कई ऐसी स्त्रियाँ भी हैं जिन्हें जबरन इस देह व्यापार में धकेल दिया जाता है। यह समाज उन्हें कुदृष्टि से देखता है तथा वासना तृप्ति का साधन मात्र समझता है। समाज की यह मानसिकता ही उनके पतन का कारण बनती जा रही है।

'गबन' उपन्यास की पात्र जोहरा एक वेश्या है। जिसे पुलिस द्वारा रमानाथ को फसाने के लिए भेज दिया जाता है। वह अपने हाव–भाव द्वारा रमानाथ को आकर्षित करती है तथा अपने मोहजाल में फंसा लेती है। जोहरा को जब इस बात का एहसास हो जाता है कि

रमानाथ का प्रेम उसके प्रति सच्चा तथा निष्कपट है तो वह भी उससे प्रेम करने लगती है। जोहरा जालपा के सेवाभाव तथा आदर्शों से प्रभावित हो जाती है। वह निश्चय करती है कि इस पाप जीवन को त्याग कर पवित्र जीवन व्यतीत करेगी। वह रमानाथ के परिवार की सदस्य बन जाती है और अंत में बाढ़ में डूबती हुई स्त्री को बचाने के प्रयास में अपने प्राणों की आहुति दे देती है। जोहरा के हृदय परिवर्तन के माध्यम से प्रेमचंद जी ने वेश्याओं के जीवन के उज्जवल पक्ष से समाज को अवगत कराया है। ताकि उनके प्रति लोगों की मानसिकता में परिवर्तन आ सके।

रिश्वत की समस्या :– रिश्वतखोरी आज हमारे देश की एक अहम् समस्या बनी हुई है जिसने सम्पूर्ण समाज को खोखला और भ्रष्ट बना दिया है। मनुष्य के हृदय में कई इच्छाएँ व अभिलाषाएँ पनपती रहती हैं, जिनकी पूर्ति वह अपने आमदनी से नहीं कर पाता है, परिणामस्वरूप वह रिश्वत लेने लगता है। प्रेमचन्द जी का मानना था कि यदि व्यक्ति अपने खर्च पर नियंत्रण कर ले तो इस रोग से बचा जा सकता है।

'गबन' उपन्यास के पात्र दयानाथ रिश्वत लेने के पक्ष में नहीं थे। वह रिश्वत को हराम समझते थे। अपने सीमित साधनों में ही उन्होंने परिवार का पालन किया। वह रमानाथ से कहते हैं – "ईमानदारी से काम करोगे, तो किसी अच्छे पद पर पहुँच जाओगे। मेरा यही उपदेश है कि पराये पैसे को हराम सझना।" इसके विपरीत रमानाथ अधिक से अधिक रिश्वत लेने चाहता है ताकि वह अपने तथा पत्नी के शौक पूरे कर सके। पुलिस रमानाथ को नौकरी की रिश्वत देकर झूठी गवाही दिलाने के लिए तैयार करती है।

उधार की समस्या :– मनुष्य को अपने सीमित साधनों में ही प्रसन्न रहना चाहिए। मध्यवर्गीय समाज की यह विड़म्बना है कि वह अपने झूठे आत्मसम्मान व प्रदर्शनप्रियता के लिए उधार तक लेने लगता है। व्यक्ति जब एक बार कर्ज के बोझ तले दब जाता है तो वहाँ से निकल पाना कठिन हो जाता है।

'गबन' उपन्यास में लेखक ने कर्ज से उत्पन्न हुई समस्याओं को चित्रित किया है। दयानाथ रमानाथ के विवाह पर उधार के गहने बहु के लिए बनवाता है जिसका उधार चुकाने के लिए रमानाथ द्वारा जालपा के गहनों को चुरा लिया जाता है। गहनों के चोरी होने के कारण दामपत्य जीवन में खटास उत्पन्न हो जाती है।

इसके बाद भी रमानाथ नहीं सुधरता है। जब उसकी नौकरी लगती है तो वह सरार्फा से उधार के गहने बनवाता है, जिसका कर्ज न चुका पाने पर उसे अपना घर तक छोड़ना पड़ता है। वह कई मुसीबतों में फंस जाता है।

इस प्रकार लेखक यह संदेश देना चाहता है कि मनुष्य को अपने सीमित साधनों के अनुरूप ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेनी चाहिए। मनुष्य यदि एक बार इस रोग से ग्रस्त हो जाता है तो उसे कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

'गब़न' उपन्यास में नारी मनोविज्ञान

मनोविज्ञान को मानस शास्त्र या आत्मविद्या भी कहा जाता है अर्थात वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियां या मन में उठने वाले विचारों आदि का विवेचन होता है। या हम यह कह सकते हैं कि वह आत्म–चिन्तन जो मन के विभिन्न क्रिया–कलापों का, उन क्रिया कलापों से पड़ने वाले असर आदि का मंथन करता है या विवेचन करता है। 'गब़न' उपन्यास में मुंशी

प्रेमचन्द जी ने नारी को इस रूप में चित्रित किया है कि उनके हाव–भाव–क्रिया–कलापों आदि को देखकर यह सिद्ध हो जाता है कि 'गबन' उपन्यास की नारी मनोवैज्ञानिकता की प्रतिमूर्ति है। मुंशी प्रेमचन्द ने नारी मानस शास्त्र या उनकी मानसिक दशा का इस रूप में वर्णन किया है कि नारी उपन्यास को एक जीवित रूप प्रदान करती प्रतीत होती है। उपन्यास में प्रत्येक पात्र की अपनी–अपनी भूमिकाएं, अपने–अपने विचार हैं, अपने–अपने क्रिया–कलाप हैं। जालपा, जोहरा, रत्न आदि का अपना–अपना किरदार है। इन सभी को आधार बनाकर ही प्रेमचन्द जी ने नारी की मनोवैज्ञानिकता का निरूपण किया है। लेखक की बुद्धि और कला–कौशल इतना प्रबल है कि उपन्यास पढ़ने वाला प्रत्येक व्यक्ति इसमें चित्रित हर एक घटनाक्रम को अपने जीवन के साथ जोड़कर अनुभव करता है। 'गब़न' उपन्यास के लेखक ने मानो व्यक्ति को जाँच–परख कर उसके मनोभावों को गबन करके ही चित्रित किया है।

जालपा – आभूषणों के प्रति प्रेम जालपा की मनोवैज्ञानिकता का ही प्रतीक है। बचपन से ही जालपा को गहने मिलते रहने से कारण उसकी मानसिक प्रवृत्ति उनके प्रति ललायित थी। विवाह के बाद भी जालपा की यही लालसा पति को भी मार्गभ्रष्ट करती है। पत्नी से अनन्य प्रेम और उसकी गहनों के प्रति उत्सुकता रमानाथ को पैसे गब़न करने तक को मजबूर कर देती है। रुपये गब़न करके वह कलकत्ता भग जाता है वहीं पर पुलिस के कहने पर झूठी गवाही देने को तैयार हो जाता है। यह सारा वृतान्त मनोवैज्ञानिकता का ही प्रतीक है क्योंकि एक तरफ जालपा की लालसा (आभूषणप्रियता) और दूसरी तरफ पत्नी को हर सुख प्रदान करने वाले पति का दम्भी कार्य दोनों की मनोवैज्ञानिकता को दर्शाता है।

रत्न – रत्न एक पतिव्रता स्त्री है उसके पतिव्रता होने का प्रमाण हमें इस संवाद में मिलता है जब वह जालपा को यह बताती हुई कहती है कि मेरी हर क्रिया मेरे पति के लिए ही है मैंने कभी एक पल के लिए भी नहीं सोचा कि मैं जवान हूँ और पति वृद्ध है। मैं पत्नी हूँ और वह मेरे आदर्श हैं। मन में जितना प्रेम, अनुराग है सब उनके लिए ही है। रत्न का पति के प्रति अन्न्य प्रेम, विश्वास उसकी मानसिक स्थिति का परिचायक है। रत्न के जीवन में यह घटनाक्रम भी उसकी मानसिक प्रवृत्ति का उदाहरण है – "जब पति की अनुपस्थिति में वह हार लेना चाहती है परन्तु रुपए कम होने की वजह से वह हार खरीद नहीं पाती।" घर की लालसा में रत्न इतनी मुग्ध हो चुकी है कि उसकी मानसिक पीड़ा सामने झलकती है। पति की मृत्यु के बाद रत्न में विराग की भावना आभूषण प्रियता का त्याग और दान यह भी उसकी मनोवैज्ञानिकता को ही सिद्ध करता है।

जोहरा – जोहरा एक वैश्या है, तरह–तरह के लोगों से मिलना उसका पेशा है। आत्म विद्या वह साधन है जो व्यक्ति को किसी भी कार्य में संलग्न कर सकता है। यदि यह मानसिक क्रिया शुद्ध हो तो व्यक्ति अचछे मार्ग पर चलता है और अगर अशुद्ध हो तो व्यक्ति बुरे मार्ग का अनुसरण करता है। जोहरा भी इसी अशुद्ध मार्ग को लक्ष्य करके पुलिस के कहने पर रमानाथ को अपने प्रेम जाल में फँसाने आयी थी, परन्तु रमानाथ की सरलता को देख जोहरा की बुरी नीयत अच्छी प्रवृत्ति का रूप धारण कर लेती है, और वह रमानाथ से सच्चा प्रेम करने लगती है। जोहरा की मनोवैज्ञानिकता सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होती है। बुरे से अच्छा बनना उसके जीवन का सबसे बड़ा प्रमाण है। जोहरा का रमानाथ से प्रेम करना, जालपा से भी वैर–भाव न रखना, रमानाथ की सहायता करना, जालपा के आदर्शों से प्रभावित होना, उसके आदर्शों को

देख अपने गन्दे जीवन को कोसना, अपने आप पर सवाल करना, जालपा की सहायक बनना, उसके आदर्शों को अपनाकर अपना जीवन सेवा और त्याग में परिवर्तित करना, कलकत्ता छोड़कर देवीदीन के आश्रम में निवास करना, पूर्व कृत कर्मों का प्रायश्चित करना यह सारे विचार और क्रियाएं जोहरा की मनोवैज्ञानिकता को उजागर करती हैं।

अतः स्पष्ट है कि लेखक ने नारी मनोविज्ञान को सहज और सरल भाव से चित्रित किया है। प्रेमचन्द जी के इस वर्णन से यह सिद्ध हो जाता है कि नारी मनोविज्ञान में उस समय की सम्पूर्ण घटनाएं वर्तमान समय में भी विद्यमान हैं और समाज उनका पूर्ण रूप से साक्षात्कार भी कर रहा है।

अभ्यास के प्रश्न

1. जालपा का चरित्र–चित्रण कीजिए।
2. रमानाथ के चरित्र की विशेषताएं लिखें।
3. 'गबन' उपन्यास की प्रमुख समस्याओं का वर्णन कीजिए
4. 'गबन' उपन्यास में चित्रित नारी मनोविज्ञान पर प्रकाश डालिए।

कोर्स कोड UHILTE-503

कथाकार प्रेमचंद

बी.ए. सत्र – पाँच

प्रो. विक्की रतन

राजकीय महाविद्यालय, बसोली

इकाई – तीन

'पंचपरमेश्वर' कहानी की तात्विक समीक्षा

'पंचपरमेश्वर' कहानी प्रेमचन्द जी द्वारा रचित एक आदर्शवादी कहानी है। कहानी का शीर्षक मूल कथ्य के अनुरूप है। जीवन को प्रत्यक्ष रूप में चित्रित करने वाली इस कहानी में पात्रों की अन्तः स्थिति का बहुत ही मार्मिक एवं सुन्दर चित्रण हुआ है। जहाँ एक ओर लेखक ने अलगू चौधरी और जुम्मन शेख की मित्रता के माध्यम से समाज को प्रेम–भाव का सुदृढ़ संदेश दिया है, वही दूसरी ओर उनके अंतर्द्वंद को उजागर कर कर्तव्य और सत्य की विजय पताका को भी लहराया है। कहानी के तत्वों के आधार पर 'पंचपरमेश्वर' कहानी की समीक्षा इस प्रकार है :–

कथावस्तु :– कहानी का निर्माण कथावस्तु के आधार पर होता है। समाज, धर्म, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, पुराण, जीवनदर्शन, जीवन की किसी भी आवश्यक घटना को कहानी का विषय बनाया जा सकता है। कहानी में मौलिकता, रोचकता, क्रमबद्धता, विश्वसनीयता, प्रभावात्मकता आदि गुण होने चाहिए।

मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित 'पंचपरमेश्वर' एक आदर्शवादी कहानी है। इस कहानी में कहानीकार ने अलगू चौधरी और जुम्मन शेख की मित्रता, अंतर्द्वंद के साथ ही जुम्मन के खालाजान के प्रति कर्तव्य की सफल अभिव्यक्ति की है। जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में घनिष्ठ मित्रता थी। इसका कारण उनका विचारों का मिलना था। दोनों एक दूसरे के प्रति गहरा विश्वास रखते थे। जब कभी भी उन्हें घर से बाहर जाना पड़ता तो वह एक दूसरे के भरोसे अपना घर छोड़कर जाते। जुम्मन शेख की एक बूढ़ी मौसी थी, वह जुम्मन के साथ ही

रहती थी। जुम्मन ने मौसी से जीवन भर उसकी सेवा का वायदा किया था परन्तु जमीन–जायदाद अपने नाम करवाने के बाद से ही मौसी की सेवा, सत्कार बंद हो गया। इस बात से मौसी और जुम्मन की पत्नी में आय दिन झगड़े होने लगे। मौसी के प्रति जुम्मन के व्यवहार में भी बदलाव आ गया था। पति–पत्नी के इस कठोर व्यवहार से मौसी बहुत दःखी हो गई थी। उसने पंचायत बुलाने का निर्णय किया। अलगू चौधरी को सभी की सम्मति से सरपंच नियुक्त किया जाता है। पंचायत ने मौसी की करुण कथा सुनने के बाद फैसला मौसी के पक्ष में सुना दिया। इस फैसले के बाद से ही जुम्मन अलगू को अपने शत्रु मानने लगा और उससे बदला लेने की ठान लेता है। शीघ्र ही उसे यह अवसर अलगू और समझू साहू के बीच चल रहे झगड़े में प्राप्त हो गया। जुम्मन को सरपंच चुना गया। सरपंच के पद की मर्यादा रखते हुए जुम्मन ने न्यायसंगत फैसला सुनाया। सब हैरान थे। फैसला अलगू चौधरी के पक्ष में आता है। पंचपरमेश्वर की जयघोष होने लगती है।

कहानी की कथावस्तु में मौलिकता, रोचकता, विश्वसनीयता आदि गुण स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हैं। अतः कथावस्तु की दृष्टि से 'पंचपरमेश्वर' एक सफल कहानी है।

पात्रयोजना :– कहानी के तत्वों में पात्रों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। कहानी की घटनाओं और परिस्थितियों का परिचालन करने वाले को पात्र कहते हैं। लेखक पात्रों के माध्यम से ही मानवता का बहुपक्षीय रूप प्रस्तुत करता है। कहानी को नाटकीयता प्रदान करने में भी पात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

'पंचपरमेश्वर' कहानी में अलगू चौधरी तथा जुम्मन शेख को मुख्य पात्रों के रूप में चित्रित किया गया है। बूढ़ी मौसी, समझू साहू आदि गौण पात्र हैं। लेखक ने बड़ी स्वभाविकता

के साथ इन पात्रों का चरित्र–चित्रण किया है। अलगू तथा जुम्मन परम मित्र थे। उनमें प्रेम, सेवा, त्याग और कर्तव्य जैसे गुण विद्यमान थे। अलगू के मन में मित्र के लिए प्रेम तथा जनता के प्रति सेवा भावना भी है। वहीं जुम्मन मित्र प्रेम और कर्तव्य के अंतर्द्वंद में चित्रित गतिशील पात्र है। कहानी के अंत में लेखक ने जुम्मन शेख का हृदय परिवर्तन कराकर उसे एक सच्चे मित्र के रूप में चित्रित किया है। बूढ़ी मौसी, समझू साहू के चरित्र को लेखक ने बड़े कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है।

संवाद योजना :– संवाद योजना भी कहानी का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। पात्रों के वार्तालाप को संवाद या कथोपकथन कहा जाता है। संवादों से कथावस्तु को गति प्रदान होती है तथा पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्‌घाटन होता है। कहानी के संवाद सरल, सहज, सजीव एवं स्वाभाविक होने चाहिए। 'पंचपरमेश्वर' कहानी के संवाद सरल, सहज, सटीक, स्वाभाविक तथा पात्रानुकूल है। उदाहरण –

अलगू – मुझे बुलाकर क्या करोगी? कई गाँव के आदमी तो आवेंगे ही।

खाला – अपनी विपद तो सबके सामने रो आई। अब आने न आने का अखितयार उनको है।

अलगू – यों आने को आ जाऊँगा, मगर पंचायत में मुँह न खोलूँगा।

खाला – क्यों बेटा?

अलगू – अब इसका क्या जवाब दूँ? अपनी खुशी। ... जुम्मन मेरा पुराना मित्र है ...

खाला – बेटा, क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?

कहानी के संवाद दीर्घ एवं संक्षिप्त दोनों प्रकार के हैं। संवाद योजना से कहानी सफल बन पड़ी है।

देशकाल और वातावरण :– कहानी में सजीवता और स्वाभाविकता लाने वाले तत्वों में वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान है। कहानी को विश्वसनीय बनाने के लिए वहाँ का वातावरण निर्माण किया जाता है। इस दृष्टि से प्रेमचन्द द्वारा रचित 'पंचपरमेश्वर' एक विशिष्ट कहानी है। इस कहानी में लेखक ने संध्या काल होने वाली ग्राम पंचायत का सुंदर चित्रण किया है। संध्या समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठती है। जुम्मन ने पहले सी तैयारी कर रखी थी। फर्श बिछा हुआ था, पान–इलायची, हुक्के–तम्बाकू का भी प्रबंध था। सूर्यग्रस्त होते ही चिड़ियों की चहचाहट में पंचायत शुरू हुई। सारी फर्श लोगों से भर गई थी। अधिकांश लोग दर्शक ही थे। भीड़ के एक कोने में आग जल रही थी। सुलगते हुए उपलों तथा चिलम के धुएँ से वातावरण धुंधला गया था। चारों ओर कोलाहल मचा हुआ था। लड़के इधर–उधर दौड़ रहे थे।

कहानी के अंत में भी पुनः यह दृश्य उत्पन्न होता है। एक बार फिर पंचायत बैठती है। पंचायत की तैयारियाँ होने लगीं। दोनों पक्षों ने अपने दल बनाने शुरू किए। वही संध्या का समय था। उसी वृक्ष के नीचे पंचायत बैठी। खेतों में कौए बातचीत कर रहे थे। विषय था कि "मटर की फलियों पर उनका स्वत्व है या नहीं, ...। पेड़ों की डालियों पर शुकमंडली बैठी हुई थी।"

इस प्रकार लेखक ने देशकाल और वातावरण का सुंदर और यथार्थ चित्रण किया है।

भाषा–शैली :– अभिव्यक्ति की कुशलता पर ही कहानीकार की सफलता निर्भर करती है। कहानी सभी वर्ग के लोग पढ़ते हैं, अतः कहानी की भाषा सरल, स्पष्ट, प्रवाहपूर्ण चुस्त और

सशक्त होनी चाहिए। लेखक ने 'पंचपरमेश्वर' कहानी में सरल, सहज तथा व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया है, जो पात्रानुकूल है। उनकी भाषा में तत्सम, तद्भव, उर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। कहीं–कहीं आमबोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग ने भाषा को और भी स्वाभाविक बना दिया है। भाषा में चित्रात्मकता का गुण विद्यमान है। 'पंच परमेश्वर' कहानी में वर्णनात्मक, संवादात्मक तथा मनोविश्लेषणात्मक शैली का भी प्रयोग हुआ है। अतः भाषा शैली की दृष्टि से यह एक सफल कहानी है।

उद्देश्य :– बिना उद्देश्य के कोई भी रचना संभव नहीं है। 'पंचपरमेश्वर' कहानी एक सोद्देश्यपूर्ण रचना है। लेखक ने समाज में इस आदर्श को प्रस्तुत करना चाहा है कि पंच में परमात्मा का वास होता है। उसके मुख से निकलने वाला प्रत्येक शब्द परमात्मा का शब्द होता है। पंच न तो किसी का मित्र न शत्रु होता है। वह केवल न्याय का हितैषी होता है। उसे अपने कर्तव्य पालन की चिन्ता रहती है।

अतः स्पष्ट है कि कहानी हमें स्वार्थ भाव को त्यागकर निष्पक्ष तथा न्याय संगत निर्णय लेने की प्रेरणा देती है।

अलगू चौधरी का चरित्र चित्रण

कहानी में मुख्य पात्र की भूमिका निभाने वाले अलगू चौधरी के चरित्र को लेखक ने 'पंच परमेश्वर' कहानी में जुम्मन शेख के बाद वर्णित किया है। 'पंच परमेश्वर' कहानी के स्थिर पात्र अलगू चौधरी के चरित्र को लेखक ने बड़ी कुशलता पूर्वक वर्णित किया है। कथानक पर दृष्टिपात करते हुए अलगू के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :–

सच्चा मित्र :– सच्ची मित्रता का प्रमाण स्वरूप अलगू चौधरी के मन में धर्म का कोई भेद नहीं। जुम्मन उसके मैत्री भाव का आदर मन से करता है परन्तु यह मैत्री भाव जुम्मन से अधिक अलगू के मन में दिखता है। मैत्री भाव का स्पष्ट प्रमाण और उनके घनिष्ठ सम्बन्ध का पता हमें तब चलता है जब जुम्मन शेख की बूढ़ी खाला उसे पंचायत में बुलाती है तब अलगू उसे यह उत्तर देता हुआ कहता है कि :–

अलगू – मुझे बुलाकर क्या करोगी? कई गाँव के आदमी तो आवेंगे ही।

खाला – अपनी विपद तो सबके सामने रो आई। ...

अलगू – यों आने को आ जाऊँगा, मगर पंचायत में मुँह न खोलूँगा।

खाला – क्यों बेटा?

अलगू – अब इसका क्या जवाब दूँ? अपनी खुशी। ... जुम्मन मेरा पुराना मित्र है। उससे बिगाड़ नहीं कर सकता।

उक्त वाक्य उनकी मित्रता का साक्षात् प्रमाण है।

अधिकारों के प्रति सचेत :– अलगू चौधरी अपने अधिकारों को किसी प्रकार की भी हानि बर्दाशत न करने वाला, अपने कर्तव्य के प्रति जागरुक और पूर्णतया सचेत पात्र है। बैलों का सौदा उसकी कर्तव्य परायणता का स्पष्ट प्रमाण है। जब समझू साहू बैल खरीद कर उसे पैसे नहीं देता तो अलगू इस निर्णय के लिए पंचायत बिठाता है अपने अधिकार को पाने तथा समझू साहू के दुर्व्यवहार का वह पूरी पंचायत के सामने भाण्डा फोड़ता है।

गुरूभक्त :– अलगू के विचार गुरू भक्ति में दृढ़ हैं वह गुरू को कल्याण मार्ग में सर्वश्रेष्ठ साधन मानता है और तन–मन–धन से उनके आदेशों और उपदेशों का पालन करता है। गुरू

के प्रति आस्था अलगू के ह्रदय में पारिवारिक संस्कार से अर्थात पिता की प्रेरणा से जागृत हुई। गुरू का हर दृष्टि से सम्मान हो इसके लिए अलगू का गुरू के जूते साफ करना, बर्तन धोना और एक पल के लिए भी हुक्का बन्द न होने देना सब कार्य आदर–सम्मान के परिचायक हैं यहां तक कि अध्ययन करते समय भी वह गुरू का पूर्ण ध्यान रखता था।

सत्यप्रिय :– अलगू सात्विक वृत्ति वाला व्यक्ति है उसकी सात्विक वृत्ति और घनिष्ठ मैत्री सम्बन्ध समाज के लिए उदाहरण हैं। परन्तु जितना अधिक वह अपनी मित्रता पर गर्व करता था उससे भी कहीं और अधिक उसे सत्य पर अटल रहना पसन्द था। सत्य का पक्ष लेना और उसमें जीवन व्यतीत करना उसके लिए सर्वश्रेष्ठ था तथा व्यर्थ के कार्यों का बोझ अपने मन न बनने देना ही उसकी शुद्धता काा प्रतीक है।

स्पष्टवादी :– अलगू एक स्पष्ट विचारों वाला व्यक्ति है उसे जो बात सटीक लगती है उससे परहेज न कर वह खुले मन से बोलता है क्योंकि अलगू जब जुम्मन से पंचायत में प्रश्न करता है तो अलगू का एकाएक सवाल उसकी छाती पर हथौड़े की तरह प्रहार करता है परन्तु सत्य पर अटल रहने वाला अलगू मित्रता को छोड़ न्याय को अधिक मान्यता देता है। यही उसकी स्पष्टवादिता का प्रमाण है।

निष्कर्ष :– अतः हम यह कह सकते हैं कि अलगू में हर वो गुण विद्यमान है जो एक सात्विक पुरुष में होना चाहिए। अपने गुणों के आधार पर ही अलगू और जुम्मन समाज के लिए स्पष्ट प्रमाण अर्थात् उदाहरण है।

जुम्मन शेख

'पंचपरमेश्वर' कहानी में अलगू चौधरी की तरह ही जुम्मन शेख एक प्रमुख पुरुष पात्र है। कहानी में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। लेखक ने उसे गतिशील पात्र के रूप में चित्रित किया है। उसके चरित्र की विशेषताएं इस प्रकार से हैं :–

अलगू से मित्रता :– जुम्मन शेख की अलगू से घनिष्ठ मित्रता थी। वह उस पर स्वयं से अधिक विश्वास रखता था। दोनों मित्र एक दूसरे के प्रति अपने कर्तव्य को बड़ी निष्ठा से निभाते थे। जुम्मन जब हज करने गए थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गये थे और अलगू जब कभी घर से बाहर जाता तो अपना घर जुम्मन को सौंप देता। उनमें वैचारिक समानता थी।

मौसी की उपेक्षा तथा दुर्व्यवहार :– जुम्मन शेख की एक बूढ़ी मौसी थी। उसके पास अपनी जमीन थी। जब तक जमीन मौसी के पास थी, तब तक तो जुम्मन तथा उसकी पत्नी ने मौसी का खूब आदर किया। परन्तु जब मौसी ने अपनी जमीन जुम्मन के नाम की, तब से उसके व्यवहार में परिवर्तन आया। अब न तो पहले जैसी ही मौसी की सेवा तथा आदर होता न ही स्वादिष्ट भोजन खाने को मिलता था। पति–पत्नी दोनों का व्यवहार मौसी के प्रति निष्ठुर हो गया। मौसी की बात–बात पर उपेक्षा होती थी, उसे प्रताड़ित भी किया जाने लगा। जब बात हद तक पहुँच गयी, तब खाला ने जुम्मन से अपने निर्वाह के लिए रुपयों की माँग की। इस पर जुम्मन बड़ी धृष्टता से उत्तर देता है – "रुपये क्या यहाँ फलते हैं?"

बदले की भावना :– जब पंचायत में अलगू चौधरी द्वारा जुम्मन शेख से प्रश्न पूछे जाते हैं तो वह स्वयं को अपमानित महसूस करता है। उसे विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि उसका

मित्र जो सरपंच की भूमिका में था, उससे इस प्रकार प्रश्न पूछ कर अपमानित करेगा – "जुम्मन चक्ति थे कि अलगू को क्या हो गया। अभी यह अलगू मेरे साथ बैठा हुआ कैसी–कैसी बातें कर रहा था। इतनी ही देर में ऐसी कायापलट हो गई कि मेरी जड़ खोदने पर तुला हुआ है। न मालूम कब की कसर निकाल रहा है।" वह अलगू से बदला लेने की ठान लेता है और उसी घड़ी का बेसबरी से इंतजार करता है।

हृदय परिवर्तन :– जुम्मन शेख अलगू से वैर ठाने हुए था। संयोग से ही शीघ्र उसे भी अलगू चौधरी तथा समझू साहू के झगड़े में सरपंच की भूमिका निभाने का अवसर प्राप्त होता है। परन्तु सरपंच का उच्च स्थान ग्रहण करते ही उसे अपनी जिम्मेदारी का एहसास होता है। उसमें सत्यता का भाव जागृत होता है। वह सोचता है – "मैं इस वक्त न्याय और धर्म के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से इस समय जो कुछ निकलेगा, वह देववाणी के सदृश है और देववाणी में मेरे मनोविकारों का कदापि समावेश न होना चाहिए। मुझे सत्य से जौ–भर भी टलना उचित नहीं है।" उसका वैर समाप्त हो जाता है और वह न्यायसंगत फैसला सुनाता है।

पश्चाताप (पश्चाताप) :– अलगू चौधरी के फैसले सुनाने के बाद से ही जुम्मन के मन में अलगू से बदला लेने की भावना जागृत होती है। परन्तु सरपंच का पद ग्रहण करते ही उसे एहसास हो जाता है। पंचायत समाप्त होने के बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उन्हें गले लगाकर बोले – "भैया जब से तुम ने मेरी पंचायत की, तब से मैं तुम्हारा प्राण–घातक शत्रु बन गया था, पर आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठ कर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे कुछ नहीं सूझता। मुझे विश्वास हो गया कि पंच की

ज़बान से खुदा बोलता है।" जुम्मन पश्चाताप की अग्नि में जल उठता है। उसकी बातें सुनकर अलगू की आँखें भर आती हैं, वह रोने लगता है।

इस दृष्टांत के बाद दोनों का मैत्रीभाव पुनः जागृत हो उठता है।

अभ्यास के प्रश्न

1. 'पंच परमेश्वर' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए।
2. अलगू चौधरी का चरित्र–चित्रण कीजिए।
3. जुम्मन शेख के चरित्र पर प्रकाश डालिए।
4. 'पंच परमेश्वर' कहानी का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखें।

स्नातक सत्र-5,UHILTE-503

(कथाकार प्रेमचंद) **कमल जीत; सहायक प्राध्यापक (हिन्दी),**

इकाई तीन **उच्च शिक्षा विभाग, जम्मू-कश्मीर**

पाठ का उद्‌येश्य- 'कथाकार प्रेमचंद' शीर्षक के इस कोर्स को पढ़ते हुए हम हिन्दी साहित्य के महान लेखक प्रेमचंद के लेखन और हिन्दी के समृद्ध कथा साहित्य से परिचित हो सकते हैं। निर्धारित पाठ्यक्रम के बहाने हम भारतीय मानस की महानता व दुर्बलता को प्रामाणिक रूप से जान सकते हैं, उस पर संवाद कर सकते हैं। यह हमारी पात्रता पर निर्भर करता है कि प्रेमचंद जी को पढ़ते हुए हम कितना अर्जित कर पाते हैं। 'गबन' और निर्धारित कहानियों से हम अपनी सीमाओं का अतिक्रमण करके उदात्त जीवन-मूल्यों की ओर प्रेरित हो सकते हैं। 'गबन' की दो इकाइयों से आगे यहाँ हम अगली इकाई की दो कहानियों पर बात करेंगे, इसके अंतर्गत हम कहानियों के कथ्य, उद्‌येश्य, प्रासंगिकता, समस्या, चरित्र-अंकन को उकेरेंगे। इस सामाग्री का उद्‌येश्य नोट्स उपलब्ध करवाना नहीं है बल्कि विद्‌यार्थियों को पाठ के लिए प्रेरित करना है। यहाँ बाज़ारी किताबों से परे कुछ समीक्षात्मक बात होगी। यहाँ दृष्टि प्रमुख रहेगी और कम में अधिक कहने का विनम्र प्रयास भी होगा।

1- पंच परमेश्वर:

कथ्य/समस्या/चरित्र-अंकन/उद्‌येश्य/प्रासंगिकता/समीक्षा

प्रेमचंद विश्व कथा-साहित्य में अपनी पहचान रखते हैं। स्वतन्त्रता पूर्व भारत की प्रामाणिक तस्वीर इनके साहित्य में देखी जा सकती है। उन्हीं के शब्दों को लेकर

कहें तो वे बिगाड़ के डर से ईमान की बात कहने से कहीं नहीं चूके। इनकी कहानियाँ और उपन्यास समकाल की विद्रूपताओं, समस्याओं और सपनों को बयान करती हैं। प्रेमचंद एक यथार्थवादी कथाकार हैं, इनका आदर्श इनके यथार्‌थ को अधिक पैना व उदात्त बनाता है। इनकी कहानियों में समाज का सच, एक साफ दृष्टि व जीवन-मूल्य देखें जा सकते हैं। इनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है। 'पंच परमेश्वर' इनकी एक प्रसिद्‌ध कहानी है। यह हिन्दी की शुरुआती कहानियों में से है, इसे 1915 में लिखा गया।

यह कहानी न्याय व दायित्वबोध की कहानी है। कथ्य की दृष्टि से यह दो दोस्तों और एक बुज़ुर्ग स्त्री के इर्द-गिर्द घूमती एक संक्षिप्त व कसी हुई कहानी है। कथ्य में रोचकता, कहन की मौलिकता और प्रवाह है। जुम्मन शेख और अलगू चौधरी की मित्रता बचपन से प्रसिद्‌ध है। एक दूसरे पर उनका अपार स्नेह व अगाध विश्वास है। जुम्मन की खाला का जुम्मन के अलावा कोई नहीं है, जुम्मन उसे अपने साथ रख लेता है। बूढ़ी खाला की संपत्ति को प्राप्त करने हेतु जुम्मन के घर में उसकी खूब आवभगत होती है, पर जैसे ही मौसी अपनी ज़मीन उनके नाम करती है, उनके भाव बदल जाते हैं। वे उसे रूखी-सुखी रोटी भी ठीक ढंग से नहीं देते। उनके बदले व्यवहार को देखकर मौसी इस मामले को पंचायत में ले जाती है। वह पंच के रूप में जुम्मन के अभिन्न मित्र अलगू को चुनती है। इस पर जुम्मन प्रसन्न होता है, वह आश्वस्त था कि निर्णय तो उसी के हक़ में होगा। परंतु अलगू दोस्ती से ऊपर उठकर पंच के दायित्व को निभाते हुए न्याय को चुनता है, वह अपने मित्र जुम्मन के विपक्ष में निर्णय सुनाता है। इस पर जुम्मन उसे अपना शत्रु मान बैठता है। वह उस दिन का इंतज़ार करने लगता है जब उसे बदला लेने का अवसर मिल सके। जल्दी ही वह दिन आ भी जाता है। अपना एक बैल मर जाने के बाद अलगू ने समझू साहू को अपना दूसरा बैल बेच दिया क्योंकि अकेला बैल

किसानी-खेती के काम नहीं लाया जा सकता था। समझू साहू ने बैल की कीमत एक महीने बाद देना तय माना। अच्छा व स्वस्थ बैल पाकर समझू साहू ने लोभवश उससे सामर्थ्य से अधिक काम लेना शुरू किया। चारा सानी के अभाव में दिन-रात सामान से भरी बैलगाड़ी खींचते-खींचते बैल कमज़ोर होने लगा। एक रात रास्ते में बैल ने दम तोड़ दिया। सामान की चिंता में समझू साहू को रात वही गुज़ारनी पड़ी, सुबह देखा तो उसकी पैसों की थैली और कुछ तेल के कनस्तर गायब थे। समझू साहू संवेदनहीनता से बैल को गलियाँ देता हुआ घर पहुँचा। अलगू जब अपने बैल की कीमत लेने पहुँचता है तो समझू साहू बैल को अस्वस्थ बताकर पैसे देने से मना कर देता है। गाँव में एक बार फिर पंचायत बैठती है। इस बार जुम्मन शेख को पंच नियत किया जाता है। सबको लग रहा था कि जुम्मन बदला लेगा, लेकिन पंच बनते ही वह मानवीय दुर्बलताओं व सीमाओं से ऊपर उठ जाता है। वह समझू साहू को दोषी, बेईमान व असंवेदनशील करार देते हुए अपना निर्णय अलगू के पक्ष में सुनाता है। भरी सभा में पंच परमेश्वर की जय के नारे गूँज उठते हैं। अलगू और जुम्मन एक दूसरे को गले लगा लेते हैं। उनकी दोस्ती फिर हरी हो जाती है। इस कहानी का कथ्य बाँधे रखता है। पाठक को सामूहिक ज़िम्मेवारी के लिए प्रेरित करता है।

कहानी में हमारे ग्रामीण परिवेश का सटीक चित्रण हुआ है। यहाँ लोक का कोलाहल स्पष्ट दिखता है। प्रेमचंद की मुहावरेदार व पात्रानुकूल भाषा हमें गाँव की चौपाल पर ले जाती है। तीन-चार पात्रों और संक्षिप्त व सरल संवादों से देशकाल वातावरण जीवंत हुआ है। इस कहानी में रिश्तों के परिप्रेक्ष्य में मानवीय सीमाओं व दुर्बलताओं के साथ-साथ न्याय व दायित्वबोध जैसे उदात्त मूल्यों को दर्शाया गया है। प्रेमचंद लोक में व्याप्त लोभ-लालच, वैर-विरोध, विश्वास-अविश्वास, मित्रता, ईमान और कर्तव्यबोध को दर्शाने में सफल रहे हैं। कहानी के पात्र हमारे देखे-सुने

हैं, जो अपनी सीमाओं के बावजूद आदर्श पात्र कहे जा सकते हैं। इन पात्रों को पढ़ते हुए किसी पर क्रोध नहीं आता, कोई हमें खलनायक नहीं लगता बल्कि सभी सामान्य लगते हैं। कहानी के अंत में यह विश्वास पैदा होता है कि आदमी अपनी दुर्बलताओं पर विजय पाने के लिए पैदा हुआ है।

भारत की आत्मा गाँव में बसती है, यह कहानी हमारे गाँव/अंचल/लोक की प्रतिनिधि कहानियों में से है। यह कहानी आज भी प्रासंगिक है। समकाल में भले ही परंपरा का ह्रास और मूल्यों का विघटन हो रहा है परंतु यह भी सच है कि कुछ लोग अब भी न्याय को सर्वोपरि मानते हैं, इसके लिए वे हर कीमत देते हैं। भारतीय -परंपरा न्याय, सत्य, त्याग, सामूहिकता आदि के लिए पहचानी जाती है। अलगू और जुम्मन न्याय की कुर्सी पर बैठते ही अपनी दोस्ती के ऊपर न्याय को रखते हैं, प्रेमचंद लिखते हैं- " यह फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गया। मगर रामधन मिश्र और अन्य पंच अलगू चौधरी की इस नीति परायणता की जी खोलकर प्रशंसा कर रहे थे। वे कहते थे- इसका नाम पंचायत है! दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया। दोस्ती दोस्ती की जगह है किन्तु धर्म का पालन करना मुख्य है। ऐसे ही सत्यवादियों के बल पर पृथ्वी ठहरी है, नहीं तो वह कब की रसातल में चली जाती।" इसी तरह जुम्मन शेख भी निजी वैर विरोध से ऊपर उठकर अलगू के हक़ में निर्णय देता है। दोनों ने सत्य का साथ दिया, इससे उनकी दोस्ती खत्म नहीं हुई बल्कि समाज में एक मिसाल बनी। पाठक इस कहानी को पढ़कर अभिभूत हो जाता है। ऐसी कहानियाँ हमें परिष्कृत करती हैं।

यह (चरित्रप्रधान) कहानी हमें मूल्यों से जोड़ती है। मूल्यों से बड़ा कुछ नहीं। मानवीय होना बड़ा गुण है। हमें याद रखना चाहिए कि ईश्वर भी मानवीय हुए बिना ईश्वर नहीं कहला सकता और कोई पंच/न्यायधीश भी बिना मानवीय हुए 'पंच-परमेश्वर' नहीं कहला सकता।

००

2- 'बूढ़ी काकी':

कथ्य/समस्या/चरित्र-अंकन/उद्येश्य/प्रासंगिकता/समीक्षा

प्रेमचंद एक बड़े कथाकार हैं, इन्होंने जीवन को समग्र रूप से उद्घाटित किया है। उनके चरित्र भारत का सच्चा चरित्र-अंकन करते हैं। वे हर रंग, वर्ग, वर्ण और लिंग के लेखक हैं, इन्होंने अपनी कहानियों व उपन्यासों में स्त्रियों, किसानों, मज़दूरों, ज़मीदारों, दलितों, बुद्धिजीवियों, बुजुर्गों, बच्चों, जानवरों आदि को पूरी प्रामाणिकता, संवेदनशीलता व सूक्ष्मता से चित्रित किया है। 'बूढ़ी काकी' इनकी एक अति चर्चित कहानी है। यह हृदयविदारक व मार्मिक कहानी है। इसे पढ़कर हम करुणा, शर्म और ग्लानि से भर जाते हैं। बुजुर्गों के प्रति अपने व्यवहार को लेकर आत्ममंथन करते हैं, परिष्कृत होते हैं।

बूढ़े और बच्चे एक समान होते हैं, 'बूढ़ी काकी' में यह मनोविज्ञान स्पष्ट देखा जा सकता है। प्रेमचंद बूढ़ी काकी को चित्रित करने में पूरी तरह से सफल हुए हैं। प्रेमचंद लिखते हैं- "बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। बूढ़ी काकी में जिह्वा - स्वाद के सिवा कोई चेष्टा शेष न थी और न ही कष्टों की ओर आकर्षित करने का, रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही। समस्त इंद्रिया, नेत्र, हाथ और पैर जवाब दे चुके थे। पृथ्वी पर पड़ी रहतीं और घर वाले कोई बात उनकी इच्छा के प्रतिकूल करते, भोजन का सामय टल जाता या उसका परिमाण पूर्ण न होता, अथवा बाज़ार में कोई वस्तु आती और उन्हें न मिलती तो वे रोने लगती थीं। उनका रोना-सिसकना साधारण रोना न था, वे गला फाड़-फाड़ रोती थी।" स्पष्टत: यह सभी क्रियाएँ एक बच्चे की भी होती हैं, परंतु त्रासदी है कि इस दुनिया में कम ही लोग हैं जो बूढ़ों और बच्चों के भावों को समझते हों, ऊपर से वे अगर बेसहारा हों फिर तो समाज उन्हें दुत्कार ही देता है। ऐसा नहीं हैं कि बचपन

व बुढ़ापे की वय निर्दोष है, मगर बेशक दोनों वयों से निर्दोष प्रेम व आत्मीयता पाई जा सकती है। बूढ़े व बच्चे सच्चे स्नेह से भरे होते हैं। प्राय: बाल अवस्था और वृद्धावस्था में एक स्वाभाविक अपेक्षा, चिड़चिड़ापन, ज़िद और अकेलापन होता ही है, जिसे एक प्यारभरी बात, नज़र, साथ और सम्मान देकर दूर किया जा सकता है।

इस कहानी का कथ्य संक्षिप्त और रोचक है। कथा में एक स्वाभाविक प्रवाह है। आरम्भ से अंत तक कहानी बांधे रखती है। बूढ़ी काकी का कोई नहीं है। उसका पति और बेटे मर गए हैं। वह एक सहारा पाने की खातिर अपने भतीजे बुद्धिराम को अपनी संपत्ति दे देती है। जब तक संपत्ति नहीं मिली थी, बुद्धिराम और उसकी पत्नी रूपा ने काकी के प्रति बड़ा अच्छा व्यवहार रखा। जायदाद मिलते ही उनकी आँखें फिर जाती हैं। वे उसकी उपेक्षा करते हैं। वह अच्छे व भरपेट खाने, अच्छे वस्त्र और स्नेह से वंचित कर दी जाती है। माँ-बाप के व्यवहार का अनुसरण करके उनके बेटे भी बूढ़ी काकी को परेशान करते हैं, मगर रूपा की बेटी लाडली ज़रूर काकी को प्यार करती थी, वह भाइयों से परेशान होकर काकी के पास छुप जाती थी। दादी को लाडली से मिठाई आदि में कुछ हिस्सा भी मिल जाता था।

रूपा के घर में बेटे का तिलक उत्सव था। इस अवसर पर घर में पकवान बन रहे थे, उनकी खुशबू बूढ़ी काकी को बेचैन कर रही थी। वह बाल- बुद्धिवश खाने के लिए लालायित हो जाती है, मगर मन में बहू रूपा का डर भी था। वह हिम्मत करके कड़ाही के पास जाकर बैठ जाती है और बनती हुई पुड़ियाँ देखने लगती है, बूढ़ी काकी को यूँ बैठे देखकर रूपा आग बबूला होकर उसे दुत्कारती है तो काकी अपने कमरे में चली जाती है। कुछ देर बाद वह यह सोचकर फिर बाहर आती है कि अब तो मेहमान खा चुके होंगे, मगर मेहमान अभी खा रहे थे, वह वहाँ बैठकर उन्हें देखने लगती है। इस पर बुद्धिराम क्रोध से भरकर उसे खींचकर अन्दर छोड़ आता है। उसके बाद वह चुपचाप अन्दर पड़ी रहती है। अन्दर से उसे लग रहा था कि उसे अंत में थाली परोसी ही जाएगी, मगर अँधेरा हो जाता है और कोई उसे

पूछने तक नहीं आता। दिन में यह सब देखकर लाडली ने बूढ़ी काकी के लिए चार-पाँच पुड़ियाँ छुपा कर रख ली थीं। रात को जब सभी सो गए तो अवसर पाकर लाडली ने जाकर यह पुड़ियाँ काकी को दीं, जिन्हें खाकर उसकी क्षुधा और जग गई। वह लाडली को साथ लेकर आँगन में वहाँ पहुँच जाती है, जहाँ जूठी पत्तलें पड़ी होती हैं। वह उन्हें देखती है और उसमें बचे व्यंजनों को बीनकर खाने लगती है। कुछ खटका सुनकर रूपा जाग जाती है। वह जैसे ही यह दृश्य देखती है, उसके पैरों तले ज़मीन नहीं रहती। उसके मन में धर्म-अधर्म, ईश्वर और पाप-पुण्य के विचार आते हैं, वह डर, करुणा और प्रायश्चित भाव से भर जाती है।

बूढ़ी काकी का कूड़े की पत्तलों से खाना खाने और रूपा के मन की अवस्था को प्रेमचंद बड़ी सूक्ष्मता से उकेरेते हैं। वे लिखते हैं- "किसी गाय की गर्दन पर छूरी चलते देखकर जो अवस्था उसकी होती, वही उस समय हुई। एक ब्राह्मणी दूसरों की जूठी पत्तल टटोले, इससे अधिक शोकमय दृश्य असंभव था। पुड़ियों के कुछ ग्रासों के लिए विपत्ति आने वाली है।" आगे प्रेमचंद कहते हैं- "रूपा को क्रोध न आया। शोक के सम्मुख क्रोध कहाँ? करुणा और भय से उसकी आँखें भर आयीं। इस अधर्म के पाप का भागी कौन है? उसने सच्चे हृदय से गगनमंडल की ओर हाथ उठाकर कहा- परमात्मा, मेरे बच्चों पर दया करो। इस धर्म का दंड मुझे दो, नहीं तो मेरा सत्यानाश हो जाएगा।" यहाँ सवाल है कि क्या रूपा का हृदय स्वाभाविक रूप से परिवर्तित हुआ या इसके पीछे कोई और कारण भी है? उपरोक्त उद्धरणों में परमात्मा, गाय, ब्राह्मणी, अधर्म, पाप आदि शब्दों का सचेत पाठ होना चाहिए। दरअसल प्रेमचंद हमारे समाज की सही नब्ज़ पकड़ते हैं। यहाँ वे बड़ी सूक्ष्मता से ईश्वर, धर्म व जाति के लिए लोक में व्याप्त मनोस्थिति को उकेरेते हैं। इस कहानी का परिवेश अति प्रामाणिक व पात्र अति जीवंत हैं। भाषा शैली बहुत प्रभावित करती है। संवाद एक आत्मीयता व करुणा पैदा करते हैं। आलोच्य कहानी में बूढ़ी काकी के चरित्र-अंकन के साथ-साथ हमारे समाज का बड़े-बूढ़ों के प्रति व्यवहार भी दर्शाया गया है। समाज में अगर अनाथ आश्रम और आम घरों में बूढ़ों

की स्थिति देखें तो 'बूढ़ी काकी' अपवाद की कहानी नहीं है। समाज के बड़े हिस्से के सच को दर्शाती यह कहानी आज भी प्रासंगिक है।

००

अभ्यास प्रश्न-

१- पंच-परमेश्वर की आलोचनात्मक समीक्षा करें।

२- पंच-परमेश्वर का उद्येश्य लिखें।

३- प्रेमचंद के आदर्शवाद पर टिप्पणी लिखें।

४- जुम्मन का चरित्र-अंकन करें।

५- बूढ़ी काकी की आलोचनात्मक समीक्षा करें।

६- बूढ़ी काकी का सार लिखें।

७- रूपा का चरित्र चित्रण करें।

स्नातक सत्र-5,UHILTE-503

(कथाकार प्रेमचंद) **कमल जीत; सहायक प्राध्यापक (हिन्दी),**

इकाई चार **उच्च शिक्षा विभाग, जम्मू-कश्मीर**

पाठ का उद्येश्य- 'कथाकार प्रेमचंद' शीर्षक के इस कोर्स को पढ़ते हुए हम हिन्दी साहित्य के महान लेखक प्रेमचंद के लेखन और हिन्दी के समृद्ध कथा साहित्य से परिचित हो सकते हैं। निर्धारित पाठ्यक्रम के बहाने हम भारतीय मानस की महानता व दुर्बलता को प्रामाणिक रूप से जान सकते हैं, उस पर संवाद कर सकते हैं। यह हमारी पात्रता पर निर्भर करता है कि प्रेमचंद जी को पढ़ते हुए हम कितना अर्जित कर पाते हैं। 'गबन' और निर्धारित कहानियों से हम अपनी सीमाओं का अतिक्रमण करके उदात्त जीवन-मूल्यों की ओर प्रेरित हो सकते हैं। तीन इकाइयों से आगे हम चौथी इकाई की दो कहानियों पर बात करेंगे। इन कहानियों के कथ्य, उद्येश्य, प्रासंगिकता, समस्या, चरित्र-अंकन को प्राथमिकता से उकेरेंगे। इस सामाग्री का उद्येश्य नोट्स उपलब्ध करवाना नहीं है बल्कि विद्यार्थियों को पाठ के लिए प्रेरित करना है। यहाँ बाज़ारी किताबों से परे कुछ समीक्षात्मक बात होगी। यहाँ दृष्टि प्रमुख रहेगी और कम में अधिक कहने का विनम्र प्रयास भी रहेगा।

३- शतरंज के खिलाड़ी-

कथ्य/समस्या/चरित्रांकन/उद्येश्य/प्रासंगिकता/समीक्षा-

विश्व कथा-साहित्य में प्रेमचंद की एक अलग पहचान है। इनके साहित्य में स्वतन्त्रता पूर्व भारत व पश्चात की प्रामाणिक तस्वीर देखी जा सकती है। इन्हें भारतीय ग्रामीण जीवन का लेखक भी कहा जाता है। इनके ही शब्दों को लेकर कहें तो वे बिगाड़ के डर से ईमान की बात कहने से कहीं नहीं चूकते। इनकी कहानियाँ

और उपन्यास तत्कालीन व समकाल की विद्रूपताओं, समस्याओं और सपनों को बयान करती हैं। हिन्दी कहानी के इतिहास में 'शतरंज के खिलाड़ी' एक सशक्त कहानी है। प्रेमचंद जी की यह कहानी आज भी प्रासंगिक है। मिर्ज़ा सज्जाद अली और मीर रोशन अली के माध्यम से यह कहानी हमारे समाज के कर्तव्यच्युत होने को दर्शाती है। शासकों से लेकर ज़्यादातर समर्थ व आम नागरिक किसी न किसी विलास या स्वार्थ में डूबकर आँखें बंद किए हुए हैं। ग़रीबी, बेरोज़गारी और अशिक्षा व्याप्त है, मगर सत्ता और जनता का एक बड़ा हिस्सा मिर्ज़ा व मीर के चरित्र को जी रहा है। मिर्ज़ा व मीर जागीरदार हैं, वे सामंतीय मानसिकता के प्रतिनिधि पात्र हैं। वे दिनभर शतरंज खेलते रहते हैं। घर-बाहर के लोग उनके इस खेल से परेशान हैं। अपने घरों से झिड़के जाने पर वे दूर एक वीरानी मस्जिद में अड्डा बना लेते हैं। वहाँ भी वे नियमित सुबह से शाम तक खेलते रहते हैं। इस बीच देश अंगेज़ों की बेड़ियों में पूरी तरह जकड़ गया, पर मीर और मिर्ज़ा जैसे लोग उनके बढ़ते वर्चस्व से बेखबर बने रहते हैं, समाज के पतन से भी उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। अंतत: अपने राजा को बंदी बना लेने और राज्य की हार से भी वे विचलित नहीं होते, वे मूक दर्शक बनकर सबकुछ हारता हुआ देखते रहते हैं। मगर शतरंज के राजा-रानी और झूठी शान के लिए एक दूसरे से भिड़ जाते हैं और एक दूसरे द्वारा कत्ल कर दिए जाते हैं। इस कहानी को पढ़ते हुए हिन्दी की एक और महत्वपूर्ण कहानी 'मुगलों ने सल्तनत बख्श दी' भी याद आती है। उसमें भी चुपचाप देश को अंग्रेज़ों का गुलाम होते जाना दर्शाया गया है।

आज भी ज़्यादातर लोग अपनी-अपनी शतरंज बिछाए बैठे हैं। उन्हें दीन व दुनिया की कोई खबर नहीं। वे अपने-अपने मोहरे बचाने में लगे हैं, किसी विशेष दल/मठ/समुदाय/जाति/धर्म/प्रांत/भाषा के लिए तो यह लोग लड़ते हैं, मगर समग्र

देश-समाज और दुनिया के लिए इनके पास कोई सामूहिक सपना नहीं है। वे अपने दायित्वों से एकदम विमुख रहते हैं। समाज की सही नब्ज़ पकड़ने, ज्वलंत समस्या दर्शाने और अपने मौलिक कहन व जीवंत परिवेश के कारण इस कहानी को साहित्य, रंगमंच व सिनेमा की दुनिया में भी खूब सफलता मिली। इस कहानी का परिवेश और पात्र अति प्रामाणिक है। प्रेमचंद जब लिखते हैं- "मुहल्ले में जो भी दो चार पुराने जमाने के लोग थे, आपस में भाँति-भाँति की अमंगल कल्पनाएँ करने लगे---अब खैरियत नहीं। जब हमारे रईसों का यह हाल है, तो मुल्क का खुदा ही हाफिज है। यह बादशाहत शतरंज के हाथों तबाह होगी। आसार बुरे हैं।" तो स्पष्ट है कि यह केवल मात्र उस समय का ही सच नहीं था। यह समकाल का भी यथार्थ है।

'शतरंज के खिलाड़ी' 1924 में लिखी गई थी। यह वाजिद अली शाह के समय को आधार बनाकर लिखी गई है यानी यह एक ऐतिहासिक कहानी है। कहानी का कथ्य वाजिद अली शाह के राज्यच्युत होने और उनके दरबारियों, जागीरदारों समेत आम आदमी के विलासिता व स्वार्थ में डूबे रहने पर आधारित है। अंग्रेज़ों ने 1856 में अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह को बंदी बनाकर कलकत्ता भेज दिया और लखनऊ को अपने अधीन कर लिया। इस पर कोई प्रतिक्रिया या विरोध नहीं हुआ। प्रेमचंद जी ने इस कहानी में बड़ी कलात्मकता से हमारे समाज के कर्तव्यच्युत होने को दर्शाया है। इसी अकर्मठता और अदूरदर्शिता के कारण हम गुलाम हुए। प्रेमचंद ने कहानी के आरम्भ में लखनऊ की विलासिता का वर्णन किया है। वे लिखते हैं-

"राजकर्मचारी विषय वासना में, कविगण प्रेम और विरह के वर्णन में, कारीगर कलावत और चिकन बनाने में, व्यवसायी सुरमे, इत्र, मिस्सी और उबटन का रोज़गार करने में लिप्त थे। सभी की आँखों में विलासिता का नशा छाया हुआ था। संसार में क्या हो रहा है, इसकी किसी को खबर न थी।" वे आगे लिखते हैं- "शतरंज, ताश, गंजीफ़ा खेलने से बुद्धि तीव्र होती है, विचार शक्ति का विकास होता है, पेचीदा मसलों को सुलझाने की आदत पड़ती है। ये दलीलें ज़ोरों के साथ पेश की जाती थीं।"

उपरोक्त उद्धरण प्रेमचंद की कल्पना मात्र नहीं है बल्कि ऐतिहासिक प्रमाणों से सिद्ध तथ्य हैं। कहानी के दूसरे भाग में अराजकता का चित्रण है। अंग्रेजों ने इसी विलासिता और अराजकता की आड़ में लखनऊ को अपने अधीन ले लिया। सरल व प्रभावी भाषा शैली में प्रेमचंद की दृष्टि और भाव देखें-

"आज तक किसी स्वाधीन देश के राजा की पराजय इतनी शांति से, इस तरह खून बहे बिना न हुई होगी। यह वह अहिंसा न होगी, जिस पर देवगण प्रसन्न होते हैं। यह वह कायरपन था, जिस पर बड़े-बड़े कायर भी आँसू बहाते हैं। अवध के विशाल देश का नवाब बंदी चला जाता था और लखनऊ ऐश की नींद में मस्त था। यह राजनीतिक अध:पतन की चरमसीमा थी।"

उपरोक्त उद्धरण में हमारे देशकाल व परिवेश का यथार्थ चरित्र-अंकन देखा जा सकता है। लेखक ने इन पंक्तियों के माध्यम से हमारे तत्कालीन समाज की प्रतिनिधि मानसिकता को दर्शाया है। यहाँ एक पीड़ा भी देखी जा सकती है। यह अध:पतन की स्थिति या समस्या आज भी किसी न किसी रूप में बनी हुई है। आम आदमी व्यवस्था से चुपचाप हारता जा रहा है। यह सबकुछ का स्वीकार अति भयावह और घातक है। इस कहानी को पढ़ते, सुनते और देखते हुए हमें समाज का

मूल्यांकन और आत्ममंथन करना चाहिए। समस्या पकड़ में आए तो समाधान निकल ही आता है। प्रेमचंद ने इस कहानी में समस्या को सही ढंग से पकड़ा है। यह समस्या आज भी किसी न किसी रूप में व्याप्त है। वर्तमान में भी हम स्वार्थ में डूबे हैं। जहाँ विरोध करना होता है वहाँ हम चुप रहते हैं। हम अपने मकान, वाहन, सुख सुविधाओं तक सीमित हैं। प्रेमचंद के शब्दों में कहें तो समाज में व्यक्तिगत वीरता का अभाव नहीं है। जैसे अंग्रेज़ों ने राजनीतिक अराजकता फैलाकर अपना साम्राज्य कायम किया, लोग एक दूसरे को शत्रु समझते रहे, स्वार्थ में डूबे रहे या फिर पलायनवादी हो गए। स्थिति आज भी बहुत बदली नहीं है, दुनियाभर में विभिन्न सताएँ अलग-अलग बहानों (जैसे किसी काल्पनिक शत्रु का भय दिखाकर, उन्माद फैलाकर उसे ठीक करने का वादा करके आदि) से किसी वर्ग/वर्ण/रंग/समुदाय/धर्म/देश/महाद्वीप को अपने हितों के लिए साध रही हैं, हमें एक दूसरे के विरोध में खड़ा कर रही हैं, आर्थिक दोहन करके आम जन को अपने अधीन कर रही हैं। और हम नए अर्थों में मिर्ज़ा और मीर के चरित्र को जी रहे हैं। स्पष्टत: नई समस्याओं के संदर्भ में भी यह एक बड़े फलक की कहानी है।

००

४- सद्गति-

कथ्य/समस्या/चरित्रांकन/उद्येश्य/प्रासंगिकता/समीक्षा-

हिन्दी कहानी के इतिहास में 'सद्गति' अति चर्चित व ज़रूरी कहानी है। यह एक हृदयविदारक कहानी है। यह धार्मिक पाखंड, कर्मकांडी पुरोहितों की घिनौनी मानसिकता और दलित शोषण को दर्शाती है। इस कहानी के लेखक प्रेमचंद हैं, वे दलितों के शोषण का मूल कारण वर्ण व्यवस्था का स्वीकार व मानसिकता को मानते हैं। अनेक धार्मिक व सामाजिक संस्कार/मान्यताएँ रूढ़ियों और पाखंड में तब्दील कर दी गईं। प्रेमचंद धर्म, जाति, पूंजी और राजनीति के सम्बन्धों को अच्छी तरह से जानते थे। उनके साहित्य में हमारे समाज की विद्रूपताओं, समस्याओं, अंधविश्वासों, दुर्बलताओं, विसंगतियों का प्रामाणिक चित्रण हुआ है। जहाँ तक सद्गति का सवाल है तो यह कहानी भी एक यथार्थ व समस्यापरक कहानी है। यह दलित की नाबालिग बेटी के विवाह (मुहूर्त) संस्कार से शुरू होकर दलित के अंतिम संस्कार के सवाल पर आकर ब्राह्मणवादी शोषकों की पोल खोलती है। इस कहानी को अनेक मंचों से खेला गया है, 1981 में इस पर सत्यजीत रे ने इसी नाम से एक गज़ब फिल्म बनाई थी।

प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से जातिवाद, अस्पर्श्यता, रूढ़ियों, सामाजिक कर्मकांडों, लोक-व्यवहार के नियमों से बंधे दलितों और सदियों से चलते आ रहे

धार्मिक पाखंड पर ज़ोरदार चोट करते हैं। यह शोषण पर लिखी गई मारक व संवेदनशील कहानी है। इसका कथ्य दुखी नाम के एक ग़रीब दलित, उसकी पत्नी झुरिया, पण्डित घासीराम, उसकी पत्नी और चिखुरी गोंड के इर्द-गिर्द घूमता है। इसका कथ्य, परिवेश, चरित्र और भाषा शोषक की निर्ममता को बड़ी सूक्ष्मता से सामने लाते हैं। दुखी अपनी बेटी की शादी की साइत (मुहूर्त) विचरवाने को लेकर पण्डित घासीराम को आमंत्रित करने के लिए जाता है। घर से निकलने से पहले दुखी और उसकी पत्नी झुरिया के बीच हुए संवाद से जो परिवेश सामने आता है, वह स्पष्ट कर देता है कि दलितों का हमारे समाज में क्या स्थान है। उन्हें तथाकथित ऊँची जाति वाले अपने दरवाज़े पर बैठने तक नहीं देते। सवर्णों के बीच में दलित अधिक सचेत होकर, उनकी अधीनता और अपनी हेयता स्वीकार करते हुए रहते हैं। वे ब्राह्मण की महिमा से अभिभूत भी हैं, जैसे दुखी को इस बात का विश्वास व डर है कि सबके रुपये मारे जाते हैं, बाभन के रुपये भला कोई मार तो ले। घरभर का सत्यानाश हो जाए, पाँव गल- गलकर गिरने लगे। दुखी अपनी पत्नी को पण्डित घासीराम के स्वागत की तैयारी के लिए कुछ सुझाव व निर्देश देते हैं, जैसे पण्डित को दान देने वाले सीधा (अनाज) को छूना मत, महुए के पत्तों का आसान बना देना आदि। स्वयं भी वह खाली हाथ न जाकर पण्डित की गाय के लिए घास का एक गट्ठर लेकर जाना ठीक समझता है। इनके वंशज आज भी कचरा-मैला ढोने वाली व्यवस्था के शिकार हैं।

घासीराम का चरित्र-चित्रण करते हुए प्रेमचंद जी लिखते हैं- "प० घासीराम ईश्वर के परम भक्त थे। नींद खुलते ही इशोपासन में लग जाते। मुँह-हाथ धोते आठ बजते, तब असली पूजा शुरू होती, जिसका पहला भाग भंग की तैयारी थी। उसके बाद आधा घंटे चन्दन रगड़ने, फिर आईने के सामने एक तिनके से माथे पर तिलक

लगाते। चन्दन की दो रेखाओं के बीच में लाल रोरी की बिंदी होती थी। फिर छाती पर, बाहों पर चंदन की।" कहानी जैसे-जैसे आगे बढ़ती है, पण्डित की पाखंडी और स्वार्थी मानसिकता और दलितों के प्रति उसका व्यवहार एकदम खुलकर सामने आता है। उसकी दिनचर्या और संवाद उसे एक शोषक सिद्ध करते हैं। वह दुखी के आमंत्रण के बदले उससे सुबह से बाद दोपहर तक डट के बेगारी करवाता है। यह बेगारी उसकी फीस नहीं है, वह तो 'सीधे' के रूप में मिलनी तय है।

बुखार होने पर भी दुखी भूखे पेट पण्डित का आँगन साफ करता है, बैठक लीपता है, भूसा ढोता है और मोटी गांठ वाली लकड़ी को फाड़ने का काम करता है। अंत में लोहे सी लकड़ी फट तो जाती है मगर दुखी मर जाता है। इस दारुण जीवन व हृदयविदारक शोषण को देखकर किसी भी संवेदनशील पाठक का कलेजा फट जाता है। इस एक दिन की कहानी में शोषण, व्यथा और करुणा का इतिहास दिख जाता है। चिलम पीने के लिए जब वह आग माँगता है तो उसे पंडिताइन से घोर घृणाभरी दुत्कार मिलती है। प्रेमचंद लिखते हैं- 'पंडिताइन ने भवें चढ़ाकर कहा, 'तुम्हें तो जैसे पोथी पत्रों के फेर में धरम-करम किसी बात की सुधि ही नहीं रही। चमार हो, धोबी हो, पासी हो, मुँह उठाए घर में चला आए। हिन्दू का घर न हुआ, कोई सराय हुई। कह दो दाढ़ीजार में चला आए, नहीं तो इस लुआठे से मुँह झुलस दूँगी। आग माँगने चले हैं।' यहाँ देखने वाली बात है कि स्वयं पितृसत्ता से शोषित स्त्री क्यों वर्ण की श्रेष्ठताबोध से भरी है। इसका अलग से अध्ययन किया जा सकता है।

दुखी घास छीलकर अपना गुज़ारा करने वाला एक ग़रीब दलित है। उससे सख़्त गाँठ फाड़ी या काटी नहीं जा रही। उसके पास एक मामूली कुल्हाड़ी है, जिससे वह उस पर वार कर रहा है। दरअसल यह गाँठ रूढ़िवादी समाज की गाँठ है। दुखी की कुल्हाड़ी व वार उसकी सामर्थ्य व दिशा को दर्शाते हैं। उसे लोक में प्रचलित धर्म निर्देशों व सभी अच्छे-बुरे संस्कारों को ढोना ज़रूरी लगता है। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में ऐसे शोषित पात्रों का सृजन किया है जो मरजादा, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, भाग्य, पूर्वजन्म, पुनर्जन्म आदि पर विश्वास करते हैं, दरअसल वे लोक में व्याप्त समस्याओं, दुर्बलताओं, विसंगतियों को यथार्थपरक ढंग से चरित्रांकित करते हैं। दुखी जैसे शोषितों को लगता है कि मुहूर्त विचारे बिना कोई अपशुकन हो जाएगा। शोषित समाज में वैज्ञानिक चेतना नहीं है, वह पोथी ग्रन्थों में लिखी बातों को डर, अंधविश्वास और चमत्कार की अपेक्षाओं के कारण मानता चला जाता है। शोषण का यह जाल तब तक नहीं काटा जा सकता जब तक दलित समाज ब्राह्मणवादी रीति-रिवाजों को मान्यता देता चलेगा। 'दुखी' शोषण के कारण मरता है। वह हिम्मत करता तो मरने से बच सकता था।

चिखुरी गोंड नामक एक पात्र दुखी को सचेत करता है, वह पण्डित के व्यवहार को अत्याचार बताता है। वह इस कहानी के परिवेश को और अधिक प्रामाणिक व जीवंत करता है। वह प्रेमचंद की दृष्टि और उद्येश्य का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय समाज में ऐसे विद्रोही पात्र हमेशा रहे हैं। प्रतिरोध की संस्कृति भी हमारी परंपरा व पहचान है, चिखुरी में भविष्य का स्वर सुना जा सकता है। जैसे कथानक को परिणति तक पहुँचाने में उसका अवदान महत्वपूर्ण रहा वैसे ही समाज को बदलने में ऐसे विद्रोही पात्रों का योगदान है। पीड़ा व संघर्ष के बाद आज़ादी मिली, आज़ादी के बाद बहुजनों की स्थिति कुछ बदली। कल तक एक चिखुरी था, आज

दलित समाज के लिए अनेक चिखुरी खड़े हैं। तत्कालीन समय में जितना चिखुरी कर सका, वह हिम्मत की बात थी। वह दुखी के मर जाने पर उनके मोहल्ले व घरवालों के साथ खड़ा होता है। वह पण्डित के घर से दुखी की लाश न उठाने और इस हत्या को पुलिस के संज्ञान में लाने की बता करता है। लाश न उठाने और वहाँ आकर दलित औरतों के रातभर रोने से पण्डित और उसके टोले में हाहाकार मच जाता है। औरतें थक हार कर वापस चली जाती हैं, और लाश वही रहने दी जाती है। अंत में मजबूरी और घृणा से पण्डित घासीराम दुखी के पैर में फंदा फंसाकर, उसे घसीटते हुए गाँव के बाहर चील, कौओं, गिद्धों और कुत्तों के लिए छोड़ देता है। प्रेमचंद अंत में लिखते हैं- "यही जीवन-पर्यंत की भक्ति, सेवा और निष्ठा का पुरस्कार था।" कहानी यही खत्म होती है और सवाल यही से शुरू होते हैं। क्या यह सद्गति थी? यह हृदयविदारक जीवन का अंत था। सेवा और निष्ठा का फल यही होना चाहिए था? जीवितावस्था में जिसे भरपेट खाना व श्रम का थोड़ा सा सम्मान भी न मिला, मरने के बाद उसकी 'सद्गति' हो सकती थी? कहानी में दुखी का अंतिम संस्कार न दिखाकर प्रेमचंद ने मृत्यु के बाद मनुष्य को मिलने वाली 'सद्गति' को ठुकरा दिया है। प्रेमचंद का यह विद्रोह 'कफन' नामक कहानी में भी देखा जा सकता है।

प्रेमचंद अपनी कहानियों के शीर्षक और पात्रों के नाम से भी एक प्रामाणिक कथाकार साबित होते हैं। उनके पात्र हमारे इर्द-गिर्द घटित होते चरित्र हैं। आलोच्य कहानी में दुखी, झुरिया, चिखुरी, घासीराम जैसे नाम उद्येश्य सिद्ध करते हैं, परिवेश को अधिक जीवंत व प्रामाणिक बनाते हैं। यह कहानी एक वर्ण के प्रति पूर्वग्रहों को भी दर्शाती है। प्रेमचंद की भाषा सरल, प्रभावी, प्रवाहपूर्ण व पात्रानुकूल है। दुखी और घासीराम के संवाद अपने-अपने वर्ग का सटीक प्रतिनिधित्व करते हैं।

संवादों से चरित्र खुलते जाते हैं। प्रेमचंद कहीं भी कहानी के पात्रों और उनके संवादों में अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करते। सच तो यह है कि कथ्य, परिवेश आदि तत्व स्वाभाविक रूप से विस्तार पाते हैं। यह कहानी केवल मात्र तत्कालीन समय का ही सत्य नहीं है बल्कि समकालीन परिदृश्य का भी यथार्थ है।

००

अभ्यास प्रश्न-

१- 'शतरंज के खिलाड़ी' की तात्विक विवेचना करें।

२- 'शतरंज के खिलाड़ी' का उद्येश्य स्पष्ट करें।

३- 'शतरंज के खिलाड़ी' की प्रासंगिकता पर चर्चा करें।

४- "व्यक्तिगत वीरता का अभाव नहीं था" का भाव स्पष्ट करें।

५- 'सद्गति' का सारांश लिखें।

६- 'चिखुरी गोंड' का चरित्र अंकन करें।

७- 'सद्गति' में वर्णित शोषण पर एक टिप्पणी लिखें।

८- 'सद्गति' की समीक्षा लिखें।

स्नातक सत्र-5,UHILTE-503
(कथाकार प्रेमचंद) **कमल जीत; सहायक प्राध्यापक (हिन्दी),**
इकाई पाँच **उच्च शिक्षा विभाग, जम्मू-कश्मीर**

पाठ का उद्येश्य- 'कथाकार प्रेमचंद' शीर्षक के इस कोर्स को पढ़ते हुए हम हिन्दी साहित्य के महान लेखक प्रेमचंद के व्यक्तित्व और हिन्दी के समृद्ध कथा साहित्य से परिचित हो सकते हैं। निर्धारित पाठ्यक्रम के बहाने हम भारतीय मानस की महानता व दुर्बलता को प्रामाणिक रूप से जान सकते हैं, उस पर संवाद कर सकते हैं। यह हमारी पात्रता पर निर्भर करता है कि प्रेमचंद जी को पढ़ते हुए हम कितना अर्जित कर पाते हैं। 'गबन' और निर्धारित कहानियों से हम अपनी सीमाओं का अतिक्रमण करके उदात्त जीवन-मूल्यों की ओर प्रेरित हो सकते हैं। चार इकाइयों से आगे हम यहाँ अंतिम इकाई की दो कहानियों पर संक्षिप्त परन्तु सार्थक बात करेंगे। इन कहानियों के कथ्य, उद्येश्य, प्रासंगिकता, समस्या, चरित्र-अंकन को प्राथमिकता से उकेरेंगे। इस सामाग्री का उद्येश्य नोट्स उपलब्ध करवाना नहीं है बल्कि विद्यार्थियों को पाठ के लिए प्रेरित करना है। यहाँ बाज़ारी किताबों से परे कुछ समीक्षात्मक बात होगी। यहाँ दृष्टि प्रमुख रहेगी और कम में अधिक कहने का विनम्र प्रयास भी रहेगा।

५- दो बैलों की कथा-

कथ्य/समस्या/चरित्रांकन/उद्येश्य/प्रासंगिकता/समीक्षा-

पृथ्वी सब जीवों की है। नियति ने मानव को अपने संरक्षक के रूप में चुना है। उसे समझना चाहिए कि उसके अधिकार कम और उसके दायित्व अधिक हैं। मगर हम में से ज़्यादातर लोगों ने अपनी बुद्धि का दुरुपयोग अधिक किया, मानव सभ्यता व संस्कृति के मुँह पर कालिख पोतते हुए हमने जल, जंगल और ज़मीन का हद से अधिक दोहन किया, स्वार्थ व संवेदनहीनता से हमने मानव इतर जीवों के घर में सेंध लगाई। क्या यह पृथ्वी सिर्फ मनुष्य की है? नहीं, यह सबकी है। हमारा घर सिर्फ हमारा नहीं होता, यह चिड़िया, छिपकली, चींटी, कीट- पतंगों का भी होता है। इस मर्म को समझना चाहिए कि जीवन के पनघट पर हर घट का अधिकार है। यह सुन्दर है कि विश्व कथा-साहित्य में ऐसे लेखक/कवि रहे हैं, जिन्होंने मनुष्य इतर जीवों की संवेदनाओं पर ज़रूरी कलम चलाई। इस महत्वपूर्ण परम्परा में हिन्दी लेखकों का भी कुछ अवदान रहा है। प्रेमचंद द्वारा लिखित 'दो बैलों की कथा' इसी परम्परा की एक सुन्दर कहानी है। यह कहानी जानवरों के

मनोविज्ञान और स्नेहभाव को दर्शाती है। इस कहानी को आज़ादी के संघर्ष से जोड़कर भी देखा जा सकता है, दरअसल यह तत्कालीन परिवेश को विभिन्न अर्थों में खोलती हुई हमें उदात्त जीवन मूल्यों को आत्मसात करने का संदेश देती है।

हीरा और मोती बैलों की सुन्दर जोड़ी है। प्रेमचंद कहानी की शुरुआत में लिखते हैं- "झूरी के पास दो बैल थे- हीरा और मोती। देखने में सुन्दर, काम में चौकस, डील में ऊँचे...दोनों आमने-सामने या आसपास बैठे हुए एक दूसरे से मूक भाषा में विचार-विनिमय किया करते थे। एक-दूसरे को चाटकर सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे, विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से...जिस वक्त ये दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिए जाते और गर्दन हिला-हिलाकर चलते, उस समय हर एक की चेष्टा होती कि ज्यादा-से-ज्यादा बोझ मेरी ही गर्दन पर रहे।" यानी इस जोड़ी में दोस्ती की गहरी भावना है। पाठकों को उनकी परस्परता, आत्मीयता, संघर्षशीलता व स्निग्धता अभिभूत करती है। कहानी के नायक हीरा और मोती भारतीय किसान के आँगन, उसके प्रेम, उसकी सादगी और उसके खेतों की पहचान हैं। वे हमारे कृषक के जीवन-भावों का प्रामाणिक प्रतिनिधित्व करते हैं।

यह कहानी किसान और उसके बैलों का ही नहीं बल्कि हमारे लोक का भी चरित्र-अंकन करती है। प्रेमचंद अपने कहन से दिल जीत लेते हैं। 1931 में लिखी गई यह कहानी आज भी उतनी ही नई लगती है। आज जब क्रूर व्यवस्था द्वारा किसानी और बैल का सम्बन्ध खत्म किया जा रहा है, ऐसे में यह कहानी और भी ज़रूरी है। यह अपने परिवेश को बखूबी दर्शाती है। इसमें एक तरफ मानव व पशु प्रेम है, पशुओं का मनोविज्ञान है, अनाथ बच्ची का स्नेहभाव है तो दूसरी और विद्रोह, संघर्ष और आज़ादी की शाश्वत कथा है। यहाँ तत्कालीन शोषित समाज व राजनीतिक चेतना साफतौर पर देखी जा सकती है। आलोचक इसे स्वतन्त्रता संग्राम से जोड़कर यूँ ही नहीं देखते, सच तो यह है कि प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से आमजन को संघर्ष व सामूहिकता के लिए प्रेरित किया है।

इस कहानी का कथ्य उपरोक्त संदर्भित बैलों यानी हीरा और मोती के इर्द-गिर्द घूमता है। बैलों को उनका मालिक झूरी बहुत प्यार से रखे हुए है। बैल अपने घर में खूब खुश हैं। एक दिन 'झूरी' का साला 'गया' हीरा-मोती को काम करने के लिए अपने घर ले जाता है। बैल सोचते हैं कि हमें मालिक ने क्यों बेच दिया, हम कम खाकर अधिक मेहनत कर लेते परन्तु अपने घर में ही रह पाते। यहाँ प्रेमचंद ने उनकी मनोदशा का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। वे रास्ते में गया को परेशान करते हैं। नई जगह, नए लोग उन्हें नहीं भाते। इधर गया ने उनसे डटकर काम लेना शुरू किया, इस बीच दोनों में विद्रोह पनपता है। वे मुक्ति पाने और अपने घर जाने के लिए मचल जाते हैं। रात में अपनी ताकत व बुद्धि से वे गया के घर से भागने में सफल हो जाते हैं और अपने घर पहुँच जाते हैं। उनकी इस तरह घर वापसी को गाँवभर में सराहा जाता है। गाँव के लड़कों ने तालियाँ पीट-पीटकर उनका स्वागत किया, क्योंकि उनके लिए यह घटना अभूतपूर्व थी। उन्होंने दोनों बैलों को गुड़, रोटी, भूसी,

चोकर आदि खिलाकर उनका अभिनंदन किया। झूरी से उन्हें स्नेह मिलता है जबकि उसकी पत्नी से डांट और सुखी भूसी मिलती है। फिर भी वे खुश होते हैं। उनकी यह प्रसन्नता जल्दी ही दु:ख में बदल जाती है क्योंकि गया उन्हें फिर से ले जाता है। इस बार वह उन्हें मोटी-मोटी रस्सियों से बाँधता है। उनकी नांद में रूखा-सूखा डाल देता है। अपमानित व प्रताड़ित होने पर वे खाना न खाकर अनशन करते हैं। जानवरों के इस अनशन में तत्कालीन परिवेश की प्रामाणिकता को देखा जा सकता है। दूसरे दिन वे जानबूझ कर हठी बन जाते है, वे जोत के लिए पाँव ही नहीं हिलाते। गया उन्हें खूब मारता है तो मोती को क्रोध आ जाता है। वह भागता है और जुए और हल को तोड़ देता है। हीरा अपने साथी मोती को 'बैल-धर्म' समझाता है, उसे शांत रहने को कहता है।

इस तरह रोज़ उन्हें प्रताड़ित किया जाता है। उस घर में एक छोटी बच्ची है जिसकी माँ मर गई है और उसकी सौतेली माँ उसे मारती है। वह बच्ची हर रात चुपके से आकर दोनों बैलों को दुलारती है, स्नेह से दो रोटियाँ खिला जाती है। दरअसल प्रेमचंद यहाँ यह बताना चाहते हैं कि प्रतिकूलताओं व दारुण स्थितियों में भी कहीं न कहीं अच्छाई व आशा बनी ही रहती है, दो दु:खी आदमियों या समाजों में एक नाता होना चाहिए। दोनों बैलों में बच्ची के दु:ख की चर्चा होती है। इस संवाद में बच्ची के प्रति प्रेम और उसकी माँ के लिए क्रोध है। मोती कहता है- "तो मालकिन (बच्ची की माँ) को फेंक दूँ, वही तो इस लड़की को मारती है।" इस पर हीरा कहता है- "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।" यहाँ जानवरों में नैतिकता व उच्च मूल्य दिखाकर प्रेमचंद ने मानव-समाज को आईना दिखाया है। अंतत: उसी बच्ची की प्रेरणा व सहायता पाकर वह फिर से भाग जाते हैं। उन्हें रास्ते में एक सांड़ से भिड़ना पड़ता है। जिसे वे हिम्मत व सामूहिक ताकत से हरा देते हैं। दरअसल प्रेमचंद 'साँड़' में अंग्रेज़ी सत्ता को दिखा रहे थे। वे उसकी ताकत को आम भारतीयों की एकता व संघर्ष के सामने घुटने टेकते देख चुके थे। मोती उसे मार देने की बात करता है तो हीरा कहता है- "गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।" पूरी कहानी में आदर्श की स्थिति बनी रहती है। हीरा-मोती भारत की उस परम्परा का पालन करते हैं जिसमें निहत्थे पर हमला करना कायरता माना जाता है।

घर का रास्ता भटके हीरा और मोती किसी के खेत से मटर खाते हुए पकड़ लिए जाते हैं, उन्हें कांजीहौस में कैद कर लिया जाता है। कांजीहौस की दीवार तोड़ने के प्रयास में हीरा को खूब डंडे रसीद होते हैं। हीरा का यह कहकर- 'ज़ोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बंधन पड़ गए।' में मुक्ति और सफलता का मूल मंत्र है। अंतत: वे दोनों मिलकर दीवार तोड़ देते हैं और कैद में फंसे अन्य जानवरों को आज़ाद करवाने में कामयाब हो जाते हैं, परन्तु एक के मोटी रस्सी से बंधे होने के कारण दूसरा साथी भी वहाँ से भागता नहीं है। यह दोस्ती की मिसाल है। मोती अपने दोस्त हीरा को कहता है- "तुम मुझे इतना स्वार्थी समझते हो? हीरा हम और तुम इतने दिन एक साथ रहे हैं। आज विपत्ति में पड़ गए तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊँ।" इस पर हीरा उत्तर देता है कि बहुत मार पड़ेगी। मोती गर्व से कहता है- "इतना तो हो ही गया कि नौ दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो

आशीर्वाद देंगे।" यहाँ व्यक्त आत्मसंतुष्टि से बड़ा हासिल और क्या हो सकता है। यह जीवन अपने लिए ही तो नहीं है। दूसरों की सहायता करके या जान बचाकर हम सार्थक हो सकते हैं। इस गुण को हम हीरा-मोती के चरित्र में देख सकते हैं। जानवरों को आज़ाद करवाकर वे इसकी क़ीमत देते हैं। उन्हें खूब मारा जाता है, भूखे रखा जाता है और अंत में एक कसाई के हाथों बेच दिया जाता है। परन्तु अंत में वह अपने घर के रास्ते को पहचान कर कसाई से छूट भागते हैं, झूरी से पनाह पाते पाकर खुश हो जाते हैं। झूरी कसाई को हड़का देता है। बैलों को वापस घर में पाकर झूरी की पत्नी भी उनका माथा चूम लेती है।

दरअसल प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से पाठकों को नैतिक मूल्यों का संदेश देते हैं, अन्याय से लड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। वे यह भी बताते हैं कि किसी संघर्ष का कदापि यह अर्थ नहीं कि हिंसा की ही जाए। यह कहानी गांधी युग में लिखी गई है। इस कहानी पर गांधीवाद का प्रभाव देखा जा सकता है। कांजीहौस प्रसंग में सांकेतिक रूप से अंग्रेज़ों द्वारा झूठे केसों में फांस लिए गए निरीह भारतीयों का वर्णन है। यहाँ जेलों में की जाने वाली बदसलूकी को देखा जा सकता है। हीरा-मोती ने शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाई, इसकी क़ीमत भी चुकाई। उन्हें प्रताड़ित किया गया। क्रांतिकारियों के साथ भी ऐसा ही होता था। हीरा और मोती के स्वभाव में नरम व गरम दल का घोषणापत्र देखा जा सकता है, उनके चरित्र में दोनों दलों की विचारधारा का सुन्दर संयोजन देखा जा सकता है। इस कहानी में मित्र भाव, कृतज्ञता, सहनशक्ति, धैर्य, जिजीविषा, संघर्ष, आत्म व दूसरों का सम्मान, क्षमाशीलता, स्वामी-भक्ति जैसे जीवन के उदात्त मूल्य देखे जा सकते हैं।

००

६- गुल्ली डंडा-

कथ्य/समस्या/चरित्रांकन/उद्येश्य/प्रासंगिकता/समीक्षा-

'गुल्ली डंडा' दिल को छू लेने वाली एक महत्वपूर्ण कहानी है। 'गुल्ली डंडा' एक प्रसिद्ध ग्रामीण खेल है। खेलों के सन्दर्भ में यह भारतीय लोक की एक पहचान है। जो भी गाँव में पले-बड़े हैं, इस खेल के नियम व स्मृतियाँ यक़ीनन उनके हृदय में अंकित होंगी। इस कहानी को पढ़ते हुए पाठकों को अपने बचपन की चालाकियाँ, समर्पण, द्वंद, प्रतिद्वंद या दोस्ती के भाव याद आते हैं। खेल के बहाने किसी समाज के चरित्र का एक पक्ष जाना जा सकता है। खेलों की दुनिया में जहाँ खिलाड़ियों की स्पोर्ट्समैन शिप देखी जा सकती है तो वही हिंसा और तकरारें भी सामने आती हैं। विश्व साहित्य में कवियों-कथाकारों ने खेलों को आधार बनाकर पर्याप्त लिखा है।

यह कहानी प्रेमचंद के व्यापक फ़लक को दर्शाती है। उनसे शायद ही कोई विषय छूटा हो। उनके साहित्य में आम जन-जीवन से जुड़ी घटनाओं, समस्याओं, विद्रूपताओं आदि

का यथार्थ वर्णन मिलता है। 'गुल्ली डंडा' कहानी का कथ्य, संवाद, चरित्र और परिवेश अति प्रामाणिक हैं। यह कहानी अपवाद की कहानी नहीं है। अपने सुन्दर कहन से भी यह कहानी प्रभावित करती है। इसका मुख्य उद्येश्य खेल के बहाने दो अलग समाजों की मानसिकता और उनके बीच पनपने वाली दीवार को दर्शाना है। यहाँ दलित समाज के एक लड़के का कौशल, विनम्रता व सीमा भी देखी जा सकती है। इस कहानी को लड़कपन दिखाने और ग्रामीण खेलों को बढ़ावा देने के के रूप में भी पढ़ा जाता है। अपनी सीमाओं के बावजूद दो खिलाड़ियों का निर्दोष बचपन की स्मृतियों को सम्मान देना इस कहानी की एक अन्य उपलब्धि है।

यह कहानी निबन्ध की तरह शुरू होती है। प्रेमचंद भारतीय खेलों की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं- "हमारे अंग्रेज़ी दोस्त मानें या न मानें मैं तो यही कहूँगा कि गुल्ली-डंडा सब खेलों का राजा है। अब भी कभी लड़कों को गुल्ली-डंडा खेलते देखता हू, तो जी लोट-पोट हो जाता है कि इनके साथ जाकर खेलने लगूँ। न लान की ज़रूरत, न कोर्ट की, न नेट की, न थापी की। मजे से किसी पेड़ से एक टहनी काट ली, गुल्ली बना ली, और दो आदमी भी आ जाए, तो खेल शुरू हो गया।"

वे आगे लिखते हैं- "विलायती खेलों में सबसे बड़ा ऐब है कि उसके सामान महँगे होते हैं। जब तक कम-से-कम एक सैकड़ा न खर्च कीजिये, खिलाड़ियों में शुमार ही नहीं हो पाता। यहाँ गिल्ली-डंडा है कि बिना हर्र-फिटकरी के चोखा रंग देता है; पर हम अंग्रेज़ी चीज़ों के पीछे ऐसे दीवाने हो रहे हैं कि अपनी सभी चीजों से अरुचि हो गई। स्कूलों में हरेक लड़के से तीन-चार रुपये सालाना केवल खेलने की फीस ली जाती है।"

उपरोक्त उद्धरणों से सिद्ध होता है कि प्रेमचंद सिर्फ एक कथाकार ही नहीं बल्कि एक अच्छे चिंतक अथवा निबंधकर भी थे। यहाँ प्रेमचंद तत्कालीन भारत के उस परिवेश को सामने लाते हैं, जहाँ हम लोग भारतीय खेलों अथवा भारतीयता से दूर जा रहे हैं। यहाँ यह रेखांकित करना ज़रूरी है कि आज हम में से ज़्यादातर लोग परम्परागत खेलों से दूर जा चुके हैं। तत्कालीन समय में भी कुछ भारतीय क्रिकेट जैसे विदेशी खेल खेलते थे, जो आम आदमी की सामर्थ्य से बाहर थे। प्रेमचंद अपने देश के आम आदमी का ध्यान रखते हुए देशी खेल का समर्थन करते हैं। वे स्कूलों द्वारा काटे जाने वाली खेल-फीस के बहाने शिक्षा व्यवस्था को कटघरे में खड़ा करते हैं। आज स्थिति यह है कि भारत में हज़ारों प्ले-वे स्कूल होने के बावजूद भी हम शिक्षा और खेल का सम्बन्ध नहीं समझ सके हैं। 'खेलो और जीतो' संस्कृति ने खेल के मायने बदल दिए हैं। अब लड़कपन खेल के मैदानों के बजाय मोबाइल फोनों पर, क्लब, पब, रेस्तरां में दिखाई देता है। दूसरी बात यह कि अत्यधिक बेरोज़गारी और ग़रीबी के कारण आम भारतीय के पास खेलों के लिए समय ही नहीं है। जिस निम्न मध्यवर्ग, मध्यवर्ग व उच्च वर्ग के पास समय व सुविधा है, वे विदेशी खेलों में लिप्त हैं। इनमें

भी खेल के प्रति उच्च वर्ग की मानसिकता अलग है जबकि मध्यवर्ग के सपने दूसरे हैं। कुल जमा बात यह कि खेलों के अर्थ बदल दिए गए हैं। ट्वेंटी-ट्वेंटी और आई°पी°एल° के युग में 'गुल्ली डंडा' का मूल्यांकन अन्य संदर्भों में भी किया जा सकता है।

प्रेमचंद के विचारों के साथ शुरू हुई कहानी निर्दोष बचपन को उकेरेते हुए इंस्पेक्टर के बेटे और उसके दोस्त/प्रतिद्वंदी खिलाड़ी 'गया' का चरित्र- अंकन करती है। 'गया' एक दलित व ग़रीब लड़का है जो कहानी के दूसरे पात्र 'मैं' यानी इंस्पेक्टर के बेटे के साथ गुल्ली डंडा खेलता है। 'गया' ग़ज़ब खिलाड़ी है। मोहल्ले के सारे लड़के अपनी जीत निश्चित करने के लिए 'गया' का दौड़कर स्वागत करते हैं, अपना गोइयाँ बनाने के लिए तत्पर रहते हैं। उसका व्यक्तित्व प्रखरता, चपलता और अक्खड़ता से भरपूर है। एक दिन सिर्फ इंस्पेक्टर का बेटा और गया ही खेल रहे थे, गया जीत रहा था। वह 'मैं' से अपना दाँव लेते हुए उसे खूब पदा (डोगरी में इसे 'फा' कहते हैं) रहा था। 'मैं' के पदने की मानसिकता को दर्शाते हुए लेखक लिखता है- "वह पदा रहा था, मगर कुछ विचित्र बात है कि पदाने में हम दिन-भर मस्त रह सकते हैं; पदना एक मिनट का भी अखरता है। मैंने गला छुड़ाने के लिए सब चालें चलीं, जो ऐसे अवसर पर शास्त्र-विहित न होने पर भी क्षम्य हैं, लेकिन गया अपना दाँव लिए बगैर मेरा पिंड न छोड़ता था।" दरअसल वह उच्च वर्ग का भले है मगर खेलने में गया से कमज़ोर है। वह घर भागना चाहता है। 'गया' की बाल सुलभ ज़िद व ताकत के सामने विवश होकर वह कहता है-
'तुम दिन-भर पदाओ तो मैं दिन-भर पदता रहूँ?'
'हाँ, तुम्हें पदना ही पड़ेगा।'
न खाने जाऊँ, न पीने जाऊँ?'
'हाँ, मेरा दाँव दिए बिना कहीं नहीं जा सकते।'
'मैं तुम्हारा गुलाम हूँ?'
'हाँ, मेरे गुलाम हो।'...
'अच्छा, कल मैंने अमरूद खिलाया था। वह लौटा दो।'
'वह तो पेट में चला गया।'
'निकालो पेट से। तुमने क्यों खाया मेरा अमरूद?
'अमरूद तुमने दिया, तब मैंने खाया। मैं तुमसे माँगने न गया था।'
'जब तक मेरा अमरूद नहीं दोगे, मैं दाँव न दूँगा।'

वह अमरूद के बल पर न्याय को अपनी तरफ पाता है। वह समझता है कि जब 'गया' ने मुझसे अमरूद खाया है तो उसे दाँव लेने का क्या अधिकार है। इस अमरूद को सिर्फ बाल सुलभ तर्क-वितर्क तक सीमित करके देखना चूक होगी, दरअसल यह इंस्पेक्टर के बेटे (जो उच्च वर्ग से तो है ही, कदाचित सवर्ण भी है।) के रूप में उच्च वर्ग और सवर्ण बच्चों की कंडिशनिंग (अनुकूलन) अथवा मानसिकता की ओर भी संकेत है। जब एक बच्चा यह समझता है- "कौन नि:स्वार्थ किसी के साथ सलूक करता है। भिक्षा तक तो स्वार्थ

के लिए देते हैं। जब गया ने अमरूद खाया, तो फिर उसे मुझसे दाँव लेने का क्या अधिकार है? रिश्वत देकर तो लोग खून पचा जाते हैं, यह मेरा अमरूद यों ही हजम कर जाएगा? अमरूद पैसे के पाँचवाले थे, जो गया के बाप को भी नसीब न होंगे।", तो यह सिर्फ एक बच्चे का कथनभर नहीं है, यह हमें हमारे परिवेश का ठीक-ठीक पता देत बयान है। मगर दूसरा पक्ष यह कि 'गया' उसे जाने नहीं देना चाहता। उन दोनों में गाली-गलौज और कुछ हिंसा होती है। अंत में मुक़ाबला न कर सकने की स्थिति में इंस्पेक्टर का बेटा रोने लग जाता है, जिससे 'गया' उसे छोड़ देता है। इंस्पेक्टर का बेटा जब सोचता है- "मैं थानेदार का बेटा एक नीच जाति के लौंडे से पिट गया, यह मुझे उस समय भी अपमानजनक मालूम हुआ; लेकिन घर में किसी से शिकायत न की।", तो भी हमारे समाज की मानसिकता सामने आती है।

इस बीच इंस्पेक्टर का तबादला होने के कारण 'गया' का प्रतिद्वंदी उस कस्बे से चला जाता है। बीस साल बाद इंजीनियर बनकर वह उसी कस्बे में लौटता है। उसके मन में अपनी मिट्टी के प्रति प्यार उमड़ता है। बाल स्मृतियाँ जाग जाती हैं। अपनी उस दुनिया का बदला हुआ रूप देखकर वह दुखी होता है, उससे लिपटकर रोना चाहता है। यहाँ उसके चरित्र में एक सच्चा बच्चा झलकता है। तभी वह, वहाँ पर कुछ लड़कों को गुल्ली डंडा खेलते हुए देखता है, उसे भरसक 'गया' का ख्याल आता है। उसके बारे में यह जानकर वह खुश होता है कि वह अभी भी वही रहता है। वह उसे मिलकर खुश तो होता है पर कुछ सोचकर गले न लगकर यूँ ही उससे मिलता, बतियाता है। मगर 'गया' उसे पहचानकर झुककर सलाम करता है और अपने बारे में बताता है कि वह डिप्टी साहब का साईस है। तब इंस्पेक्टर का बेटा उसे बताता है कि वह तो इंजीनियर है। 'गया' की बातों में विनम्रता है। इंजीनियर द्वारा पूछने पर वह कहता है कि अब गुल्ली डंडा खेलने का समय ही कहाँ मिल पाता है। इस पर इंस्पेक्टर का बेटा उसके सामने गुल्ली डंडा खेलने का प्रस्ताव रखता है, और बचपन का दाँव देने की बात कहता है। 'गया' बड़ी मुश्किल से, कुछ झिझक के साथ खेलने के लिए मानता है। बस्ती से दूर जाकर वे खेल शुरू करते हैं। 'गया' में विशेष उत्साह नहीं दिखता। इंजीनियर ने 'गया' को खूब पदाया। वह हैरान था कि 'गया' गुल्ली डंडा खेलना भूल गया है, वह एकदम अनाड़ी लग रहा था। ऊपर से इंजीनियर अभ्यास की कमी को बेईमानी से पूरा कर रहा था, हुच जाने पर भी डंडा खेले जाता था, टांड़ लगाने आदि में चालाकी कर रहा था। वह तीन बार आउट होने को भी नहीं मानता। 'गया' चुपचाप यह सारी बे-कायदगियाँ स्वीकृत करता जाता है। इस तरह 'गया' को काफी देर तक पदाने के बाद वह उसे दाँव देता है। 'गया' जल्दी ही हुच गया और दाँव खो बैठा। इंजीनियर ने यही महसूस किया कि 'गया' में पहले जैसी फुर्ती व कुशलता नहीं बची। खेल खत्म करके 'गया' इंजीनियर को बताता है कि कल कस्बे में गुल्ली डंडा होगा, जिसमें सभी पुराने खिलाड़ी खेलेंगे। इंजीनियर दूसरे दिन मैच देखने आता है तो 'गया' का खेल देखकर दंग रह जाता है। यहीं से पाठक के मन में 'गया' के लिए अलग भाव उमड़ने लगते हैं। यहाँ 'गया' का चरित्र नायकत्व को प्राप्त होता है। आज तो गुल्ली

उसकी गुलामी करती प्रतीत हो रही थी। उसकी शारीरिक भाषा की मुखरता अलग छटा बिखेर रही थी। प्रतिद्वंदी उसके सामने पानी भर रहे थे। अब इंजीनियर को यह मालूम हो चुका था कि वास्तव में पिछले कल तो 'गया' मात्र उसे खेला रहा था, स्वयं तो खेल ही नहीं रहा था। कहानी का अंत इन शब्दों से होता है- "मैं अब अफसर हूँ। यह अफ़सरी मेरे और उसके बीच दीवार बन गई है। मैं अब उसका लिहाज पा सकता हूँ, आदाब पा सकता हूँ, साहचर्य नहीं पा सकता। लड़कपन था, तब मैं उसका समकक्ष था। यह पद पाकर अब मैं केवल उसकी दया योग्य हूँ। वह मुझे अपना जोड़ नहीं समझता। वह बड़ा हो गया है, मैं छोटा गया हूँ।" यहाँ आकर स्पष्ट होता है कि दोनों के बीच एक दीवार आ गई है।

इंजीनियर और 'गया' के चरित्र को देखें तो स्पष्ट होता है कि एक अमीर और दूसरा ग़रीब है, एक सरकारी उच्च अधिकारी और दूसरा साईस। एक सवर्ण (हालांकि कहानी में प्रेमचंद ने कहीं नहीं लिखा है कि इंजीनियर सवर्ण है, परन्तु उसकी मानसिकता व भाषा उसे सवर्ण सिद्ध कर रही है) तो दूसरा दलित। हालांकि इंजीनियर में चालाकी और खेल में जीतने की इच्छा भले प्रबल थी परन्तु वह घृणा या बदले की भावना नहीं रखता। अंत में तो वह स्वयं को छोटा और गया को बड़ा मानता है। 'गया' के चरित्र की उदात्तता पाठक को प्रभावित करती है। वह अपने खेल व चरित्र से हृदय जीत लेता है।

कहानी में चित्रित समस्या को आज भी देखा जा सकता है। अपने इर्द-गिर्द देखते हैं तो पाते हैं कि हम में से कितने ही लोग गया और इंजीनियर का चरित्र जी रहे हैं। बचपन में तो अमीर-ग़रीब, ताकतवर-कमज़ोर, दलित-सवर्ण, कुशल-अकुशल कोई मायने नहीं रखता मगर बड़ा होने पर हमें पता चलता है कि हमारे बीच कितनी दीवारें बना दी गई हैं, जिसे कोई फाँदना नहीं चाहता। समाज ने हमें जिस खांचे में रखा हम उसे स्वीकार कर लेते हैं। प्रेमचंद ने बड़ी सूक्ष्मता से अपने सरोकार व्यक्त किए हैं। वे समाज में व्याप्त बड़े-छोटे होने की औपचारिकताओं को दर्शाते हैं। हालांकि इस कहानी का कोई एक उद्येश्य नहीं है। इसका मुख्य उद्येश्य दो वर्गों और वर्णों की मानसिकता को भी दर्शाना है। यहाँ ग़रीब दलित समाज और समृद्ध सवर्ण समाज की मानसिकता को देखा जा सकता है, परन्तु यहाँ वर्ण से अधिक दो वर्गों की भावना अधिक देखी जानी चाहिए। इस कहानी को लड़कपन, ग्रामीण खेल की ठसक और खेल के मैदान में दो खिलाड़ियों के कौशल, नौसिखियापन, विनम्रता, चालाकी और ज़िद के लिए भी जाना जा सकता है। दूसरे शब्दों में इस कहानी को खेल के मैदान में निर्दोष बचपन और हैसियत (वर्ग) अनुसार जवान आदमियों की सीमा व सामर्थ्य दिखाने के लिए भी याद रखा जा सकता है।

००

अभ्यास प्रश्न-

१- मोती का चरित्र-अंकन करें।

२- 'दो बैलों की कथा' में आज़ादी का संघर्ष बताया गया है। कैसे?

३- 'दो बैलों की कथा' का उद्देश्य लिखें।

४- 'दो बैलों की कथा' कहानी की तात्विक समीक्षा करें।

५- 'गुल्ली डंडा' कहानी की तात्विक समीक्षा करें।

६- गया का चरित्र-अंकन करें।

७- 'गुल्ली डंडा' का उद्देश्य लिखें।

८- आप 'गुल्ली डंडा' कहानी का नायक किसे मानते हैं? क्यों?

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र1) लोक साहित्य की परिभाषा दीजिए।

प्र2) लोक–साहित्य के क्षेत्र पर प्रकाश डालिए।

प्र3) लोक साहित्य की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

प्र4) विभिन्न विद्वानों द्वारा लोक–साहित्य की परिभाषा स्पष्ट करें।

प्र5) लोक–कथा का अर्थ स्पष्ट करें।

प्र6) लोक–कथा की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

प्र7) लोक–कथा व पौराणिक कथा में क्या अंतर है?

प्र8) पौराणिक कथा की उत्पत्ति तथा विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

प्र9) विद्वानों द्वारा लोक कथा की परिभाषाओं को स्पष्ट करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ/पुस्तकें

1. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्ण देव उपाध्याय
2. लोक साहित्य सिद्धान्त और प्रयोग, डॉ. श्रीराम शर्म
3. भारत में लोक–साहित्य, डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय
4. लोक साहित्य के प्रतिमान, डॉ. कुन्दन लाल उप्रेती

Edit with WPS Office

बी.ए. सत्र पाँच

Course Code : UHILTE 504 Title : लोक साहित्य

Credit : 06

इकाई – 1 , 2

प्रो. शबीर अहमद

मौलाना आज़ाद महाविद्यालय, जम्मू

Edit with WPS Office

लोक–साहित्य की परिभाषाएँ और विशेषताएँ

समग्र रूप में 'लोक' शब्द का प्रयोग उस जन–समूह के लिए किया जाता है, जो साज–सज्जा, ऊपरी दिखावा, सभ्यता एवं शिक्षा आदि से दूर आदिम मनोवृत्तियों से युक्त होता है।

इस प्रकार वैदिक काल से लेकर अब तक 'लोक' शब्द का प्रयोग प्रायः समान अर्थों में अनवरत रूप में प्राप्त होता है। दृष्टव्य यह है कि 'लोक' शब्द का प्रयोग लोक–कल्याण अथवा लोक–संग्रह के संदर्भों में किया जाता है। 'लोक' शब्द का प्रयोग प्राचीन काल से हो रहा है। ऋग्वेद में 'लोक' शब्द जन के पर्यायवाची शब्द के रूप में प्रयुक्त हुआ है। पुरुष सूक्त में इसका अर्थ जीव तथा स्थान है। अथर्ववेद में इसका अभिप्राय पार्थिव और दिव्य दो लोकों से है। पाणिनी ने 'लोक' से वेद की सत्ता को अलग स्वीकार किा है। 'महाभारत' में 'लोक' शब्द का अर्थ साधारण जनता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत भी यही है। पुराणों में 'लोक' शब्द स्थान के पर्यायवाची रूप में प्रयुक्त हुआ है, इसी कारण से हिन्दी में 'लोग' शब्द बना जिसका अर्थ है– सामान्य जन। इसी अर्थ में 'लोक' शब्द साहित्य शब्द से पहले जुड़कर विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

भरत मुनि के नाट्य शास्त्र में भी 'लोक' शब्द का प्रयोग सटीक रूप में किया गया है। भरत मुनि के नाट्य शास्त्र में स्वयं लिखा है कि इस शास्त्र की रचना लोक मनोरंजनार्थ की जा रही है। वास्तव में 'लोक' शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द 'फोक' का ही हिंदी रूपांतर है।

Edit with WPS Office

अंग्रेजी के 'फोन' शब्द का प्रयोग अशिक्षित, अर्दशिक्षित, असभ्य, अर्द्धसभ्य वर्ग के लिए किया जाता है। अतः जो विद्वान व्यक्ति 'लोक' शब्द का प्रयोग सरल ग्रामीणों के लिए करते हैं, वपे सामान्य दृष्टिकोण से 'लोक' शब्द तथा ग्रामीणों दोनों के प्रति अन्यपाय करते हैं। अतः निष्कर्ष रूप में प्रसिद्ध साहित्य डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा दिए हुए 'लोक' के अर्थ को स्वीकार किया जा सकता है, यथा–

''लोक शद का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं है, बल्कि नगरों और ग्रामों में फैली हुई वह समूची जनता है, जिसके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहीं हैं।'' उसी तरह लोक साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान डॉ . कृष्णदेव उपाध्याय ने लोक का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि जो लोग संस्कृत या परिष्कृत वर्ग से प्रभावित न होकर अपनी पुरातन स्थितियों में ही रहते हैं, वे 'लोक' होते हैं।

हिन्दी के कुछ विद्वान 'जन' शब्द को 'लोक' शब्द के अर्थ में प्रयुक्त करते हैं। ये विद्वान 'लोक' और 'जन' को पर्यायवाची मानते हैं। अपने मत की पुष्टि में वे अन्यत्र दिए हुए एवं शब्द कोशों में उल्लेख किए हुए 'लोक' शब्द के विभिन्न अर्थों में 'जन' अर्थ को उद्धृत करते हैं। उदाहरणतः डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने 'जन' शब्द का प्रयोग ग्रम्य के अर्थ में किया है। डॉ. सत्येन्द्र ने 'लोक' शब्द को व्यापक तथा 'जन' शब्द को संकीर्णता का बोधक माना है।

विद्वानों और समीक्षकों की दृष्टि से डॉ. पाण्डेय 'लोक' शब्द के सतही अर्थ तक ही सीमित रह गए। यदि इस शब्द के अर्थ का गंभीरता

Edit with WPS Office

से विश्लेषण किया जाए तो हम देखेंगे कि 'लोक' शब्द समाज की सूक्ष्म स्थिति यानी उसके अमूर्त भाव का बोधक है, जबकि 'जन' शब्द अपने अर्थ में स्थूलता वाचक है और जनता शब्द के अधिक निकट है। अतः 'जन' शब्द को 'जनता' शब्द के साथ संबंधित किया जा सकता है। परंतु इस संदर्भ में यह तथ्य भी दृष्ट्व्य है कि 'जनपद' शब्द का प्रयोग हमारे प्राचीनतम ग्रंथों में उपलब्ध होता है और उसका प्रयोग बहुलतापूर्वक किया गया है। आदि ग्रंथ वाल्मीकि रामायण में रामराज्य के वर्णन में उसका प्रयोग 'जनपद' शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है। अतएव 'जन' शब्द की प्राचीनता और उसकी सार्थकता पर प्रश्न–चिह्न लगाने का कोई प्रश्न ही उत्पन्न नही होता है।

परवर्ती संस्कृति एवं पाली के साहित्यिक ग्रंथों में 'जन' शब्द का प्रयोग 'मानव समाज' के अर्थ में किया जाता है। आधुनिक राजनीतिक शब्दावली में 'जनता' के अर्थ में 'जन' शब्द प्रयुक्त किया गया है। इस दृष्टि से 'जन' और 'लोक' शब्द प्रायः समानार्थी ठहरते हैं। दोनों में अंतर केवल यही है कि 'जन' मूर्त स्वरूप है और 'लोक' अमूर्त स्वरूप है।

अतः इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि 'लोक' वस्तु अंग्रेजी भाषा के 'फोक' शब्द का हिन्दी रूपांतर समझा जा सकता है और लोक साहित्य के संदर्भ में 'लोक' शब्द का प्रयोग ही सब दृष्टियों से उपयुक्त एवं उचित है। आज लोक–साहित्य शब्द लोक प्रचलित एवं लोकमान्य हो गया है। लोक साहित्य को जन साहित्य कहना एक प्रकार से नये

Edit with WPS Office

विवाद एवं भान्ति को जन्म देता है।

लोक साहित्य का जन्म और विशेषताएँ :—

'साहित्य' शब्द के पूर्व 'लोक' अभिधान लगाने के बाद उसका अर्थ होगा— लोक का साहित्य। 'लोक' का अर्थ जनता—जनार्दन द्वारा लिया जाता है। इसीलिए लोक—साहित्य का बोध ऐसे साहित्य से होता है, जिसकी रचना जनता जनार्दन द्वारा की जाती हो। एक विशिष्ट व्यक्ति की रचना न होने का तात्पर्य यही हो सकता है कि जिस साहित्य की रचना एक जन—समूह द्वारा की जाती हो, उसे ही लोक—साहित्य कहा जाना चाहिए। जन—समूह की जो भावनाएं—हर्ष, विषाद, भय, प्रेम, शोक आदि होती हैं उनकी सामूहिक अभिव्यक्ति गीत, कथा आदि के रूप में हुई होगी। किसी एक ने एक पंक्ति की मौखिक रचना की होगी तो दूसरे ने उसमें एक और पंक्ति जोड़ दी, तीसरे ने तीसरी पंक्ति रचकर गीत को आगे बढ़ा दिया होगा। इसी प्रकार परवर्ती पीढ़ियों ने इस गीत में संशोधन, परिवर्तन किए होंगे और इस प्रकार अनेक लोगों के रचना—सहयोग से जो साहित्य प्रकाश में आया, वही 'लोक—साहित्य' की श्रेणी में आ गया है। यही कारण है कि लोक—साहित्य की विशेषताओं के रूप में निम्नलिखित बिंदुओं का उल्लेख किया जाता है—

1. लोक साहित्य मौखिक परंपरा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होता चला जाता है।

2. लोक—साहित्य की रचना अनेक रचनाकारों के योगदान द्वारा

Edit with WPS Office

अस्तित्व में आती है अर्थात् लोक–साहित्य लोक मानस द्वारा रचित होता है।

3. लोक के द्वारा लोक के लिए, लोक का साहित्य ही लोक–साहित्य कहलाता है।

4. लोक साहित्य सहज, सरल, अकृत्रिम होता है। वह स्वतः सपूर्ति होता है।

5. लोक–साहित्य का कोई शास्त्र नहीं होता अर्थात् उसकी रचना के मानदंड पूर्व निर्धारित नहीं होते। लोक–साहित्य शास्त्रों के नियमों, बंधनों को स्वीकार नहीं करता। इसका आशय यह है कि लोक–साहित्य पर किसी प्रकार के नियम या सिद्धांत प्रभावी नहीं होते। लोकगीतों की रचना के भी छंद, अलंकार आदि संबंधी कोई नियम नहीं होते।

6. लोक–साहित्य में आदिम सभ्यता, अर्द्धसभ्य या असभ्य लोगों या समाजों की भावनाओं, उनके असभ्य जीवन, रहन–सहन आदि का प्रभाव आवश्यक होता है।

7. लोक–साहित्य निश्चय ही किसी जनपदीय बोली के माध्यम से व्यक्त होता है।

8. लोक–साहित्य का कोई रचयिता नहीं माना जाता, इसे लोकमानस की कृति कहा जाता है।

Edit with WPS Office

लोक–साहित्य की परिभाषा :–

विद्वानों ने 'लोक–साहित्य' की परिभाषा अपने–अपने दृष्टिकोण से देने का प्रयास किया है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में– ''ऐसा मान लिया जा सकता है, जो चीजें लोकचित्त से सीधे उत्पन्न होकर सर्वसाधारण को आंदोलित, चालित और प्रभावित करती हैं, वे ही लोक–साहित्य, लोक–शिल्प, लोक–नाट्य, लोक–कथानक आदि नामों से पुकारी जा सकती हैं। परिभाषा में आए शब्द ''लोक चित्र' के सन्दर्भ में डॉ. द्विवेदी का कहना है कि 'लोक चित्र से तात्पर्य उस जनता के चित्र से है जो परम्परा–प्रथित और बौद्धिक–विवेचनापरक शास्त्रों और उन पर की गयी टीका–टिप्पणियों के साहित्य से अपरिचित होता है।''

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के मत में– ''वास्तव में लोक साहित्य वह मौखिक अभिव्यक्ति है, जो भले ही किसी व्यक्ति ने गढ़ी हो, पर आज जिसे सामान्य लोक–समूह अपना मानता हैं।''

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने सुप्रसिद्ध पाश्चात्य लोक–संस्कृति विशारदग्रिम के नाम का उल्लेख करते हुए जनता का जनता के लिए रचा गया, जन काव्य कहकर लोक–साहित्य की निम्न परिभाषा निर्धारित करने का प्रयास किया है– ''सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाली, अपनी सहजावस्था में वर्तमान जो निरक्षर जनता है, उसकी आशा–निराशा, हर्ष–विषाद, जीवन–मरण, लाभ–हानि, सुख–दुःख आदि की अभिव्यंजना जिस साहित्य में प्राप्त होती है, उसे लोक–साहित्य कहते हैं। इस

Edit with WPS Office

प्रकार लोक–साहित्य जनता का वह साहित्य है जो जनता द्वारा जनता के लिए लिखा गया हो। डॉ. सत्येन्द्र के अनुसार– ''लोक–साहित्य' के अन्तर्गत वह समस्त बोली या भाषागत अभिव्यक्ति आती है जिसमें (अ) आदिम मानस के अवशेष उपलब्ध हों, (आ) परम्परागत मौखिक क्रम से उपलब्ध बोली या भाषागत अभिव्यक्ति हो जिसे किसी की कृति न कहा जा सके, जिसे श्रुति ही माना जाता हो, और जो लोकमानस की प्रवृत्ति में समाई हुई हो। (इ) कृतित्म हो किन्तु वह लोक–मानस के सामान्य तत्वों से युक्त हो कि उसके किसी व्यक्तित्व के साथ सम्बनध रहते हुए भी, लोक उसे अपने ही व्यक्तित्व को कृति स्वीकार करे।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लोक–साहित्य, लोकमानस की सहज और मौखिक अभिव्यक्ति है जो परम्परा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती है। इसका रचियता अज्ञात होता है।

लोक–साहित्य का क्षेत्र :–

लोक साहित्य का क्षेत्र बहुत व्यापक है। लोक–साहित्य के विद्वानों का मत है कि जहां–जहां लोक है, वहीं–वहीं लोक–साहित्य भी उपलब्ध होता है। आदिम जीवन का जो लोक–साहित्य से घनिष्ठ संबंध है। यदि यह कहा जाए कि आदिम जीवन लोक–साहित्य का संस्कार–विधाता है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पूर्ण सभ्य, सुसंस्कृत जातियों के जीवन में संस्कारों को सम्पन्न करने में जो भूमिका वैदिक मंत्रों की होती है, आदिम जातियों में लोकगीतों की भी वही

Edit with WPS Office

भूमिका होती है। वास्तव में लोक–जीवन के लिए लोकगीत ही वैदिक मंत्र है। जन्म से लेकर विवाह, मरण आदि तक के विविध अवसरों पर लोकगीत गाने की परम्परा है। सम्पूर्ण वर्ष सभी ऋतुओं में, जीवन के विविध क्रिया–कलापों के अवसर पर लोकगीतों के गाने की परम्परा है। इसी प्रकार बाल्यकाल से ही दादी–नानी की कहानियों से लेकर व्रतों, त्योहारों, पर्वों, उत्सवों, मेलों, तीर्थों, धार्मिक, सामाजिक क्रिया–कलापों के अवसर पर लोकगीतों को गाया जाता है। तात्पर्य यह है कि लोक जीवन का प्रत्येक क्षण लोक–साहित्य से किसी–न–किसी प्रकार सम्बद्ध रहता है। जिस प्रकार मनुष्य का जीवन बहुआयमी है उसी प्रकार लोक–साहित्य का क्षेत्र भी बहुत विस्तृत है।

डॉ. उपाध्याय के अनुसार, ''लोक–साहित्य का विस्तार अत्यन्त व्यापक है। साधारण जनता जिन शब्दों में गाती है, रोती है, हँसती है, खेलती है, उन सबको लोक–साहित्य के अन्तर्गत रखा जा सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि लोक–साहित्य की व्यापकता मानव के जन्म से लेकर मृत्यु तक है तथा स्त्री, पुरुष, बच्चे, जवान तथा बूढ़े लोगों की सम्मिलित सम्पत्ति है।

सारांश :–

अंततः कहा जा सकता है कि लोक–मानस की समस्त अभिव्यक्ति, लोक–गीतों, लोक–कथाओं, लोक–नाटयों, लोकोक्तियों, मुहावरे, पहेलियों और मंत्रों आदि के रूप में प्राप्त होती हैं। इसका सम्बन्ध किसी एक देश या क्षेत्र से न होकर पूरे विश्व के साथ है।

Edit with WPS Office

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र1) लोक साहित्य की परिभाषा दीजिए।

प्र2) लोक–साहित्य के क्षेत्र पर प्रकाश डालिए।

प्र3) लोक साहित्य की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

प्र4) विभिन्न विद्वानों द्वारा लोक–साहित्य की परिभाषा स्पष्ट करें।

Edit with WPS Office

प्र1) लोक कथा की परिभाषा

लोक कथा जन्म मानव जन्म के साथ हुआ है। यही कारण है कि कहानी कहने की कला सब कलाओं से पुरानी है। आदिम युग से ही मानव अपने सुख–दुख रीति रिवाज़, आस्था, विश्वास और परम्परा को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करता रहा है।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी :– लोककथा की परिभाषा देते हुए कहते हैं– लोककथा शब्द मोटे तौर लो प्रचलित उन कथानकों के लिए व्यहत होता रहा है जो मौखिक या लिखित परम्परा से क्रमशः एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होते रहे हैं।

डॉ. सत्येन्द्र के अनुसार :– लोक में प्रचलित और परम्परा से चली आने वाली मूलतः मौखिक रूप से प्रचलित कहानियाँ लोक–कहानियाँ कहलाती हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि लोकमानस से जुड़ी और लोक में परम्परा से मौखिक रूप में कही जाने वाली कहानी लोक–कथा है।

लोक–कथाएँ लोक में प्रचलित वे कहानियाँ हैं जो मनुष्य की कथा–प्रवृत्ति के साथ चलकर विभिन्न परिवर्तनों एवं परिवर्धनों के साथ वर्तमान रूप में प्राप्त होती हैं। लोकगीत की भाँति लोक–कथाएँ भी हमें मानव की परम्परागत वसीयत के रूप में प्राप्त है। दादी अथवा नानी के पास बैठकर बचपन में जो कहानियाँ सुनी जाती हैं, चौपालों में इनका निर्माण कब कहाँ कैसे और किसके द्वारा हुआ, यह बताना असंभव है।

Edit with WPS Office

लोक गीतों की भाँति लोक–कथाएँ भी किसी सीमा को स्वीकार नहीं करती। कहानी कहने वाला व्यक्ति कथा के प्रमुख पात्र को पहले वाक्य में ही प्रस्तुत कर देता है।

वास्तव में लोककथा शब्द की परिभाषा देना अत्यंत कठिन है। अतः लोककथा संज्ञा को एक साधारण अर्थवाचक संज्ञा के रूप ही प्रयोग किया गया है।

Edit with WPS Office

लोककथा की विशेषताएँ :–

धर्मगाथा और लोककथा से हटकर आजकल विभिन्न रचनाकारों द्वारा शिष्ट साहित्यिक कहानियां लिखी जा रही हैं। लोक–कथा की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं जो उसे शिष्ट साहित्यिक कहानी से अलग पहचान देती है। लोककथा की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

आशावादी दृष्टिकोण :– लोककथाओं के पात्र परिश्रम और उत्साह के साथ कठिन से कठिन कार्यों को करते हैं। कोई भी शक्ति इन्हें उनके उद्देश्य से विलग नहीं कर सकती। वे परिश्रम से शेरनी का दूध प्राप्त करते हैं, भूत, प्रेत और राक्षसों से युद्ध करके उन्हें जीतते हैं, भयावह जंगल इन्हें हतोत्साहित नहीं कर पाते, वे कल्पवृक्ष को उखाड़ लाते हैं और क्रुद्ध हाथी को अपने वश में कर लेते हैं।

अश्लीलता का अभाव :– लोककथाओं में कहीं भी अश्लील प्रेम का वर्णन नहीं है। उनमें वर्णित प्रेम दिव्य, अलौकिक और आदर्श है।

मूल प्रवृतियों से निरन्तर साहचर्य :– लोककथाओं में वर्णित घटनाओं का साहचर्य हमारी शाश्वत मूल प्रवृतियों से है। सुख–दुःख आशा–निराशा, काम, क्रोध, मद लोभ आदि ऐसी ही मूल प्रवृतियां जो लोक कथाओं में अभिनन रूप में पाई जाती हैं।

प्रकृति चित्रण का बाहुल्य :– लोककथाओं का उद्भव प्रकृति के सुरम्य प्रागण में हुआ है और वे वहीं पर सुनी सुनायी जाती हैं। इन कहानियों में तोता बोलता है, मोर नाचता है, सिंह न्याय करता है और वृक्ष साक्ष्य

Edit with WPS Office

देता है। मैना, कोयल, कबूतरी और पिंडकुलिया हूँका भरती हैं। कहानियों के श्रोता हैं– सियार, लोमड़ी, बकरी आदि। लोककथाओं में प्रकृति और मानव एकाकार हो गये हैं। वे आपस में हँसते बोलते हैं और एक–दूसरे के दु:ख में हाथ बटाते हैं।

उत्सुकता की भावना :– लोककथाओं में अद्‌भुत रस की प्रधानता के कारण श्रोताओं की जिज्ञासा आगे की कथा को निरन्तर सुनने के लिए बनी रहती है। जिस समय कथाकार कथा कहता है, उस समय श्रोताओं की भीड़, उनका बार–बार आगे की घटना को पुछना 'फिर क्या हुआ', 'अच्छा और हाँ शब्द कथा सुनने में उत्सुकता को प्रकट करते हैं। आगे की घटनाओं को जानने की जिज्ञासा कहानियों की मुख्य विशेषता है।

भाग्यवाद एवं कर्मवाद का समन्वय :– लोककथाएँ भारतीय संस्कृति को प्रस्तुत करती है। उनमें भाग्यवाद तथा कर्मवाद का समन्वय है। भाग्य के समर्थन के साथ कर्म की उपेक्षा नहीं की गई है। भाग्य की पूर्णत: के लिए कर्म को आवश्यक माना गया है। भाग्यवाद के साथ कर्मवाद की भी प्रशंसा की गई है।

वर्णन की स्वाभाविकता :– लोककथाओं के वर्णन में स्वाभाविकता होती है। कथानक की घटनाएँ पात्र और कथन–शैली एक साथ इस प्रकार पिराये रहते हैं कि उनमें कुत्तिमता का अनुभव नहीं होता। कथक्कड़ कथानक का बहुत सजीव और स्वाभाविक वर्णन करता है।

समानता की व्यापकता :– विश्व भर की लोक कथाओं में समानता है। जो कहानियाँ भारतवर्ष में सुनी–सुनायी जाती हैं, वही कहानियाँ पात्रों

Edit with WPS Office

के नामों के अन्तर से दूसरे देशों में कही जाती हैं।

संक्षेप में कह सकते हैं कि लोकगाथाएं लोक साहित्य का एक विशिष्ट प्रकार का काव्य रूप होती है जो प्रबंध तत्व का निर्वाह करते हुए रोचकतापूर्ण वातावरण में लोककवियों का वाणी विलास कही जा सकती है।

Edit with WPS Office

लोककथाओं का भारतीय वर्गीकरण

अब हम प्राचीन विद्वानों द्वारा लोककथाओं के किये गए वर्गीकरण पर विचार करेंगे। प्राचीन विद्वानों ने कहानी के अग्रलिखित दो भेद माने हैं– (कथा) तथा (2) आख्यायिका।

उनके अनुसार कथा वह रूप है जो कवि की कल्पना पर आधारित है और आख्यायिका का आधार ऐतिहासिक तथ्य होते हैं। यह वर्गीकरण प्राचीनतम वर्गीकरण कहा जा सकता है और संभवतः संस्कृत साहित्य में प्राप्त कथा–साहित्य के दृष्टिपथ में रखकर ही यह वर्गीकरण किया गया है और ऐसा लगता है कि कादंबरी तथा दशकुमार–चरित ही कथा रूप निर्धारित करते करते समय दृष्टिमय में रहे हों या आख्यायिका का रूप निर्धारित करते समय बाण भट्ट का हर्ष चरित उनकी दृष्टि में रहा होगा। इस प्राचीन वर्गीकरण को प्रस्तुत करने वाले विद्वानों का नामोल्लेख नहीं मिलता है।

इस प्राचीन वर्गीकरण के बाद हमारा ध्यान आनंदवर्धनाचार्य के उस वर्गीकरण की ओर जाता है, जिसमें निम्नलिखित तीन कोटियां निर्धारित की गई हैं – (1) परि–कथा (2) सकल–कथा तथा (3) खंड–कथा

आनंदवर्धन के अनुसार परिकथा वह श्रेणी है, जिसमें वर्णन का वैचित्र्य ही प्रधान रूप से देखा जाता है और रस परिपाक जैसी वस्तु के लिए उसमें कोई स्थान शेष नहीं रहता। इसी प्रकार सकल–कथा वह रूप है, जिसमें कथा का आद्योपांत वर्णन रहता है। तीसरी कोटि में गिनाई गई खंड–कथा का लक्षण यह होता है कि वह किसी प्रदेश विशेष की विशिष्टताओं को प्रदर्शित करती है। आधुनिक युग के कथा साहित्य में जिसे हम आंचलिक तत्व कहते हैं, वह किसी

Edit with WPS Office

खंड–कथा का प्रतिनिधित्व करता है। इस वर्गीकरण के संबंध में डॉ. सत्येंद्र का निम्न उद्धरण प्रस्तुत किया जाता है –

आनंदवर्धनाचार्य ने कथा के 3 भेद और माने हैं – 1. परि–कथा, जिसमें इतिवृत मात्र हो, रस–परिपाक के लिए जिसमें विशेष स्थान न हो, 2. सकल–कथा, 3. खंड–कथा। अभिनवगुप्त ने परि–कथा में वर्णन वंचित्र्ययुक्त अनेक वृत्तांतों का समावेश आवश्यक माना है। सकल–कथा में बीज में फलपर्यंत तक की पूरी कथा रहती है, खंड–कथा एक देश–प्रधान होती है। हेमचंद्र ने सकल–कथा को चरित का नाम दिया है। उदाहरण में समरादित्य कथा का उल्लेख किया है, उपकथा में चरित के अंतर्गत किसी प्रसिद्ध कथान्तर का वर्णन रहता है, चित्रलेखा को हेमचंद्र ने उपकथा माना है।

आनंदवर्धनाचार्य के वर्गीकरण के उपरांत एक अन्य वर्गीकरण हरिभद्राचार्य के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस वर्गीकरण में एक नवीन दृष्टि से कार्य किया गया है। इसलिए यह वर्गीकरण अपने से पूर्व वर्गीकरणों की प्रतिच्छाया न होकर मौलिक वर्गीकरण हो सकता है। हरिभद्राचार्य के अनुसार कथाओं की निम्न कोटियां निर्धारित की गई हैं–

1. अर्थ कथा – जिसमें अर्थ (धन) की प्राप्ति पर विशेष दृष्टि रहती है।

2. काम कथा – जिसका मूल विषय काम विषयक अनुभूतियां होती है।

3. धर्म कथा – जिसमें धार्मिक आख्यानों का बाहुल्य होता है। धर्मप्रिय व्यक्तियों के द्वारा ये कथाएं कही–सुनी जाती हैं।

4. संकीर्ण कथा – ये कथाएं उन लोगों से संबंधित होती हैं, जो

Edit with WPS Office

पारलौकिक उद्देश्य के स्थान पर लौकिक उपलब्धियों पर बल देते रहते हैं।

पौराणिक कथाएं एवं उनकी विशेषताएं

पौराणिक कथाओं के दो रूप होते हैं – (1) अंतरंग, (2) बहिरंग। किसी जनजाति की कथाओं को सभी व्यक्ति जानते हैं। यह कथा का बहिएंग वर्ग कहलाता है। कथा का एक रूप ऐसा भी है जिसमें कथा का वास्तविक रहस्य होता है, यह अंतरंग वर्ग कहलाता है। कथा के आंतरिक रहस्य को जानने वाला वर्ग पुरोहित है। यह अपना समय विधि–विधानों तथा कथाओं को जानने में लगता है। यहाँ वर्ग इन विधि–विधानों के पीछे एक दैवी घटना को जोड़ता है, जिससे जनजाति की उनमें दृढ़ आस्था हो जाती है। जनता तो कथा के केवल बहिरंग रूप को ही जानती है। अंतरंग कथाओं के कथानक विधि–विधानों की पुष्टि करते हैं। इस रहस्य को साधारण जनता नहीं जानती। पुरोहित इस रहस्य को अपने उचित पात्र 'शिष्य' पर प्रकट करते हैं। यहीं पर गुरु की महत्ता प्रतिपादित होती है।

लोकवार्ता क्षेत्र में पौराणिक कथा का अत्यंत महत्व है। कुछ विद्वान इनमें लोकवार्ता तत्व नहीं मानते। डॉ. सत्येंद्र ने इस संबंध में अपने विचार प्रकट किये हैं– ''कुछ विद्वानों ने धर्मगाथा को लोकवार्ताभिव्यक्ति नहीं माना। कुछ का कहना तो यह है कि धर्मगाथा का पूर्व में रूप कुछ भी रहा हो, हमारे समक्ष तो वह महान कवियों की रचना के रूप में आती है। इन विद्वानों का संकेत इंलियड तथा महाभारत जैसी रचनाओं की ओर रहता है। कुछ का विचार है कि लोकवार्ता तत्व का संबंध आदिम मानव के वर्तमान अवशेषों से होता है,

Edit with WPS Office

किंतु धर्मगाथा तो अतीत काल से संबंध रखती है। यह भी कहा जाता है कि धर्मगाथा में आदिम मानस की अभिव्यक्ति नहीं, क्योंकि आदिम मानस का विकास कुछ निम्न क्र में हुआ है–

1. **मन**– इस शब्द का प्रयोग एक रहस्यात्मक शक्ति के अर्थ में मेलेनेशियन द्वीप–समूह में होता है। यह वस्तुतः आत्मा अथवा आत्मशक्ति का भी मूल सार है। कुछ विद्वान इस क्रम–विकास से सहमत नहीं। वे आत्मवतवाद या ऐनिमेटिज्म से ही लोकमानस का मूल मानते हैं।

2. **परा–प्रकृतिवाद**– प्राकृतिक पदार्थों के श्रद्धाभयोद्रे की व्यापारों में किसी शक्ति की उद्‌भावना।

3. **आत्मवतवाद** – आत्मवत सर्वभूतेषु – मेरे जैसी बुद्धि, शक्ति, विवेक पशु–पक्षियों तथा पदार्थों में है।

4. **पदार्थात्ववाद** – समस्त पदार्थों में आत्मा है।

5. **देववाद** – देवताओं की कल्पना।

इन विद्वानों के विचार से इस पांचवीं स्थिति पर पहुंचने पर ही घर्मगाथाओं का उदय हुआ। अतः यह मूल लोकमानस से संबद्ध नहीं।

डॉ. सत्येंद्र उक्त मत से सहमत नहीं हैं। वे घर्मगाथा में लोकवार्ताभिव्यक्ति मानते हैं। वे घर्मगाथा को महाकाव्य से पूर्वजन्मा मानते हैं। उसी पूर्व रूप के कारण ही वे घर्मगाथाएं हैं। उनका कथन है कि धर्मागाथाओं का संबंध उतना ही वर्तमान में है जितना लोकवार्ता के आदिम अवशेषों का वर्तमान से है। उनका तर्क है कि "यदि घर्मगाथा का अतीत से संबंध है तो लोकवार्ता के आदिम अवशेषों को क्या बिना अतीत से संबंधित किये आदिम अवशेष माना जा सकता है।" तीसरा मतभेद उनका यह है कि आदिम मानस के विकास क्रम में पांचवीं

Edit with WPS Office

स्थिति में पहुंचने पर घर्मगाथाओं के उदय की स्थिति मानी गई है। यहां मानस की सत्ता मिट चुकी थी? देववाद क्या लोकमानस की ही उद्‌मावना नहीं? यह भी स्पष्ट हो गया है कि लोकवार्ता का मूल लोकमानस से संबंध अनिवार्य नहीं। लोकमानस की जो दाय रूप में स्थिति है, उसकी अभिव्यक्ति भी लोकवार्ता का एक तत्व है। धर्मगाथाओं के विन्यास में लोकमानस प्यारा है।

पौराणिक कथा की उत्पत्ति तथा विशेषताएं :–

1. **मानवीकरण** – प्राकृतिक उपकरणों में मानवीय भावनाओं तथा क्रियाओं का आरोप मानवीकरण कहलाता है। पौराणिक कथाओं में वर्णित सूर्य, चंद्रमा, पशु, पक्षी आदि मानव के समान ही व्यवहार करते हुए दिखाए गए हैं। जब आदि मानव ने देखा कि इन पशु–पक्षियों में भी मानव से अधिक शक्ति है और उसी की तरह वे क्रियाएं करते हैं तो वह उनमें दैवी शक्ति की संभावना कर उन शक्तियों से आतंकित होने लगा। तब उसे विश्वास हुआ कि इन प्रकृति के तत्वों में भी असीम शक्ति है। वे भी मानव की तरह क्रोध–प्रेम, द्वेष–घृणा करते हैं। यही मानवीकरण कहा जाता है।

2. **स्पष्टीकरण** – प्राकृतिक तत्वों की शक्ति को स्पष्ट करने के लिए पौराणिक कथाओं का जन्म हुआ। इस रहस्यमय जगत के रहस्य को समझने के लिए वह उत्सुक हुआ। वह सृष्टि की उत्पत्ति, रचना और विकास का स्पष्टीकरण जानने का प्रयत्न करने लगा। उसने देखा कि गिलहरी की पीठ पर तीन रेखाएं हैं– क्यों ? सूरज, बादल आदि मानव की तरह क्रिया करते है। बादल क्रोध से गरजते हैं– क्यों ? इनका रहस्य स्पष्ट करने का यह प्रयत्न करता है। इस रहस्य का स्पष्टीकरण वह इन शक्तियों के मानवीकरण से करता है। इस प्रकार के स्पष्टीकरण के लिए की गई कथानक की रचना पौराणिक कथा कहलाती है।

3. **प्रतिनिधिकरण** – पौराणिक कथाओं में वर्णित घटनाएं अपने वर्ग के

Edit with WPS Office

प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत होती हैं। जब वहां पर किसी लोमड़ी अथवा बंदर का वर्णन आता है तो वह संसार की किसी घटना का वर्णन है।

4. **प्राचीनता अथवा पौराणिक काल** – पौराणिक कथाएं प्राचीन काल से प्रचलित हैं। इनका निर्माण कब हुआ ? और किसने किया ? इस संबंध में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। यह जनजातियों में प्राचीन काल से ही मौखिक परंपरा में प्रचलित हैं। यह माना जाता है कि इन कथाओं में आने वाले व्यक्ति पौराणिक पात्र की भांति ही कार्य करते हैं। ये सृष्टि–रचना से पहले भी विद्यमान थे। ये पौराणिक पात्र ही सृष्टि की रचना करते हैं। ये पात्र–काल्पनिक और यथार्थ–दोनों प्रकार के होते हैं। लेकिन यह कहना नितांत असंभव है कि इनमें कौन–सा पात्र काल्पनिक है और कौन–सा यथार्थ।

5. **दार्शनिक आधार**– पौराणिक कथाएं मनुष्य की काल्यनिक रचना नहीं है, बल्कि इसमें सृष्टि की उत्पत्ति, रचना, विधि–विधानों पर आदिम मानव ने गहन और दार्शनिक दृष्टिकोण से विचार किया था, जो पौराणिक कथाओं का आधार है। इतना अवश्य है कि इन कथाओं में आने वाले सूर्य, पशु–पक्षी, बादल आदि पात्रों के मानवीकरण के कारण कथाएं काल्पनिक–सी लगती हैं।

6. **विधि–विधानों का आधार** – भारतीय समाज में विधि–विधान प्राचीन काल से चले आ रहे हैं। विद्वानों का कथन है कि इन्हीं का कारण जानने के लिए पौराणिक कथाओं की उत्पत्ति हुई। विधि–विधानों में विधि और निषेध, दो बातें होती हैं। विधि का अर्थ है – यह करना है तथा निषेध का अर्थ है – यह नहीं करना है। इन विधि–निषेधों का संबंध जब पौराणिक कथा से जोड़ा जाता है तो मानव यह समझता है कि उसने मूल कारण का पता लगा लिया। परंतु आदिकालीन मानव इस कारण की खोज में अधिक दूर तक नहीं जाना चाहता। उदाहरणार्थ – होली का त्योहार क्यों न मनाया जाता है ? इस पर कथा की रचना इस प्रकार हुई। एक बार शिवजी तपस्या में ऐसे मग्न हुए कि पार्वती को

Edit with WPS Office

भूल गए। पार्वती ने कामदेव से शिवजी की तपस्या भंग करने के लिए प्रार्थना की। शिवजी के पास जाकर कामदेव ने अपने बाण छोड़े। शिवजी ने कुद्ध होकर अपना तीसरा नेत्र खोला और कामदेव को भत्म कर दिया। कामदेव को भस्म हुआ देखकर उसकी पत्नी रति विलाप करती हुई शिवजी के पास आई। शिवजी ने रति पर प्रसन्न् होकर कामदेव को वर दिया कि तुम बिना शरीर के लोगों के मन में रहोगे। इसलिए कामदेव का दूसरा नाम अनंग हुआ। उसी समय से काम अनंग रहकर प्रत्येक व्यक्ति के मन को तरंगित करता रहता है। इसी उत्साह की ओर मन की तरंग की अभिव्यक्ति के लिए बसंत ऋतु में होली का पर्व मनाया जाता है। इसी प्रकार की पौराणिक कथाओं से विधि–विधानों का समाधान किया जाता हैं।

Edit with WPS Office

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र1) लोक साहित्य की परिभाषा दीजिए।

प्र2) लोक–साहित्य के क्षेत्र पर प्रकाश डालिए।

प्र3) लोक साहित्य की विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

प्र4) विभिन्न विद्वानों द्वारा लोक–साहित्य की परिभाषा स्पष्ट करें।

प्र5) लोक–कथा का अर्थ स्पष्ट करें।

प्र6) लोक–कथा की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

प्र7) लोक–कथा व पौराणिक कथा में क्या अंतर है?

प्र8) पौराणिक कथा की उत्पत्ति तथा विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

प्र9) विद्वानों द्वारा लोक कथा की परिभाषाओं को स्पष्ट करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ/पुस्तकें

1. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्ण देव उपाध्याय
2. लोक साहित्य सिद्धान्त और प्रयोग, डॉ. श्रीराम शर्म
3. भारत में लोक–साहित्य, डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय
4. लोक साहित्य के प्रतिमान, डॉ. कुन्दन लाल उप्रेती

Edit with WPS Office

BA Semester 5th

Lok Sahitya

Unit 3rd

Rahul Sharma

GDC Dudu Basantgarh

इकाई - तीन

* लोक गीत की परिभाषाएं
* लोक गीत की विशेषताएं
* विषयगत एवं संरचनागत प्रकार

लोक गीत–लोक गीतों को अंग्रेज़ी के 'फोक सांग' का पर्याय माना जाता है। सामान्यत: फोक शब्द का अर्थ सभ्यता से दूर रहने वाली जाति से लिया जाता है किन्तु हिन्दी में 'लोक' शब्द का प्रयोग साधारण लोगों के लिए किया जाता है, जो सभ्यता से दूर हों। इसलिए लोक गीत उस रचना को कहा जा सकता है जो ग्रामीण जनों के सामान्य भावों को गेय रूप से अभिव्यक्त करें। संगीत एवं लय लोक गीतों के प्राण होते हैं। इस प्रकार अशिक्षित, ग्रामीण लोगों में प्रचलित गीतों को ही लोक गीत कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि गांव के लोगों में प्रचलित ग्रामीण लोगों द्वारा सृजित गांव के लोगों के लिए लिखे गए गीत ही 'लोक गीत' हैं।

लोक गीत मानव के हर्ष–विषाद जीवन–मरण आदि के साथ मुखरित होते रहते हैं। सामान्य मानव के संवेदनशील हृदय के उद्‌गार जो संगीत की धारा के रूप में प्रवाहित होते हैं, उन्हें 'लोक गीत' कहा जा सकता है।

लोक गीत के बदलते स्वरूप के विषय में कहा गया है–

''वह न तो पुराना होता है और न नया। वह तो जंगल के उस वन्यवृक्ष के समान है जिसकी जड़ें तो गहरी धँसी हुई हैं परन्तु जिसमें निरन्तर नई शाखाएँ, नये पत्ते और नये फूल निकलते रहते हैं।''

लोक गीतों की परिभाषा के संदर्भ में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद हैं। लोक गीतों को परिभाषित करने के लिए विविध मतों की परीक्षा करना आवश्यक है :

1. डॉ. सत्येन्द्र–"वह गीत जो लोक मानस की अभिव्यक्ति हों अथवा जिसमें लोक मानस भास भी हो लोक गीत के अन्तर्गत आएगा।"

2. डॉ. तेज नारायण लाल–"लोक गीत हमारे जीवन विकास के इतिहास हैं।"

3. मोहन कृष्णधर–"लोक गीत रस से परिपूर्ण बोल हैं।"

4. डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय–"लोक गीत मनुष्य की प्रकृत भावना की अभिव्यक्ति से जन्मा है, आदिम वातावरण में पला है औ काल की गहराईयों से उठकर प्रौढ़ता को प्राप्त हुआ है।"

5. गाँधी जी के अनुसार–"लोक गीतों में धरती गाती है, पहाड़ गाते हैं, नदियां गाती हैं, फसलें गाती हैं, उत्सव और मेले, ऋतुएँ और परम्पराएँ गाती हैं।"

6. सूर्यकरण पारीक–"आदिम मनुष्यों के गानों का नाम लोक गीत है। प्राचीन जीवन की, उसके उल्लास की, उसके उमंगों की, उसकी करुणा की, उसके समस्त सुख-दुःख की कहानी इनमें चित्रित है।"

7. रामचन्द्र शुक्ल–"लोक गीतों में जन-जीवन की सच्ची झाँकी निहित है।"

8. डॉ. प्रियतम कृष्ण कौल–"लोक गीत जन-मानस की अनुभूतियों की लयपूर्ण अभिव्यक्ति है और वह जीवन की यथार्थ भावनाओं को प्रस्तुत करते हैं।"

9. ए.एच. क्रेपी–"लोक गीत वे सम्पूर्ण गेय गीत हैं जिसकी रचना प्राचीन अनपढ़ जन में अज्ञात रूप से हुई है और जो यथेष्ट समय अतः शताब्दियों तक प्रचलन में रहा।"

10. एक विदेशी विद्वान के अनुसार–"भोले लोगों का उल्लास भरा गीत ही लोक गीत है।"

11. फेयरी के अनुसार–"This primitive spontaneous music had

been called folk song.'' इस परिभाषा से स्पष्ट है कि मानव चाहे सभ्य हो या असभ्य उसमें अपनी अनुभूति से प्रेरित जब कुछ सुख-दुख की प्रेरणा से कवि आन्दोलित हुआ होगा तभी लोक गीतों की धारा उसके कंठ पर लहरा उठी होगी।

निष्कर्ष—सभी परिभाषाओं को ध्यान में रखकर कहा जा सकता है कि लोक गीत साधारण अलिखित होते हैं और रचयिता अज्ञात होता है। यह मौखिक परम्परा में जीवित रहते हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं-

''लोक मानस की अभिव्यक्ति करने वाले गीत को लोक गीत कहा जा सकता है।'' लोक समूह में प्रचलित गीत ही लोक गीत होते हैं।

लोक गीत की विशेषताएँ—

भूमिका—लोकगीत मानव संस्कृति के सारल्य और व्यापक भावों को स्वच्छ एवं स्वभाविक रूप में अभिव्यक्त करते हैं। लोकगीतों में समाज के प्रत्येक मनुष्य के जीवन के दृश्य देखने को मिलते हैं। माता का करुण स्वर, हताश किसान, शादी के अवसर के वधाई गान से लेकर ग्रहिणी के विरह स्वरों तक की अभिव्यक्ति लोकगीतों में देखने को मिलती है। लोकगीतों की विशेषताएं इस प्रकार से हैं **:**

1. संस्कृति—लोक गीत लोक संस्कृति का दर्पण होते हैं। लोक गीत मानव संस्कृति के सारल्य और व्यापक भावों को स्वच्छ एवं स्वभाविक रूप में अभिव्यक्त करते हैं। लोक गीतों के स्वरूप में देश की प्रकृति तथा संस्कृति अपने रूप का बखान करती है। इनमें जन-इतिहास छुपा रहता है।

2. मानव जीवन का दृश्य—लोक गीतों में समाज के प्रत्येक मनुष्य के जीवन के दृश्य देखने को मिलते हैं। माता का करुण स्वर, हताश किसान, शादी के अवसर पर बधाई, बदाई गान से लेकर गृहिणी के विरह स्वरों की अभिव्यक्ति लोक गीतों में मिलती है।

3. लोक मानस की सहज अभिव्यक्ति—लोक गीतों में लोक मानस की सहज एवं अकृत्रिम अभिव्यक्ति रहती है। मानव-मन की सहज और लोक व्यापी अभिव्यक्ति को ध्यान में रखते हुए लोक गीतों के सम्बन्ध में देवेन्द्र सत्यार्थी से लिखा है -

"लोक गीत हृदय के खेत में उगते हैं, सुख के गीत उमंग के जात से जन्म लेते हैं और दु:ख के गीत तो खोलते हुए लहु से पनपते हैं और आँसुओं के साथी बन जाते हैं।" इससे स्पष्ट है कि लोक गीत मानस की उपज है।

4. संगीत—संगीत लोक गीतों का बेजोड़ अंग है। लोक गीत सामूहिक गान की संगीतात्मक रचना होते हैं। लय और संगीत के बिना गीत अधूरा है। जब लोक गीत सामूहिक स्तर पर गेय होते हैं।

5. वातावरण—लोक गीत शहरी वातावरण से दूर होते हैं। इनमें ग्रामीण आँचल की प्रकृति, वातावरण, मानव-जीवन तथा ऋतु इत्यादि का चित्रण होता है।

6. देश काल—लोक गीतों में देश काल की सीमा का वर्णन नहीं होता। यह तड़क-भड़क से दूर है किन्तु दर्पण की भान्ति निर्मल होते हैं।

7. गुण—सरलता, रस तथा माधुर्य लोक गीत के गुण हैं। इनमें जीवन के अभाव व्यक्त होते हैं अंकित नहीं।

8. वाणी की महत्ता—मानवीय भावों को प्रकट करने के लिए वाणी के लयात्मक स्वरूप को लोक गीतों में प्रमुखता दी जाती है।

9. मौखिक परम्परा—लोक गीत मौखिक परम्परा में जीवित रहते हैं। लोक गीतों में उसके निर्माता का नाम प्राय: नहीं होता। लोक गीतों का निर्माण लोक भावना के साथ अपने भाव को पूरी तरह किला देता है।

10. लोक गीतों में नाम अथवा यश की लालसा नहीं होती। लोक गीत बनते और बिगड़ते भी हैं। इनमें लम्बे-चौड़े कथानक का अभाव रहता है। इनकी भाषा

लोक बोली होती है।

11. लोक गीतों में प्रकृति का योगदान–लोक गीत में प्राकृतिक और स्थानीय परिवेश का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। लोक मानव अपने हर्ष एवं विषाद को प्रकृति एवं परिवेश के साथ एकमेक करके व्यक्त करता है। प्रकृति लोक गीतों के लिए पृष्ठभूमि का कार्य करती है।

12. सभ्यता एवं संस्कृति–लोक गीतों में मानव सभ्यता एवं संस्कृति के चित्र अत्यन्त सहज किन्तु सूक्ष्म रूप में अंकित होते हैं। सामान्यतः जनता के लोक विश्वासों, धार्मिक भावनाओं, रीति-रिवाज़ों एवं परम्पराओं का संगम स्थल लोक गीतों को ही माना जा सकता है।

13. लोक गीतों को पढ़ने में इतना आनन्द नहीं आता जितना सुनने में आता है। लोक गीत कंठ में गाने के लिए और हृदय से आनंद लेने के लिए हैं।

14. गीतशीलता–लोक गीत लोक मानस से ही उपजता है लेकिन समय के अनुसार नए-नए मनोभावों को अपने में समोहित करता चलता है। यही उसकी गतिशीलता है।

15. अज्ञात गीतकार–लोक गीत का कोई रचयिता एवं गीतकार नहीं होता। सामूहिक रचना होने के कारण यह लिपिबद्ध नहीं होती। लिपिबद्ध होने पर लेखक का महत्त्व होता है जबकि इसमें नाम और रस की कोई लालसा नहीं मिलती। इनका आकार नहीं होता और न ही यह कविता की भांति ज्यों का त्यों होता है अर्थात् इसका रूप परिवर्तित होता रहता है।

16. सामूहिक निर्मित–लोक गीतों को समूह द्वारा निर्मित किया जाता है। अतः इसमें सामाजिक मूल्यों को अभिव्यक्त करने की क्षमता है। यह गीत सामूहिक रूप से गाए जाते हैं। इनको एक व्यक्ति गाना आरंभ करता है और दूसरा-तीसरा उसमें कोई न कोई कड़ी जोड़ता जाता है। यह मूल कड़ियां ही मूल गीत बनकर सामने आती हैं। इसी कारण लोक गीतों में समय-समय पर नए पद

जुड़ते जाते हैं।

17. प्रतीक्षा करना—इसमें प्रतीक्षा का विशेष महत्त्व रहता है। जब लोग गांव में रहते थे तो प्रवासी प्रेमी का रास्ता छत्त पर चढ़कर देखते थे। दूर की वस्तुएँ पेड़, पहाड़ या ऊपरी छत्त आदि पर चढ़कर ही दिखाई देती हैं।

18. दैनिक वस्तुओं के नाम जोड़ने की प्रवृत्ति—लोक गीतों में दैनिक वस्तुओं के नाम आते हैं। इसमें समकालीन समाज के उन्हीं विषयों का उल्लेख होता है जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति जानता है।

19. संख्या—लोक गीतों में संख्या परक शब्दों का योग अनेक बार होता है। तीन, चार, पाँच, आठ, नौ आदि संख्याओं का उल्लेख इन गीतों में कई स्थानों पर हुआ है।

20. पुर्नावृति—लोकगीतों में एक पंक्ति जो लय के बाद या उससे पहले बार–बार दोहराई जाती है और इस तरह से यह पंक्ति लोकगीत के विभिन्न पदों के बीच कड़ी के रूप में काम करती है।

21. लोकगीतों में प्रकृति—लोकगीतों में प्रकृति और स्थानीय परिवेश का महत्वपूर्ण योगदान होता है। लोकमानस अपने हर्ष एवं विषाद को प्रकृति के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। प्रकृति लोकगीतों के लिए पृष्ठभूमि का कार्य करती है।

निष्कर्ष—लोकगीतों के संबंध में रामनरेश त्रिपाठी ने इस प्रकार कहा है कि लोकगीत प्रकृति के उद्‌गार हैं। इसमें अलंकार नहीं केवल रस है। छन्द नहीं केवल लय है, लालित्य नहीं केवल माधुर्य है। ग्रामीण मनुष्यों के स्त्री–पुरुषों के मध्य में हृदय नामक आसन पर बैठकर प्रकृति गान करती है। प्रकृति के वे गीत ही लोकगीत हैं। इन लोकगीतों को प्रयत्न के द्वारा सजाया या संवारा नहीं जाता है। लोकगीत साहित्यिक दृष्टि से काव्यात्मक गुणों से न्यूनतम होकर भी अपना अलग व्यक्तित्व बनाए रखते हैं।

लोकगीतों का वर्गीकरण–लोकगीतों की सीमा अनन्त है। अतः इन्हें वैज्ञानिक ढंग से वर्गीकृत करना अत्यन्त कठिन काम है। फिर भी विद्वानों ने इस दिशा में काम किया है। लोकगीतों को वर्गीकृत करने वालों में पहला नाम उत्तर भारत के राम नरेश त्रिपाठी का है। उन्होंने संकलन के आधार पर लोकगीतों को 11 वर्गों में विभाजित किया है।

कृष्णदेव उपाध्याय ने वैज्ञानिक ढंग से लोकगीतों का वर्गीकरण किया है। डॉ. कश्यप ने कुल्लई लोकगीतों को चार वर्गों में रखा है।

डॉ. सत्येन्द्र ने विषय के आधार पर लोकगीतों का निम्नलिखित वर्गीकरण किया है; जो नामो की गिनती तक सीमित है :

लोकगीत

1. स्तुत्यात्मक गीत 2. लोरी 3. वीरता प्रधान 4. प्रेम तत्व प्रधान

उपर्युक्त वर्गीकरण से यह स्पष्ट है कि डॉ. सत्येन्द्र लोकगाथा को लोकगीत का एक भेद मानते हैं। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय लोकगीत और लोकगाथा में भेद करते हैं। उनका मत है कि यह भेद विषय और रूप के आधार पर है।

यह कहा जा चुका है कि विषय की दृष्टि से लोकगीतों का वर्गीकरण एक कठिन समस्या है, फिर भी लोकगीतों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से हो सकता है :

1. स्तुत्यात्मक गीत–विभिन्न देवी-देवताओं से संबंधित गीतों में विभिन्न उद्देश्यों - पुत्र-प्राप्ति, उसकी दीर्घायु आदि की प्राप्ति के लिए पूजा की जाती है और व्रत रखा जाता है। ऐसे गीतों में घरेलू निष्ठा, प्रचलित विश्वास, पारिवारिक विचार और मान्यताएं मिलती हैं।

2. लोरी के गीत–ऐसे गीतों में वात्सल्य का भाव उभर कर आता है। देवेन्द्र सत्यार्थी का कहना है कि ''ज्यों-ज्यों शिशु बड़ा होता है लोरी भी बड़ी होती

जाती है। जितनी तेजी से शिशु चलता है, उतनी ही तेजी से गुजरती लोरी का ताल चलता है।" लोरियो में कहीं माँ बच्चे की नींद को बुलाती है, कहीं शिशु के आभूषणों का वर्णन होता है, कहीं चाल को, कहीं जन्म दिन मनाने का, कहीं शिशु की मुस्कान का तो कहीं चंदा मामा को पकड़ना चाहता है। शिशु के प्रति माँ की इच्छाओं का कोई अंत नहीं है। शिशु तो उसके लिए राजा समान है।

3. बच्चों के खेल के गीत—खेलने के योग्य हो जाने पर विभिन्न खेलों या किसी विशेष खेल के समय बच्चे विशेष गीत गाते हैं, जो उसी खेल से जुड़ा होता है। ऐसे गीत प्रायः संक्षिप्त होते हैं।

4. वर सम्बन्धी गीत—वर संबंधी गीतों में वर की वेश-भूषा से संबंधित सेहरे का वर्णन प्रमुख रूप से हुआ है। हल्दी, मेंहदी, घोड़ी आदि भी गीतों के विषय बने हैं।

वर की खोज संबंधी गीतों में माता द्वारा पुत्री के लिए योग्य वर खोजने का आग्रह, पुत्री द्वारा सुन्दर वर के लिए पिता से प्रार्थना, योग्य वर न मिलने पर पिता की चिन्ता और व्याकुलता का चित्रण मिलता है।

5. नेग मांगना—मुंडन, यज्ञोपवीत और विवाह से संबंधित गीतों में बहिन द्वारा पिता से नेग मांगना या लड़के की बुआ द्वारा नेग मांगने का वर्णन किया है।

6. विधि-विधान—यज्ञोपवीत के गीतों में इस संस्कार से संबंधित विधि-विधान का वर्णन होता है।

7. पुत्र-जन्म के गीत—सोहर और खेलवना लोकगीत पुत्र-जन्म के अवसर पर गाए जाते हैं।

8. गवना के गीत—विवाह के पश्चात् पुत्री की विदाई के विषय से संबंधित गीतों में विषाद के दृश्य और करूण रस पाया जाता है। भाई का बहिन की पालकी के पीछे-पीछे चलते हुए रोना, बेटी का अपने माता-पिता, भाई-बहिन के वियोग से दुःखी होकर रोना, माता का पुत्री के भावी वियोगजन्यः दुःख के कारण

रोना आदि विषय लोक गीतों में पाए जाते हैं।

9. मृत्यु गीत–इनमें मरने वाले के गुणों का उल्लेख, उसकी मृत्यु से उत्पन्न होने वाले दु:खों का वर्णन, मृत व्यक्ति के प्रति पदार्थों का नाम ले-ले कर शोक प्रकट करना, गोदान आदि विषय होते हैं।

10. श्रृंगार और प्रेम तत्व प्रधान गीत–प्रेम तत्व प्रधान गीतों में छोटे और बड़े गीत हैं। छोटे गीतों में कथा नहीं होती। ऋतु सम्बन्धी गीतों में कजली एक ऐसा गीत है, जिसमें संयोग और वियोग दोनों का चित्रण है। राधा-कृष्ण का झूला-झूलना, पति-पत्नी की प्रेम-लीला, प्रवासी प्रियतम का स्मरण करते हुए उसकी राह देखना, प्रियतम के अभाव में विरह की अभिव्यक्ति आदि का चित्रण मिलता है। 'फाग' और 'चेता' नामक लीकगीतों में भी संयोग के चित्र मिलते हैं। 'बारहमासा' में वियोग का वर्णन प्रधान रूप से होता है।

11. वीरता-प्रधान गीत–वीर कथात्मक गीत भी लोक गाथा की श्रेणी में आते हैं। इनमें किसी वीर के साहसपूर्ण, शौर्यपूर्ण कार्य और आलौकिक वीरता का वर्णन होता है। वीर-पुरुष कहीं शत्रुओं का सामना करता है, कहीं न्याय पक्ष की विजय के लिए युद्ध में संघर्ष करता हुआ दिखाई पड़ता है।

12. स्त्रियों के दु:खी जीवन संबंधी गीत–स्त्रियों के दु:खी जीवन, विशेष रूप से ससुराल में प्राप्त होने वाले दु:खों से संबंधित लोकगीत हमें देखने को मिलते हैं। इन लोकगीतों में कहीं बहू का सास द्वारा सताए जाने का विवरण है तो कहीं पत्नी के आचरण पर संदेह करके पति द्वारा उसकी अग्नि-परीक्षा लेने का उल्लेख है।

13. उल्लास और मस्ती के गीत–होली और बसन्त ऋतु से संबंधित लोकगीतों में आनंद, उल्लास और मस्ती का वर्णन मिलता है। होली आने पर लड़की अपनी माँ से कहती है कि मुझे पिता से कहकर चुनरी मंगवा दो, चाचा जी से कहकर चूड़ा मंगवा दो, मैं 'फाग' खेलने जाऊंगी।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि लोक गीत जीवन के सुख दु:ख से संबंधित हैं, इसलिए वे सभी प्रसंग और भाव जो उल्लास, हर्ष, शोक और विषाद से संबंधित हैं, लोक गीतों का विषय है।

लोक गीतों के संरचनागत प्रकार/भेद

डॉ. सत्येन्द्र ने लोक गीतों के दो रूप माने हैं :

1. मुक्तक 2. प्रबन्धात्मक

1. मुक्तक को उन्होंने पुन: दो भागों में बांटा है :

(क) भाव बिन्दु वाले

(ख) कथा बिन्दु वाले

2. प्रबन्धात्मक–गीत में एक कथानक रहता है जो लघु या वृहत हो सकता है। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय लोकगीत और कथात्मक आधार वाली लोक गाथा में विषयगत और स्वरूपगत अन्तर मानते हैं।

लोक गीतों की संरचना से अभिप्राय: उन तत्वों से है, जिनसे लोक गीत का निर्माण होता है। मुक्तक गीतों में प्रथम तत्व एक 'टेक' है जो ध्यान आकर्षित करती है। यह टेक गीत में दोहराई जाती है। टेक को शास्त्रीय संगीत में 'स्थाई' कहा जाता है। टेक के पश्चात् गीत का 'मूलरूप विधान' प्रस्तुत होता है जिसे झड़ भी कहते हैं। डॉ. सत्येन्द्र के अनुसार इसके निम्नलिखित अंग माने जाते हैं :

1. रीढ़ (मुखड़े को छोड़कर गीत का शेष भाग)–मूल रूप विधान जिन शब्दाधारों पर टिकता है, वही गीत की रीढ़ है। रीढ़ को अंतरा भी कहा जाता है।

2. स्वर-संभरण (आवाज़, संगीत के सुर, लय एकत्र करना)–रीढ़ के ऊपर गीत का मूल लय-रूप खड़ा करने के लिए जो स्वर-तत्व संयुक्त किया जाता है, वह स्वर संभरण है। यही गीत को निजी रूप प्रदान करता है। लोक गीतों में छन्द की अपेक्षा लय का संरक्षण होता है। लोक गीतकार को मात्रादि का ज्ञान नहीं होता वह केवल लय को जानता है।

3. स्वरालंकरण (लचीलापन, कोमलता, नज़ाकत)–गीत में सामान्यतः इतनी लोच होती है कि वह गायक के आवेग–आवेश को अपनी लय में समाविष्ट कर सकता है। स्वरालंकरण की तुलना शास्त्रीय संगीत की 'तान' और 'अलंकार' से की जा सकती है। इससे शीत में सौन्दर्य उत्पन्न होता है। लोकगायक स्वरों में उतार–चढ़ाव के साथ हे, हो, हरे, अरे आदि शब्दों की योजना भी करता है।

4. तोड़ या मिलान–तोड़ गीत के मूल रूप विधान (झड़) का अंतिम अंग है। अंतरा को समाप्त करने के पश्चात् गायक स्वर के आरोह (चढ़ाई) अवरोह (उतार) के साथ अपनी स्थायी लय (स्वर–संभरण) प्राप्त करता है। गीत के इसी अंग को तोड़ या मिलान कहते हैं। इसे गाने के पश्चात् गीत की टेक की पुनरावृत्ति की जाती है।

5. भरती–गीत की झड़ गाने के पश्चात् गीत के प्रभाव की निरन्तरता बनाए रखने के लिए कुछ पदों की योजना की जाती है, जिन्हें भरती कहा जाता है। भक्तिपरक गीतों में 'हरे', 'हरि गुन गाइयै' आदि पद भरती के अन्तर्गत आते हैं।

6. मोड़–मोड़ प्रायः भरती से संबंधित होता है। एक झड़ को गाकर दूसरी झड़ गाने के लिए प्रवेश करने को मोड़ कहते हैं। एक ही झड़ के गायन में स्थायी से अन्तरा तथा अन्तरा से तोड़ में प्रवेश करने को मोड़ कहा जाता है।

गीत निर्माण के उपर्युक्त तत्त्वों के अतिरिक्त एक अन्य तत्व रंगत विधान की चर्चा भी की जाती है जिसका संबंध गीत की रचना से न होकर गायन की शैली से है। श्रोताओं को प्रभावित करने के लिए गीत के मुख्य भाव को छन्द परिवर्तित करके गाया जाता है, इसे रंगत–विधान कहते हैं।

प्रबन्ध गीतों में एक लम्बी कथा होती है। कोई–कोई कथा महाकाव्यों से भी स्पर्धा करती है। प्रबन्ध–गीतों में टेक होती है जिसे बार–बार दोहराया जाता है। दुहराने से गीत का अनंद बढ़ता है। कहीं–कहीं टेक पदों को सामूहिक रूप से

गाया जाता है। गवैया जब गीत की एक कड़ी गाता है तब समुदाय के अन्य लोग मिलकर टेक पदों की आवृत्ति करते हैं। प्रबन्ध गीतों में टेक की आवृत्ति कई प्रकार से की जाती है। वह टेक पद जो किसी गीत की प्रत्येक पंक्ति के बाद आता है, उसे बर्डेन कहा जाता है।

प्रबन्ध गीत में प्रत्येक नए पदय के बाद पूरे पदय की आवृत्ति होती है, इसे 'कोरस' कहा जाता है। राजस्थान के ओलूँ के गीतों में यह लक्षण पाया जाता है।

कुछ पदों की जब निश्चित स्थान तथा समय के पश्चात् आवृत्ति पाई जाती है तब इसे रिफ्रेन कहा जाता है।

लोक गीतों का महत्त्व—लोक गीत हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के अवशेष हैं। इसमें युगीन, परिस्थितियाँ प्रतिबिम्बत रहती है। समाज के प्रत्यक्ष पक्ष का इसमें सजीव चित्रण चित्रित रहता है। नारी के हृदय की विशालता, माँ की ममता, पति के वियोग में तड़पती पत्नी, प्रेमी से मिलन अथवा विरह, बच्चों का हास-परिहास, युवकों की आशाएँ आदि इन गीतों में वर्णित हैं। इसमें हमारे समाज की एक-एक अवस्था, सामूहिक विजय पराजय, प्रकृति के गीत, टोना-टोटका, दानव का मनन-चिन्तन सब का बड़ा ही मनोहारी चित्रण मिलता है। इन लोक गीतों का बड़ा ही महत्त्व है। यह महत्त्व, सांस्कृतिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, पौराणिक, भौगोलिक, आर्थिक, भाषा तथा भाषा विज्ञान सम्बन्धी सभी क्षेत्रों में है। लोक गीत मात्र गाँव का नहीं बल्कि पेशे के आधार पर भी गीतों को बाँटने की कोशिश की गई है। जैसे किसानों के गीत, मच्छेरों के, संस्कार, धार्मिक गीत आदि। लोक गीतों में जीवन की आशा-निराशा, हर्ष-विषाद, सुख-दुःख सभी भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है।

BA Semester 5th

Lok Sahitya

Unit 4th

Rahul Sharma

GDC Dudu Basantgarh

इकाई - चार

* निर्धारित पुस्तक -
* गीत धरा अम्बर के -
* डॉ. ओमप्रकाश गुप्त

–डोगरी लोक गीतों में श्रृंगार

–डोगरी लोक गीतों में प्रकृति चित्रण

–डोगरी लोक गीतों में सामाजिक चेतना

डोगरी लोक गीतों में सामाजिक जीवन का चित्रण–सुख–दुःख तथा समान परम्पराओं वाले मनुष्य–समुदाय को 'समाज' कहा जाता है। भले ही इस प्रकार के लोग अलग–अलग स्थानों में रहते हों फिर भी एक समाज के अंग कहे जाते हैं। विस्तृत अर्थ में समस्त जाति को ही मनुष्य कहा जा सकता है। समाज और साहित्य दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। समाज मनुष्यों से निर्मित होता है और व्यक्ति संगठन का ही नाम समाज है। डुग्गर का लोक समाज वर्ण व्यवस्था पर ही आधारित है। ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, क्षत्रिय चारों जाति के लोग डुग्गर में रहते हैं। ब्राह्मण में पण्डित और पुरोहित, वैश्य में गुप्त या गुप्ता, सुनार आदि, क्षत्रिय में राजपूत, ठाकुर, शूद्र में नाई, लौहार और धोबी।

हिन्दू परिवार संयुक्त परिवार का उदाहरण है। परिवार समाज की पहली इकाई है और व्यक्ति परिवार की। इस तरह व्यक्ति परिवार द्वारा नियन्त्रित रहता है। और परिवार समाज के द्वारा। साहित्य सृजन के पीछे सामाजिक परिस्थितियाँ किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान रहती हैं। साहित्य पर समाज का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। फिर भी लोक साहित्य तो अपने जीवन की विभिन्न

परिस्थितियों को उजागर करता है। डोगरी साहित्य में डुग्गर साहित्य समाज का महत्वपूर्ण स्थान है। डोगरी गीत डुग्गर समाज की अभिव्यक्ति का मुख्य साधन है और वह समाज पूँजी, जाति, धर्म आदि के आधार पर बँटा हुआ है। डोगरी लोक गीतों में डुग्गर समाज का चित्रण इस प्रकार से किया जा सकता है :

1. प्रेम वर्णन, 2. जीजा-साली का प्रेम, 3. देवर-भाभी का प्रेम, 4. विवाह उत्सव, 5. पति-पत्नी का प्रेम, 6. धार्मिक अवस्था, 7. पर्व-त्यौहार, 8. वर्गगत भेदभाव का चित्रण, 9. पति-पत्नी के झगड़े, 10. पतिव्रता स्त्री।

1. प्रेम वर्णन—लिंग प्राणियों में परस्पर प्रणय सम्बन्ध ही सृष्टि का मूल कारण है। प्रेम की उदारता भारतीय संस्कृति का मूल तत्त्व है। प्राचीनकाल से नारी और पुरुष एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते रहे हैं और उनमें प्रेम संबंध स्थापित हो जाते हैं। डोगरी लोक गीतों में डुग्गर समाज में व्याप्त नर-नारी के परस्पर प्रेम के विविध मुखी चित्र मिलते हैं। इन गीतों में प्रेम तथा छोटी-मोटी नोंक-झोंक का वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से हुआ है। ग्रामीण युवती मुखिया के पुत्र से विडिम्बत हो कर उसके पिता से शिकायत करती है वह पंक्तियां निम्न हैं :

''ओ चौधरी पुतरै की भी समझा
सूट ता मिकी लान नीं दिन्दा,
कजला ते ऐ मिकी पान नीं दिंदा,
रोकी खडोन्दा मेरी राह।''

2. जीजा-साली का प्रेम—आदिकाल से ही जीजा-साली के प्रेम का वर्णन होता आया है। आज सभ्यता के साथ-साथ सम्बन्धों का रूप भी बदल गया है और डुग्गर समाज भी इससे अछूता नहीं रहा। इन गीतों में भी ऐसी परिस्थितियां वर्णित हुई हैं जिसमें जीजा-साली के प्रेम के ज्वलन्त चित्र मिलते हैं। जैसे :

''जीजे स्हाडै नै पलंग डोआया
साली दे चोआड़ै।

सुन साली जी तुस इक वारी आओ,

सोने दे ओ बहाने।।"

3. देवर-भाभी का प्रेम—डोगरी लोक गीतों में भी देवर-भाभी के परस्पर प्रेम का वर्णन उसी प्रकार से हुआ है जैसे कि डुग्गर समाज में आम देखा जाता है। इसी तरह के गीत डुग्गर समाज की संयुक्त परम्परा को व्यंजित करते हैं। जैसे :

"आऊं बागै लुआनी शहतूत,

आऊं गुजरैटी तू राजपूत।

जोड़ी अजब बनी ओ दूयोरा

दूयोरा ओ मरैया लोभिया।"

4. विवाह उत्सव—डोगरी लोक गीतों में डुग्गर समाज में प्रचलित विवाह सम्बन्धी उत्सवों का वर्णन भी हुआ है उनमें से विदाई सम्बन्धी गीतों के भाव एवं स्वर सभी भीगे हुए होते हैं। डुग्गर प्रदेश में पुत्र की उपेक्षा पुत्री के प्रति अधिक प्रेम दिखाई देता है। माता के आंसुओं की धारा बेटी की विदाई के समय करुण क्रन्दन करती हुई फूट पड़ती है। जैसे :

"साम्बिये ररक्खयां माएं

गुड्डियाँ पटोले,

फिरी नी रोया माएं पित्ते दे ओले।"

5. पति-पत्नी का प्रेम—डुग्गर समाज में प्राय: सभी युवक फौज में नौकरी करते हैं और अपने घरों से दूर रहते हैं उनकी पत्नियां उनके वियोग में तड़पती हैं। उनकी ऐसी स्थिति को भी लोक गीतों में चित्रित किया गया है। वह अपने पति को पत्र लिख उसे घर बुलाते हुए कहती हैं :

"नाम कटाई घरै आइ जाओ

होरने सपाइये है चिटे-चिटे कपड़े

तू कज्जो कीता मैला भेस

ओ सपाइया।''

6. धार्मिक अवस्था–डुग्गर के लोग धार्मिक भावना में आस्था रखते हैं, हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा करते हैं तथा उनमें धार्मिक भावनाएं कूट-कूट कर भरी हुई हैं। यहाँ के लोग खास तौर पर माता वैष्णो देवी की पूजा करते हैं। यहाँ पर प्रत्येक धर्म के अनुयायी रहते हैं। धार्मिक दृष्टि से इनमें कहीं भी वैषम्य नहीं है :

''जोता जगदियां, शेरां वाली दे दरबार,

जोता जगदियां।''

7. पर्व-त्यौहार–डुग्गर समाज में अनेक त्यौहार मनाए जाते हैं। डुग्गर के प्रमुख त्यौहार हैं : होली, बैसाखी, दिवाली, लोहड़ी, नवरात्रे आदि। जैसे :

''फौगन म्हीनै आनी होलिये दी पुन्नैयां,

गोपिये रंगे दानी कपड़ै लाल वो।

बोली नरोमा मेरे सिरी भगवान।।''

8. वर्गगत भेदभाव का चित्रण–डुग्गर समाज भी जातीय वर्गगत भेदभाव की भावना से ग्रस्त हैं। भेदभाव में ऊँच-नीच की भावना, रक्त की शुद्धता का स्वाभिमान तथा वांशिक, स्वाभिमान विशेष रूप से काम करता है। यह स्वाभिमान मानव को मानव से जोड़ने की प्रक्रिया में बाधक सिद्ध होता है।

9. पति-पत्नी के झगड़े–परिवार पति-पत्नी और बच्चों के युग्म को कहते हैं। परिवार समाज की मूल इकाई होता है। डोगरी लोक गीतों में परिवार और परिवारों के अन्तर्गत पति-पत्नी में होने वाले झगड़ों का भी चित्रण किया जाता है। जैसे :

''यार, मिगी, मेरी घरै आली नै मारेया

चौकले नै मारेयां, बेलने ने मारेयां।

तबै कन्नै कीता मुंह काला।''

10. पतिव्रता स्त्री–डुग्गर समाज में पतिव्रता स्त्री की प्रशंसा भी कवियों ने की है। स्त्री, अपने पति के वियोग में सजती–सँवरती नहीं बल्कि अपने गृह–कार्यों में जुटी रहती है। राह चलता कोई मर्द उसे जेवरों, सुन्दर वस्त्रों और सुखी–घड़ियों का लालच देकर उसे अपने साथ आने का आमन्त्रण देता है, तो वह उसे झिड़क देती है। जैसे :

''अग्ग लग्गे तेरे गहनेयां,

जो नदिया रुडे तेरी पंचलड़ी।

जदुं ओग्ग गोरी दा कैन्त,

ता करनी सुख दी घड़ी।''

निष्कर्ष–निष्कर्ष रूप से यह कहा जाता है कि समस्त डोगरी लोक गीतों में सामाजिक जीवन का चित्रण व्यवहारिक ढंग से हुआ है। परिवार के सदस्य आपस में जो व्यवहार करते हैं समाज में वही व्यवहार विकीर्ण होता है। प्रस्तुत गीतों में विभिन्न रिश्तों का जो वर्णन हमारे सामने उपलब्ध होता है उससे समाज का समस्त चित्र हमारे हृदय–पटल पर अंकित हो जाता है। अतः डुग्गर जीवन के विभिन्न पहलू समस्त गुण दोषों सहित डुग्गर गीतों में प्रतिलिम्बित हुए हैं।

डोगरी लोक गीतों की परिभाषाएँ

1. ग्रशमि–'Folk song composes itself.' अर्थात् लोक गीत तो स्वतः जन्मा है।

2. फेयरी–'This primitive spontaneou music has been called folk song .' अर्थात् आदि मानव के उल्लासमय संगीत को ही लोक गीत कहते हैं।

डोगरी लोक गीतों में संस्कृति का चित्रण–संस्कृति हमारे देश का प्राण है। संस्कृति एक व्यापक शब्द है। इसके अन्तर्गत धर्म, साहित्य, इतिहास, दर्शन,

परम्परा, विश्वास, यात्राएँ, पर्व–त्यौहार, मनोरंजन इत्यादि सब कुछ आता है। संस्कृति कोई सौ या पचास वर्ष की साधना नहीं है, मानव के लाखों वर्षों की परीक्षाओं का फल है।

संस्कृति की भी एक आयु होती है। उसमें उत्तरोत्तर परिवर्तन सामाजिक परिस्थितियाँ लाती हैं। डोगरी संस्कृति भी 500–600 वर्षों का इतिहास रखती है जबकि हिन्दी का जन्म 1050 में हुआ तो डोगरी का पहाड़ी और पंजाबी भाषाओं में 14वीं शताब्दी में हुआ। उससे पीछे कोई भी संस्कृति का चिन्ह नहीं मिलता। डोगरी लोक गीतों में सामान्यतः संस्कृति का धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का रमणीय चित्रण हुआ है जो निम्नलिखित है :

1. धर्म की भावना–धार्मिक जीवन की सरिता आज भी अपनी अक्षुष्ण गति से प्रवाहित हो रही है। ग्रामीण स्त्रियाँ आज भी उसी प्रकार से व्रत रखती हैं और अपनी कामनाओं की सिद्धि के लिए देवताओं की पूजा करती हैं। जिस प्रकार से प्राचीनकाल में की जाती थी। ग्रामीण लोग देवी देवताओं पर अटल विश्वास करते थे उनमें से 'शिवजी' अधिक प्रचलित थे। नागों की पूजा – जैसे – सुरगल, बासु के भैड़, नाग और उन नागों की पूजा से होती चली आ रही है। जैसे :

'भैड़ दी कारक' में देखिए :

'ओतरे दे कर पुत्तर दीन्दा।'

राधा–कृष्ण की भक्ति भी बहुत मिलती है :

'राधिके! रस्ते च मदन गोपाल खड़े।'

2. वैराग्य की भावना–संसार और जीवन की असार्थकता मूर्खों को भी प्रभावित करती है। जब भी वह अपने पूर्वजों के नाम सुनते हैं और सम्बन्धियों को मरते देखते हैं तो कह उठते हैं कि – संसार में कुछ और भी तत्त्व है – यह स्वप्न समान है।

"ए जिन्द दौ दिनें दी परौहनी ओ

इक दिन चिट्ठी कुसै बरागी बाली औनी ओ।

सांब सांब रक्खिये मैहल चबारे

इक दिन रात जंगल विच औनीओ।"

3. ईश्वर में विश्वास–डोगरी संस्कृति में भाग्यवाद ईश्वर की विश्वास प्रधान वस्तु है। ग्रामीण लोग बात-बात पर ईश्वर का नाम लेते हैं। और उसकी शपथ खाते हैं। वैसे उनका जीवन कुछ सच्चा होता है। भाग्य विश्वास पर वे कठोर से कठोर आघातों को भी सहन कर लेते हैं।

4. विवाह आदि संस्कार–यह हमारी संस्कृति का एक मुख्य अंग है। डोगरी लोक गीतों में विवाह का वर्णन बड़ा रोचक होता है। ग्रामीण अशिक्षित लड़कियाँ केवल पति का मुख देखती हैं और बड़ा पछतावा करती हैं। जैसे :

"बावल इक मिगी पच्छोता बड़ा।

अऊं ते हां गोरी वर सांवला।।"

पिता उसे समझाता है :

"बेटी ना कर तू पच्छोता बड़ा।

ए राधा गोरी शाम सांवला।।"

5. सामाजिक जीवन का चित्रण–डोगरी लोक गीतों में हिन्दू-परिवार संयुक्त परिवार का आदर्श उदाहरण है। यहाँ पिता-पुत्र, माता-पुत्री, भाई-बहन, सास-बहू, पति-पत्नी, ननंद-भावज सभी आनन्द से एक साथ निवास करते हैं। पति-पत्नी के आदर्श प्रेम की झांकी भी हमें लोक गीतों में देखने को मिलती है।

6. आदर्श सतीत्त्व–सतीत्त्व की रक्षा के लिए स्त्रियों ने अपने किन-किन कष्टों को नहीं उठाया। उन्होंने अपनी कंचन काया को धधकती हुई आग में जलाकर जौहर व्रत के द्वारा अपने सती का जौहर दिखलाया। हमारी संस्कृति में नारियों के लिए पतिव्रत धर्म को तप कहा गया है। प्रायः बहुत-सी नारियाँ

अभावग्रस्त होते हुए भी इसका पालन करती हैं। जैसे – कोई पुरुष नारियों को आभूषणों का लालच देता है तो वह उसकी निन्दा करती हैं :

''अग्ग लग्गै तेरे गहनेयां,
जो नदियां रूडै तेरी पंचलड़ी।
जंदु ओंग्गा गोरी दा कैन्त,
ता करनी सुख दी घड़ी।''

जिससे पुरुष भी उसके मनोभाव देखकर बदल जाता है और बड़ी कठिनाई से उससे पीछा छुड़ाता है।

7. विरह में प्रेम की पराकाष्ठा–कोई युवती वियोग में सूख कर ढाँचा हो जाती है और कोई कहती है कि अधिक जीवन का लाभ नहीं है। ज्यों-ज्यों आगे बढ़ो त्यों-त्यों सुख के स्थान पर दु:ख ही आते हैं। जैसे :

''नीकी होंदी सरीजदी,
मूकी जंहे दुख हो।''

8. आर्थिक पक्ष का चित्रण–डोगरी लोक गीतों में सामाजिक पक्ष के साथ-साथ ही आर्थिक पक्ष का भी चित्रांकन हुआ है। जहाँ एक तरफ ग्रामीण जीवन में सुख और समृद्धि का सागर हिल्लौरे मार रहा है वहीं दूसरी ओर हीनता, दीनता, निर्धनता का वीभत्स कंकाल सामने दिखाई पड़ता है। कहने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि सुख-दु:ख, आशा-निराशा, दैन्य दीनता, विलास-वैभव के दोनों पक्षों का वर्णन लोक संस्कृति में पाया जाता है।

9. किसान जीवन की साध–भारतीय किसान का जीवन बड़ा ही सीधा, सरल होता है। वह थोड़े में संतोष प्राप्त कर सुखी जीवन व्यतीत करता है। विद्वानों ने कहा है कि 'सन्तोष परम सुखम' अर्थात् संतोष ही सबसे बड़ा सुख है।

''थोड़े में निर्वाह यहाँ
ऐसी सुविधा और कहाँ।''

उपर्युक्त उदाहरण में कवि कहता है कि गाँव के लोग साठी के चावल का मीठा भात खाते हैं, सरसों का साग और मीठी सजाव, दहीं का स्वाद लेते हैं। इस प्रकार वह थोड़े से ही व्यय में मीठा तथा स्वादिष्ट भोजन करते हैं।

10. पर्व-उत्सव–डोगरी संस्कृति में इन्हें बड़े उत्साह से अभिनंदित किया जाता है। जैसे नवरात्रों के दिनों में भगवती की स्तुतियाँ पढ़ी जाती हैं और उत्सव का एक व्रत रस बन जाता है :

''माता दे दरबार अकबर आया
सोने दा छत्तर चढ़ाया।''

11. निर्धनता का वर्णन–

''टुटही मंडिया बुनिया टपकइऐ
के सुधि ले बै हमार?
जेठा छवावई आपन बंगलवा
देवरा छवानै चौपार''

उपर्युक्त गीत में दुखिया स्त्री के निर्धन जीवन का मर्म स्पर्शी चित्रण प्रस्तुत किया गया है। गाँव में गरीबों के लिए न रहने के लिए झोंपड़ी, न पहनने के लिए वस्त्र अपनी गरीबी का वर्णन करती हुई कहती है मेरा छप्पर टूटा हुआ है, वर्षा की बूँदें टपक रही हैं, मेरी सुधि लेने वाला कोई नहीं। मेरा जेठ अपना बंगला छवाता है और देवर चौपार छवाता है। उपर्युक्त गीत में स्त्री ऐसी ही गरीबी की मूर्तिमय प्रतिनिधि है।

निष्कर्ष–निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि यही डोगरी संस्कृति है जिसमें कला, दर्शन, विज्ञान गुण आदि हैं। डोगरी लोक गीतों में ग्रामीण संस्कृति का सुन्दर चित्रण हुआ है। इसमें सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि प्रथाओं की प्रधानता है। ग्रामों में यह संस्कृति की बातें पूर्णतः लागू होती हैं।

डोगरी लोक-गीतों में शृंगार-वर्णन–डोगरी साहित्य सीमित है। इसमें केवल सौ-पचास वर्ग मील का ही साहित्य आता है। जम्मू से एक ओर उधमपुर तक में और पश्चिम में शमजोड़ियों तक पूर्व में कांगड़ा तक इसका प्रचार है। इसमें शृंगार, भक्ति आदि सभी विषय है। इसमें शृंगार का वर्णन शिष्ट नहीं है क्योंकि यह लोक साहित्य है। यदि इसमें शिष्ट काव्य गुण आ जाएं तो फिर उसका लोक साहित्य गुण नष्ट हो जाता है। डोगरी में शृंगार वर्णन वहाँ साधारण हैं जिन कविताओं में किसी सती नारी के विचार हों, वह कविता भी अपना फुहड़पन लिए रहती हैं।

भरतमुनि ने शृंगार को रस राज माना है। उनकी परिभाषा है **:** ''जो कुछ लोक में पवित्र, उत्तम, उज्ज्वल एवं दर्शनीय है वह शृंगार रस कहलाता है।'' इसका आधार 'प्रेम' है और जीवन में प्रेम का स्थान सर्वोच्च है। पुरुष तथा नारी का एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होना एक बहुत बड़ी सच्चाई है। यही आकर्षण प्रेम तथा शृंगार का जनक है। डोगरी में शृंगार के आठ रूप मिलते हैं **:**

1. अधिकतर वियोग शृंगार
2. नख-शिख वर्णन
3. रसाभास
4. संयोग शृंगार
5. नर-नारी का संघर्ष
6. प्रेम में लम्पटता
7. शुद्ध प्रेम का अभाव
8. अनमेल-विवाह का संताप

1. वियोग शृंगार–जब नायक और नायिका परस्पर वियुक्त हों, वे इच्छा होने पर भी न मिल सके, ऐसे प्रेम का वर्णन 'वियोग शृंगार' कहलाता है। 'विप्रलंभ' और 'विरह' भी इसका पर्याय है।

डोगरी लोक गीतों में वियोगनियाँ बड़ी कहराती हैं और स्मृतियों में डूबी रहती हैं। वियोग में स्मृतियों का बड़ा काम रहता है। कोई भी वियोगिनी आग-पाक आदि अपनी वाटिका में रखती है और उसकी स्मृतियाँ बड़ी तेज़ हो जाती हैं :

जैसे : ''अम्ब पक्के राविया पार ते नेयी पेइयां डालियां।
औंदे पहाड़ी लोक मरोड़ी जंदे डालियां।।''

2. नख-शिख वर्णन–इसके अन्तर्गत नारी के सम्पूर्ण अंगों का वर्णन किया जाता है। यहाँ नायक किसी सुन्दरी की सुन्दरता की बड़ी प्रशंसा करता हुआ कहता है :

''सोहने तेरे दंद गोरिए
हस्सने बिना नई रौहन्दे।
सोहने तेरे हत्थ गोरिए,
खेड़ने बिना नई रौहन्दे।''

3. रसाभास–इसके अन्तर्गत ऊँची जाति के पुरुष का छोटी जाति की नारी से प्रेम होता है तो नारी अपने पुराने संस्कारों से पीछे-पीछे हटती है। जैसे :

''अउं बागें लुआन्नीं शहतूत
अउं गुजरे री तूं राजपूत।''

4. संयोग श्रृंगार–संयोग पक्ष में नायक और नायिका के परस्पर मिलन, प्रेमपूर्वक वार्तालाप, दर्शन स्पर्श आदि का वर्णन होता है। डोगरी लोक गीतों में नायिका नायक से मिलती है तो उसका हर्षोल्लास बढ़ जाता है। नायक को बुलाने के लिए आधी रात्रि के समय नायक उसे पुकारता है, नायक की आवाज़ सुनते ही नायिका का हृदय कमल के फूल की भान्ति खिल उठता है। जैसे :

''अदी रातीं चन्न घरोंदे

सज्जने छिता आला,

ओ सज्जने दिव्ता आला।

सुत्ती दी आउं खड़ी–खड़ोती

चन्न चढ़ेया पुन्नेयां वाला।''

5. नर–नारी का संघर्ष–कहीं ग्रामीण पति–पत्नी के प्रेम में सास–ननद के बीच आ जाने से घर में बड़ा संघर्ष होता है और नारी पुरुष को डाँटती है :

''तेरे कन्ने ब्होई के, मैं सुख पाया केह

नेई चज्जो दा टल्ला कोई लाया

नेई कोई सूट बनवाया।

लोके दिया लाडियां करन शकीनिया, मैं गल खद्दड़ पाया।''

इस पर पुरुष उसे कहता है :

''चंगा चोखा तू खन्नी ऐं, लान्नी ऐं,

फिरी बी तू मिकी कैं घुरकानी ऐं।

तेरे जनेहई मैं कोई निं दिक्खी

नखरे बाज जनानी ऐं।''

6. प्रेम में लम्पटता–कोई पुरुष किसी नारी को बड़ा लोप दिखाता है और उसे अपने धर्म से गिराना चाहता है। जैसे :

''सहौरे तेरे गी तख्त बठामां,

बैठा दा राज कमावै जी।

सस्सू तेरे गी पलंग बठामां,

बैठे दी चरखा कत्ते।

ननंद तेरी दा ब्याह करामां,

मुड इस नगरी निं आवै जड़ी।''

7. शुद्ध प्रेम का अभाव–डुग्गर के लोगों में प्राय: शुद्ध प्रेम का अभाव देखने को मिलता है। गांव में खाने-ओढ़ने के लिए ही प्रेम होता है और बड़ा महाभारत मचा रहता है। जैसे :

''बारह बजे ते पन्द्रह मिनट

मिकी सूट सोआई दे रडी मेड़

वे बालमा जो रहाड़ी तां नई निबनी''

8. अनमेल-विवाह–उदाहरणता यहां प्रेम नहीं रहता। कोई कुमारी पति की आकृति देखकर बड़ा दु:खी होती है और पति को पीट भी देती है। पुरुष कहता है : ''यार मिगी करे आली ने मारेया।''

स्त्री कहती है : बुड्ढ़ा गल्ल पेयागे

वैरने सहेली बुड्ढ़ा मंगल वलटोइयां बुड्ढ़े ने चाढ़या डब्बा।

निष्कर्ष–उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि डोगरी लोकगीतों में दाम्पत्य श्रृंगार का चित्रण अधिक हुआ है। इन गीतों में चित्रित दाम्पत्य श्रृंगार में भाव विहलता है, परन्तु अश्लीलता नहीं है। यहाँ दाम्पत्य जीवन की सहज गम्भीरता और उत्तरदायित्व की भावना से परिपूर्ण प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है।

डोगरी लोक गीतों में प्रकृति-चित्रण–गंगा और हिमालय के इस देश में नारियों को माँ तथा पर्वतों को पिता के रूप में देखा जाता रहा है। प्रकृति हमारी जन्म दात्री के रूप में पूजी जाती रही है। हिन्दी साहित्य में भी इन सभी सन्दर्भों को सहज ही देखा गया।

प्रकृति और मानव का अखण्ड सम्बन्ध है। मानव में प्रकृति के मोह में पलकर उसके रूपों को झेला है, आत्मसात किया है और उनके साथ अपना सामजस्य स्थापित किया है। मानव स्वयं प्रकृति का एक अंग है। उसने प्रकृति से

प्रेरणा पाई है और उसी से प्रेरणा पाकर अपने जीवन दर्शन का निर्माण किया है।

आदिकाल से ही मानव का प्रकृति के साथ सीधा सम्पर्क रहा है। वह प्रकृति की गोद में पला, उससे शरण प्राप्त की है। कोई असभ्य व्यक्ति भी प्रकृति के सौन्दर्य से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। गुफाओं, पहाड़ों, कन्द्राओं में रहते हुए उसने अपने जीवन की रक्षा की। वृक्षों के फूलों, फलों पत्तों, जड़ों से उसने खुराक हासिल की, शरीर को ढका है, खाना बनाने के लिए इन्धन पैदा किया है। भाव यह है कि प्रकृति से उसने जीवन की रक्षा के लिए उत्पादन भी प्राप्त किए हैं और जीवन जीना भी सीखा है।

आदिकाल से ही मनुष्य ने अपने हृदय के विविध भावों की अभिव्यक्ति के लिए कुछ विशेष शैलियों का सहारा लिया।

1. प्रकृति का मानवीकरण, 2. प्रकृति का आलंबन रूप, 3. उद्दीपन, 4. उपदेशात्मक, 5. प्रकृति का कलात्मक रूप, 6. अप्रस्तुत विधान के लिए प्रकृति का चित्र, 7. ऋतु वर्णन।

1. प्रकृति का मानवीकरण–प्रकृति का मानवीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से लोक कवि अपने मन के भावों को प्रकृति के इन विभिन्न उपकरणों पर आरोपित कर देता है। इसमें प्रकृति के विभिन्न उपकरण मानव की भान्ति हँसते–बोलते मनुष्य की मनोभावना को प्रकट करते हैं। डोगरी लोक गीतों में प्रकृति का मानवीकरण स्थलों पर हुआ है –

कौए का मानवीकरण भाई से

‘‘उड्ड ओ कालेया कामाँ तुगी चूरियाँ खलाँ।

जायाँ बीरा मेरे प्योकड़े ग्राँ।।

उच्चियाँ निं कँदा कागा सौहने बनेरे।

उए निं कागा मेरे प्योकड़े।।’’

2. प्रकृति का आलंबन रूप–डोगरी लोक गीतों में प्रकृति को आलंबन

रूप बनाकर मानव–मन की अनेक भावनाओं को प्रकट किया गया है। प्रकृति के आलंबन रूप से ही पता चलता है कि डुग्गर प्रदेश में वनस्पति जगत –पशु, पक्षी, धरती तथा मैदानों का लोक जीवन पर क्या प्रभाव है। इन लोक गीतों द्वारा डुगार क्षेत्र के भौगोलिक रूप, जल–वायु तथा रहन–सहन का पता चलता है :

''किकरिये कण्डयारि ये तेरी ठण्डी–ठण्डी छां।''

3. प्रकृति का उद्दीपन रूप–प्रकृति मानव मन की अनेक भावनाओं को उद्दीपन करती है। डोगरी लोक गीतों में भी प्रकृति–चित्रण की इस शैली को अपनाया गया है। कलख करते हुए पक्षी, कल कल करती हुई नदियाँ, प्राकृतिक दृश्य डुग्गर क्षेत्र के लोक मानस की आकांक्षाओं राग–विराग, हास्य–विलास आदि से जुड़ी हुई अनेक भावनाओं को प्रेरित करते हैं, प्रकृति का यह रूप डोगरी लोक गीत में अधिकांश मिलता है :

''डुग्गर नाले दी जिन्दगी मेरी
गले लग्गो रोई–रोई
रोयी–रोयी मेरे नैन थकी गए
अथखएं गोद भरोई
लट्ठे दी चादर दाग लग्गै दा
नि जन्दा तोयी–तोयी।''

इसमें लट्ठे की चादर पर से दाग न जाना पवित्र मन में बसे वियोग का न मिटना है।

4. उपदेशात्मक रूप–प्रकृति का उपदेशात्मक के रूप में भी डोगरी लोक गीतों में चित्रण हुआ है। लेकिन प्रकृति का ऐसा चित्रण कम ही हुआ है।

5. प्रकृति का कलात्मक चित्रण–इन गीतों में प्रकृति का चित्रण कलात्मक अलंकरण के रूप में भी हुआ है। अनेक प्रकार के रूपक बिम्ब, प्रतीक आदि प्रकृति से लिए गए हैं और इनके द्वारा लोक कवियों ने लोक मानस की अनेक

मूल भावनाओं का मूर्तिकरण किया है। मानव-मन के क्रिया व्यापारों को दिखाने के लिए प्रकृति से सम्बन्धी वस्तुओं को रूप के तौर पर इस्तेमाल किया गया है। जैसे - 'चन्न' कविता है। इसमें कोई वियोगनी अपने पति को चन्न कहकर सम्बोधित कर रही है।

''चन्न म्हाड़ा चढ़ेया प्हाड़ै दिया कंदरा।

सुक्की गेइयै जान मेरी, रेइ गया पिंजरा।''

6. अप्रस्तुत विधान के लिए प्रकृति का चित्रण—वस्तुतः प्रतीक, बिम्ब और रूपक आदि अप्रस्तुत विधान के ही अंग हैं लेकिन कहीं-कहीं प्रकृति के यथातथ्य वर्णन को बहाना बनाकर लोक कवियों ने मानव रूप के सुख-दुःख को अभिव्यक्त किया है। जैसे :

''कनक पक्कीं घर आयाँ लोभिया।''

7. ऋतु वर्णन शैली—डोगरी लोक गीतों में मुख्यतः चार ऋतुओं का उल्लेख मिलता है :

(1) वर्षा ऋतु—डोगरी लोक गीतों में वर्षा ऋतु का वर्णन अधिक मिलता है। इन दिनों आकाश बादलों से घिरे रहते हैं जैसे : ''घिरी घटा घनघोर ठण्डियाँ बूँदा पेइयां।''

या

''ओ बद्‌दल बरेया वे लोकों दे बूँदा पेइया वे लोका

ते डोल गबाचा वे लोक।''

वर्षा ऋतु बड़ी सुहावनी होती है। वर्षा की बूँदें बिंदल मोती (माथे की बिंदिया) मोटी जैसी होती हैं, काजल जैसी स्याह मूसलाधार बारिश होती है।

(2) शरद ऋतु—इन दिनों पर्वत के ऊपर बर्फ पड़ती है और यह ऋतु ठण्डी होती है। जैसे - ''बिच सयालै ओंऊ सीतें भरी जन्मिय, साड़ी गली बलआ।'' इसे विरहणी शीत से कांपती है तो मन को लगाने के लिए प्रेमी याद

करती है।

(3) ग्रीष्म ॠतु–डुग्गर में ग्रीष्म का प्रभाव भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में विभिन्न पड़ता है। कण्ड़ी क्षेत्र का वर्णन इस प्रकार से दिया गया है :

''कण्ड़ी बो देसै दे पानी बो तत्तले।

अली बो जंदे गोरी दे होंठ बो पतले।।''

(4) बसंत ॠतु–डुग्गर क्षेत्र में बसंत ॠतु का बड़ा महत्त्व है। इन दिनों पुष्पों की सुगन्धि से वातावरण उल्लासमय बन जाता है। वृक्षों पर नए-नए फूल-पत्ते खिल उठते हैं चारों ओर हरियाली छा जाती है। जैसे-

''चैत्तस म्हीनै फुल्ल खिडे

स्हाड़े किल्लिया कत्माईगे हार अडिसे।''

दृश्य-चित्रण–इसमें दृश्य चित्रण किया गया है जैसे :

''सैलिए-पीलिए बदलिए

बरी जायां अजै दी रात।''

सावन महीने वर्षा होती है, नदी में बाढ़ आती है तो नायिका नदी पार करने के लिए नायक को पुकार उठती है। नायक के मन में भी वासना जागृत हो उठती है। प्रकृति दृश्य और परिवेश ही ऐसा है कि वह संयमित नहीं रख पाता।

निष्कर्ष–उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि डोगरी लोक गीतों में प्रकृति चित्रण का अपना विशेष स्थान है। डुग्गर क्षेत्र में लोक मानस को प्रकृति ने जितना अधिक प्रसारित किया है उतना ही सुन्दर प्रकृति चित्रण लोक-गीतों में हुआ है।

वर्णन की दृष्टि से यह अनमोल गीत शून्य नहीं कहे जा सकते। उनमें डुग्गर में पनपने वाली प्रत्येक प्राकृतिक सुन्दरता, जड़ी बूटी, बेल, बूटे, पशु-पक्षी आदि का वर्णन हुआ है। अतः हम यह कह सकते हैं कि प्रकृति वर्णन की दृष्टि से यह साहित्य शून्य नहीं हैं।

E. CONTENT
B.A. SEMESTER –V
ABILITY ENHANCEMENT COMPULSORY COURSE (AECC)
COURSE CODE – UHILTS – 501
TITLE – कम्प्यूटर शिक्षण
इकाई : एक एवं इकाई : तीन

1 इकाई एक :–
कम्प्यूटर : अर्थ एवं परिभाषा कम्प्यूटर के प्रकार
कम्प्यूटर : परिचयात्मक इतिहास (कम्प्यूटर की विभिन्न पीढ़ियों का विकास)
कम्प्यूटर : विशेषताएं , महत्व , दोष (कमियां)

2 इकाई तीन :
कम्प्यूटर और इंटरनेट का सम्बन्ध
इंटरनेट : महत्व एवं दोष
ई – मेल : अभिप्राय एवं प्रक्रिया

प्रो राकेश शर्मा
राजकीय महाविद्यालय
हीरानगर (कठुआ)

कंम्प्यूटर क्या है ? (What is Computer)

" Computer" शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के
' Computare' शब्द से हुई है , जिसका अर्थ है – गणना करना । कंप्यूटर को हिंदी में " संगणक " कहा जाता है कंप्यूटर एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण (Electronic Device) है , जो उपयोगकर्ता से डेटा (Data) और निर्देशों (Instructions) के रुप में इनपुट (Input) प्राप्त करता है । एक बार इनपुट डेटा प्राप्त होने के बाद , यह डेटा की प्रोसेसिंग (Processing) शुरु कर देता है और उपयोगकर्ता के निर्देशों के अनुसार हमें आउटपुट (Output) प्रदान करता है ।

सरल शब्दों में , हम यह भी कह सकते हैं कि कम्प्यूटर एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण (Elextronic Device) है जो डेटा (Data) इनपुट (Input) के रुप में लेता है उसे प्रोसेस (Process) करता है तथा परिणामों (Results) को आउटपुट (Output) के रुप में हमे प्रदान करता है ।

कंप्यूटर की परिभाषा ?

“ कंप्यूटर एक इलेक्ट्रॉनिक मशीन है जो यूजर द्वारा इनपुट के रुप में डाटा और निर्देश लेकर उसे प्रोसेस करके मीनिंगफुल (सार्थक) इनफार्मेशन यानि सूचना प्रदान करता है । ”

“ कंप्यूटर एक इलेक्ट्रॉनिक मशीन है जिसका उपयोग गणना , प्रक्रिया , यांत्रिकी , अनुसंधान , शोध आदि में किया जाता है । कंप्यूटर हार्डवेयर (Hardware) और सॉफ्टवेयर (Software) का एक संयोजन होता है जो डेटा को सूचना में परिवर्तित करता है । ”

- प्रोसेसिंग (Processing) : कंप्यूटर द्वारा हाडेवेयर (Hardware) और सॉफ्टवेयर (Software) की सहायता से की जाने वाली प्रोसेसिंग (Processing) जिसके परिणामस्वरुप आउटपुट (Output) प्राप्त होता है , उस प्रक्रिया को प्रोसेसिंग कहा जाता है ।

- आउटपुट (Output) : कंप्यूटर द्वारा प्राप्त परिणाम (Result) को आउटपुट कहा जाता है ।

- स्टोरेज (Storage) : विभिन्न स्टोरेज डिवाइस (Storage Device) जैसे हार्ड डिस्क , सॉलिड –स्टेट ड्राइव , पेन ड्राइव , ऑप्टिकल , डिस्क आदि का उपयोग करके कंप्यूटर द्वारा प्राप्त परिणामों को सुरक्षित करने के प्रक्रिया को स्टोरेज कहा जाता है ।

कंप्यूटर के जनक कौन हैं ? (Who is the Father of Computer)

‘चार्ल्स बैबेज‘ (Charles Babbage) एक ब्रिटिश गणितज्ञ (British Mathematician) थे । चार्ल्स बैबेज का जन्म 26 नवंबर 1791 को हुआ था । 1837 में एलालिटिकल इंजन (Analytical Engine) के आविष्कार और अवधारणा के बाद , उन्हें ‘ कंप्यूटर का पिता ‘ (फादर ऑफ कंप्यूटर) कहा जाता है ।

उन्होंने 1822 में पहला मैकेनिकल कंप्यूटर (Mechanical Computer) बनाया था । जिसे हम डिफरेंस इजन (Difference Engine) के नाम से जानते हैं । जिसके आधार पर आज के सभी कंप्यूटर काम कर रहे हैं , ‘ चार्ल्स बैबेज‘ को ‘ कंप्यूटर का जनक‘ कहा जाता है । हालाँकि शुरु में उन्हें गणित (Mathematics) पसंद था , ऐसे में उन्होंने गणित की बड़ी गणना

(Calculations) को हल करने के लिए ' कंप्यूटर' (Computer) मशीन बनाई थी ।

चार्ल्स बेवेज की डिजिटल प्रोग्रमेबल कंप्यूटर (Digital Programmable Computer) की अवधारणा आधुनिक कंप्यूटरों का आधार बन गई , और इसी कारण चार्ल्स बेवेज को कंप्यूटर का जनक (Father of Computer) कहा जाता है । चार्ल्स बैबेज ने 1837 में एक स्वचालित कंप्यूटर सिस्टम (Automated Computer System) बनाने की कल्पना की थी ।

कंप्यूटर के विभिन्न प्रकार (Types of Computer)
कंप्यूटर के प्रकार मुख्य रुप से तीन भागों में विभाजित हैं ।

1 कार्यप्रणाली के आधार पर (Based on Work)
2 उदेश्य के आधार पर (Based on Purpose)
3 आकार के आधार पर (Based on Size)

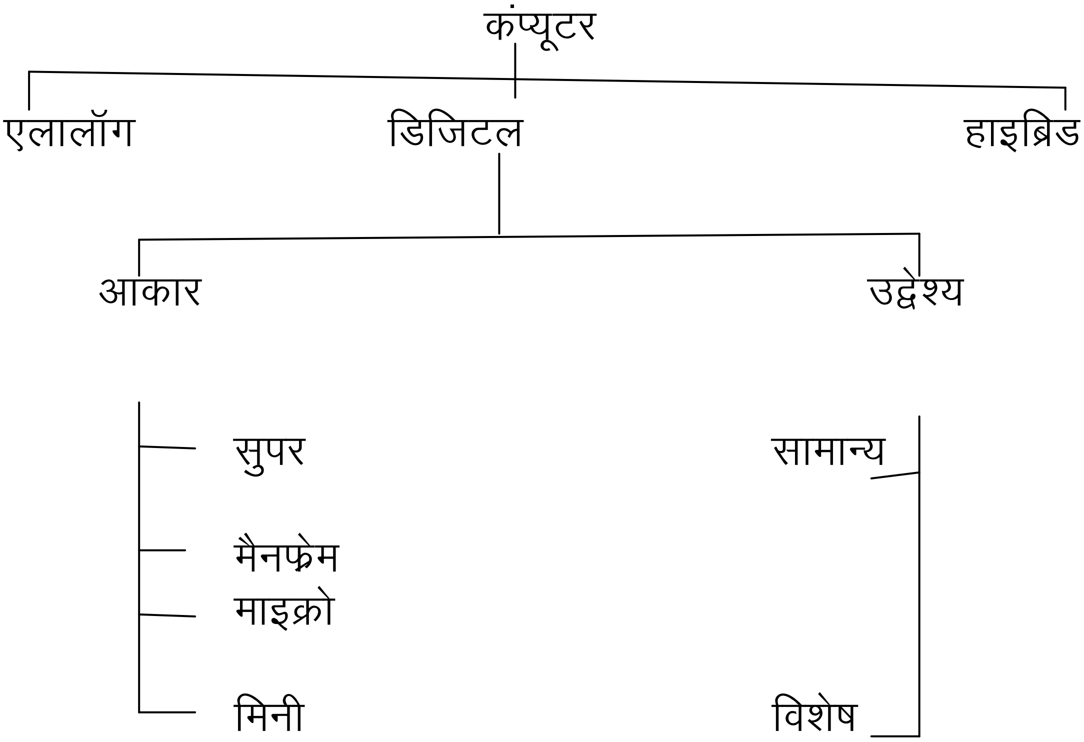

कार्यप्रणाली के आधार पर (Based on Work)

- एनालॉग कंप्यूटर (Analog Computer) : एनालॉग कंप्यूटर ऐसे कंप्यूटर सिस्टम होते हैं जो दबाव (Pressure) , तापमान (Temperature) , वोल्टेज (Voltage) , गति (Speed) आदि जैसी मात्राओं को मापते हैं । एनालॉग कंप्यूटर भौतिक मात्राओं (Physical Quantities) को मापने के लिए जाने जाते हैं जो लगातार बदलते रहते हैं । एनालॉग कंप्यूटर के उदाहरणों में वोल्टमीटर (Voltmeter) और अमीटर (Ammeter) शामिल हैं ।
- डिजिटल कंप्यूटर (Digital Computer) : डिजिटल कंप्यूटर वैसे कंप्यूटर सिस्टम हैं जो कि एनालॉग कंप्यूटर के विपरीत बाइनरी नंबर सिस्टम (Binary Number System) का उपयोग करते हैं । दूसरे शब्दों में , डिजिटल कंप्यूटर में , सभी डेटा को 0 और 1 के रुप में प्रोसेस किया जाता है । यह कंप्यूटर का सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाना वाला प्रकार है । आज डिजिटल कंप्यूटर ने एनालॉग कंप्यूटर (Analog Computer) की जगह ले ली है ।
- हाइब्रिड कंप्यूटर (Hybrid Computer) : हाइब्रिड कंप्यूटर , जैसा कि नाम से पता चलता है , एनालॉग कंप्यूटर (Analog Computer) के साथ –साथ डिजिटल कंप्यूटर (Digital Computer) का भी काम कर सकता है । हाइब्रिड कंप्यूटर में एनालॉग और डिजिटल कंप्यूटर दोनों की कार्यक्षमता होती है । हाइब्रिड कंप्यूटर दोनों की कार्य क्षमता होती है । हाइर्बिउ कंप्यूटर का उपयोग वैज्ञानिक गणना (Scientific Calculations) के लिए , बडे उद्योगों (Large Industries) में और रक्षा प्रणालियों (Defense Systems) में किया जाता है ।

उद्वेश्य के आधार पर (Based on Purpose)

- सामान्य कंप्यूटर (General Purpose Computer) : सामान्य उद्वेश्य कंप्यूटर का उपयोग करके दैनिक जीवन के विभिन्न कार्यों को पूरा किया जा सकता है : उदाहरण के लिए , लेखन और संपादन (Word Processing) , इंटरनेट ब्राउज़िंग (Internet Browsing) , मनोरंजन (Entertainment) और गेम खेलना (Playing Games) आदि । डेस्कटॉप (Desktop) , नोटबुक (Notebook) , स्मार्टफोन (Smartphone) और टैबलेट (Tablet) सभी सामान्य उद्वेश्य कंप्यूटर के उदाहरण हैं ।
- विशेष कंप्यूटर (Special Purpose Computer) : विशेष उद्वेश्य कंप्यूटर एक विशेष समस्या को हल करने के लिए डिज़ाइन किए हाते हैं । इसलिए उन्हें विशेष कंप्यूटर के रुप में जाना जाता है क्योंकि इन कंप्यूटरों का उपयोग किसी विशेष कार्य को करने के लिए किया जाता है ।

आकार के आधार पर (Based on Size)

- सुपर कंप्यूटर (Super Computer) : सुपर कंप्यूटर दुनिया का सबसे तेज कंप्यूटर होता हैं जो सामान्य कंप्यूटर की तुलना में बहुत तेजी से डेटा की प्रोसेसिंग करता हैं । सुपर कंप्यूटर बहुत महंगे (Expensive) होते हैं और विशेष अनुप्रयोगों (Special Applications) के लिए उपयोग किए जाते हैं

- मनेफ्रेम कंप्यूटर (Mainframe Computer) : मेनफ्रेम एक प्रकार का कंप्यूटर होता है जिसका उपयोग बड़े संगठनों द्वारा मुख्य रुप से महत्वपूर्ण अनुप्रयोगों के लिए किया जाता है , जिन्हे उच डेटा प्रोसेसिंग की आवश्यकता होती है ।

- माइक्रो कंप्यूटर (Microcomputer) : माइक्रो कंप्यूटर एक कंप्यूटर होता है जो अपनी सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (CPU) के रुप में एक माइक्रोप्रोसेसर (Microprocessor) का उपयोग करता है । माइक्रको कंप्यूटर एक छोटा , अपेक्षाकृत सस्ता और आकर्षक कंप्यूटर होता है , जिसे व्यक्तिगत उपयोग के लिए डिज़ाइन किया गया है ।

मिनी कंप्यूटर (Mini Computer) : मिनी कंप्यूटर एक प्रकार का कंप्यूटर होता है जिसमें बड़े कंप्यूटर की अधिकांश विशेषताएं और क्षमताएं होती हैं लेकिन आकार में छोटा होता है । मिनी –कंप्यूटर का आकार माइक्रो कंप्यूटर और मेनफ्रेम कंप्यूटर के बीच होता है । मिनीकंप्यूटर को एक मिड–रेंज कंप्यूटर भी कहा जाता हे

कंप्यूटर की संरचना (Computer Architecture) अथवा कम्प्यूटर के महत्वपूर्ण भाग

जैसा कि हम जानते हैं , कंप्यूटर एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है जिसका उपयोग डेटा को प्रोसेस करने के लिए किया जाता है । कंप्यूटरों को आकार के आधार पर , कार्यप्रणाली के आधार पर , उद्देश्य के आधार पर कई भागों में विभाजित किया जाता है , लेकिन कंप्यूटर की संरचना (Computer Architecture) में शुरुआत से अब तक कोई भी बदलाव नहीं हुआ है ।

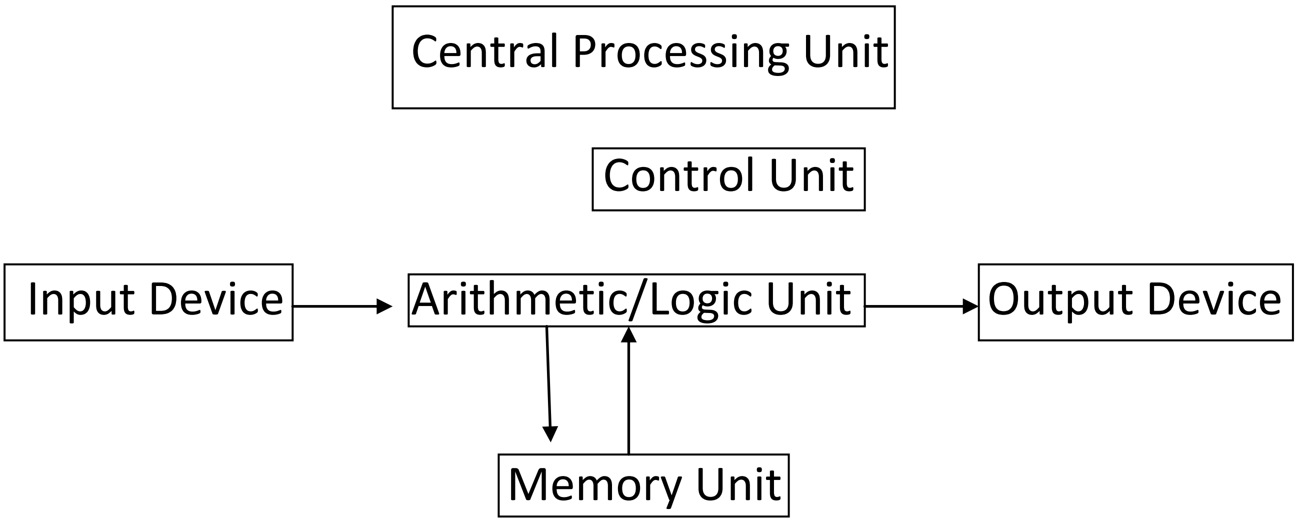

कंप्यूटर संरचना में विभिन्न उपकरणों जैसे कि इनपुट –आउटपुट डिवाइस (Input-Output Device) , प्रोसेसिंग डिवाइस (Processing Device) , मेमोरी (Memory) इत्यादि का संयोजन होता है । ये विभिन्न प्रणालियाँ इकाइयों (Systems Units) की मदद से कंप्यूटर सिस्टम को संचालित करना संभव होता हैं । संरचना के अनुसार , कंप्यूटर को चार भागों में विभाजित किया जाता है –

इनपुट यूनिट (Input Unit)

कोई भी निर्देश और डेटा केवल इनपुट डिवाइस के माध्यम से कंप्यूटर में दर्ज किया जा सकता है । कंप्यूटर उन उपलब्ध डेटा को प्रोसेस करता है ताकि एक निश्चित आउटपुट मिल सके । कंप्यूटर को इनपुट देने के लिए कई इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग किया जाता है । जैसे कीबोर्ड (Keyboard) , माउस (Mouse) , जॉयस्टिक (Joystick) , स्कैनर (Scanner) आदि ।

सेन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (CPU)

CPU को कंप्यूटर का मस्तिष्क (Brain) कहा जाता है । यह एक कंप्यूटर प्रणाली (Computer system) का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है जो उपयोगकर्ता द्वारा इनपुट के रुप में दिए गये डेटा और सूचना को प्रोसेस करता है और एक निश्चित आउटपुट प्रदान करता है ।

अर्थमेटिक लॉजिक यूनिट (ALU)

अर्थमेटिक लॉजिक यूनिट जो तार्किक (Logical) और अंकगणितीय (Arithmetical) कार्यों को प्रोसेस करती है ।

कंट्रोल यूनिट (Control Unit)

कंट्रोल यूनिट जो पूरे कंप्यूटर को नियंत्रित करता है । यह डेटा/निर्देश का विश्लेषण करता है और इसे प्रोसेसिंग के लिए भेजता है , फिर आउटपुट को सही आउटपुट डिवाअस पर भेजता है सरल शब्दों में कहें तो, कंट्रोल यूनिट का कार्य कंप्यूटर के इनपुट और आउटपुट डिवाइसों (Input and Output Devices) को नियंत्रण में रखना है ।

मेमोरी यूनिट (Memory Unit)

मेमोरी यूनिट कंप्यूटर का वह हिस्सा है जो उपयोगकर्ता द्वारा दिए गए इनपुट डेटा को प्रोसेस करते समय डेटा को संग्रहीत (Stored) रखता है , जिसका उपयोग प्रोसेसिंग के बाद भी आउटपुट डाटा को स्थायी रुप से स्टोर (Permanently Store) करने के लिए किया जाता है ।

आउटपुट यूनिट (Output Unit)

आउटपुट , इनपुट और प्रोसेसिंग के बाद की प्रक्रिया के बाद की प्रक्रिया है , जहां कंप्यूटर आपके द्वारा दिए गए निर्देशों के आधार पर इनपुट डेटा को प्रोसेस करता है और हमें आउटपुट प्रदान करता है ।

हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर क्या है ? (Hardware and Software)

हार्डवेयर (Hardware) : हार्डवेयर कंप्यूटर का मुख्य भाग (Main Part) होता है । इसे कंप्यूटर का भौतिक भाग (Physical Part) भी कहा जाता है । कोई भी कंप्यूटर भाग जिसे आप देख सकते हैं या स्पर्श कर सकते हैं , जैसे कि मॉनिटर (Monitor) , कीबोर्ड (Keyboard) , माउस (Mouse) , प्रिंटर (Printer) आदि कंप्यूटर हार्डवेयर (Hardware) होता है और इसमें कंप्यूटर के अंदर के सभी भाग जैसे हार्ड डिस्क (Hard Disk) , मदरबोर्ड (Motherboard) , प्रोसेसर (Processor) , रैम (RAM) , ऑप्टिकल डिस्क ड्राइव (Optical Disc Driver) , पॉवर स्पलाई (Power Supply) और कई अन्य शामिल हैं ।

साफ्टवेयर (Software) : सॉफ्टवेयर डेटा (Data) या कंप्यूटर निर्देशों (Computer Instructions) का एक संग्रह (Collection) होता है जिसका उपयोग कंप्यूटर संचालित करने और विशिष्ट कार्यों को निष्पादित करने के लिए किया जाता है । संक्षेप में , सॉफ्टवेयर (Software) को कंप्यूटर हार्डवेयर (Computer Hardware) के लिए ड्राइवर (Driver) के रुप में परिभाषित किया जा सकता है । सॉफ्टवेयर उपयोगकर्ता के निर्देशानुसार कंप्यूटर और उसके हार्डवेयर (Hardware) को कार्य करने में सक्षम बनाता है । यह कंप्यूटर को बताता है कि किसी कार्य को कैसे करना है । सॉफ्टवेयर के बिना , कंप्यूटर बेकार है ।

कंप्यूटर के भाग (Parts of Computer in)

- **सीपीयू (CPU) : CPU (Central Processing Unit)** एक कंप्यूटर सिस्टम का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है जो कंप्यूटर सिस्टम में डेटा या इनफार्मेशन को प्रोसेस करता है जो उपयोगकर्ता द्वारा इनपुट के रुप में दिया जाता है और एक निश्चित आउटपुट प्रदान करता है ।

- मॅनिटर (Monitor) : मॉनिटर एक विजुअल आउटपुट डिवाइस होता है जिस पर आउटपुट को देखा जाता है । मॉनिटर में आमतौर पर स्क्रीन (Screen) , सर्किट (Circuit) , केस (Case) और पॉवर सप्लाई (Power Supply) शामिल होता है ।

- **कीबोर्ड (Keyboard) :** कीबोर्ड एक इनपुट डिवाइस (Input Device) है जो उपयोगकर्ता (User) को कंप्यूटर में टेक्स्ट (Text) इनपुट करने में सक्षम बनाता है । कीबोर्ड में कई ' **कीज़ (Keys) " होती हैं जैसे कि अल्फाबेटिकल कीज़** (Alphabetical Keys) , न्यूमेरिक कीज़ (Numeric Keys) , फंक्शनल कीज़ (Functional Keys) , स्पेशल कीज़ (Special Keys) , एरो कीज़ (Arrow Keys) और मल्टीमीडिया कीज़ (Multimedia Keys) आदि ।

- माउस (Mouse) : माउस एक हैंडहेल्ड इनपुट डिवाइस (Handheld Input Device) है जो कंप्यूटर सिस्टम में कोई भी इनपुट बतोर प्वाइंट (Point) करके देता है और आपको कंप्यूटर पर टेक्टस (Text) , आइकन्स (Icons) , फाइल्स (Files) और फोल्डर (Folder) को मूव (Move) और सेलेक्ट (Select) कर सकता है । माउस एक पॉइंटिंग डिवाइस (Pointing Device) है जिसका इस्तेमाल कंप्यूटर सिस्टम में सामान्य निर्देश देने के लिए किया जाता है ।
- **प्रिंटर (Printer) : प्रिंटर** एक आउटपुट डिवाइस (Output Device) है जो कंप्यूटर से डेटा लेता है और इसकी हार्ड कॉपी तैयार करता है । सरल शब्दों में , यह कहा जा सकता है कि प्रिंटर सॉफ्ट कॉपी (Softcopy) को हार्ड कॉपी (Hard Copy) के रुप में प्रिट करता है ।

कंप्यूटर के विकास का इतिहास अथवा कम्प्यूटर का परिचयात्मक इतिहास (History of Computer Evolution)

हमने कंप्यूटर के इतिहास को सरल भाषा में समझाने के लिए इसे संक्षेप में बताया हैं । आधुनिक कंप्यूटर मुश्किल से 50 वर्षों से अस्तित्व में हैं , लेकिन उनका विकास का इतिहास बहुत पुराना है । कंप्यूटर हमारे जीवन के हर पहलू को किसी न किसी तरह से प्रभावित करता है । पिछले चार दशकों में , कंप्यूटर ने हमारे समाज में रहने और काम करने के तरीके को बदल दिया है ।

कंप्यूटर के आविष्कार से पहले गणना के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरण यांत्रिक उपकरण (Mechanical Device) होते थे । **अबेकस (Abacus) को पहला कंप्यूटर कहा जाता है । बाद में , नेपियर्स बोन्स (Napier's Bones) , पास्कलाइन (Pascaline) , जैक्वार्ड लूम (Jacquard's Loom) आदि जैसे कई उपकरण बनाए** गए लेकिन किसी भी डिवाइस में मेमोरी (Memory) नहीं थी , फिर सत्रहवीं शताब्दी में , चार्ल्स बैबेज (Charles Babbage) ने डिफरेंस इंजन (Difference Engine) और **एनालिटिकल इंजन (Analytical Engine)** का आविष्कार किया , जिसमें मेमोरी (Memory) भी शामिल थी ।

कंप्यूटर की विभिन्न पीढ़ियां (Generation of Computer)

1. **पहली पीढ़ी (1940- 1956) :** कंप्यूटर की इस पहली पीढ़ी में , **वैक्यूम टयूब (Vacuum Tube)** तकनीक का उपयोग किया गया था , जो गणनाओं को करने के लिए कंप्यूटर को संभव बनाता था ।
2. **दूसरी पीढ़ी (1956 – 1963) : कंप्यूटर** की दूसरी पीढ़ी मे ट्रांजिस्टर (Transistor) तकनीक का इस्तेमाल किया गया , जिसने तब कंप्यूटर के आकार को थोड़ा छोटा और परफॉरमेंस को तेज कर दिया था ।

3. **तीसरी पीढ़ी (1964 – 1971) : कंप्यूटर की तीसरी पीढ़ी में इंटीग्रेटेड सर्किट (IC) तकनीक का इस्तेमाल किया गया था , जिससे यह पिछली पीढ़ियों के कंप्यूटरों की तुलना में अधिक विश्वसनीय और तेज हो गया था ।**

4. **चौथी पीढ़ी (1972 – 2010) :** चौथी पीढ़ी के कंप्यूटरों में , **माइक्रोप्रोसेसर (Microprocessor) तकनीक का उपयोग** किया गया था , जो पहले , दूसरे और तीसरे पीढ़ी की तुलना में बहुत तेज , विश्वसनीय और आकार में छोटा था । जिसे आप आसानी से उठाकर कहीं भी रख सकते हैं ।
5. **पांचवी पीढ़ी (2010 से अब तक) :** पांचवी पीढ़ी के कंप्यूटरों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (Artificial Intelligence) का उपयोग किया गया है , जो इसे कंप्यूटर प्रौघोगिकी में सर्वोपरि बनाता है , इन कंप्यूटरों में कृत्रिम बुद्विमता होती है , जिसके उपयोग करके यह स्वयं समस्या का समाधान कर सकते हैं ।

कंप्यूटर की विशेषताएं (Characteristics of Computer)

कम्प्यूटर में एक बार डेटा इनपुट करने के पश्चात यह उस डाटा को दिये गये निर्देशों के आधार पर प्रोसेस कर परिणाम (Result) को आउटपुट (Output) के रुप में हमे प्रदान करता है । इसके द्वारा बहुत कम समय में तीव्र गति से गणनाएं की जा सकती है ।

कंप्यूटर की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं –

- **स्वचालित (Automatic) :** कंप्यूटर एक स्वचालित (Automatic) उपकरण है अर्थात् यह एक बार उपयोगकर्ता (User) से सारा डाटा इनपुट (Input) के रुप में लेकर उसकी प्रोसेसिंग (Processing) करता है तथा परिणामों को आउटपुट (Output) के रुप में हमे प्रदान करता है ।

- गति (Speed) : कंप्यूटर में एक बार डेटा इनपुट करने के पश्चात , यह दिए गए निर्देशां के अनुसार एक सेकंड में लाखों बार गणनाएं कर सकता है । इसकी काम करने की गति बहुत तेज होती है ।

- **त्रुटिहीनता (Accuracy) :** कंप्यूटर एक आधुनिक मशीन है । यदि उपयोगकर्ता निर्देश देते समय कोई गलती नहीं करता है , तो कंप्यूटर निर्देशों के अनुसार इनपुट डेटा को प्रोसेस करता है और हमें अपेक्षित परिणाम देता है जो काफी तेज और त्रुटिरहित होता है । कंप्यूटर बिना किसी गलती के सटीक गणना कर सकता है ।

- **ऑटोमेशन (Automation) :** कंप्यूटर एक स्वचालित मशीन है , एक बार कंप्यूटर को निर्देश दिए जाने के बाद , यह बिना किसी मानव निगरानी के अपना काम कर सकता है ।

- **भंडारण क्षमता (Storage Capacity) :** कंप्यूटर अपनी मेमोरी में किसी भी प्रकार का डेटा या इनफार्मेशन को स्टोर कर सकता है । कंप्यूटर में डाटा संग्रहण करने के लिए बाहरी तथा आंतरिक भाग होते है जैसे की हार्ड डिस्क , फ्लापी डिस्क मैग्नेटिक टेप , सीडी रॉम , आदि ।

- **सार्वभौमिकता (Versatility) :** कंप्यूटर की सबसे अच्छी विशेषता यह है कि यह एक ही समय में कई कार्य कर सकता है , जैसे कि संगीत सुनते दौरान इंटरनेट (Internet) चलाना या किसी फ़ाइल को डाउनलोड (Download) करना आदि

- **सक्षमता (Diligence) :** कंप्यूटर बिना थके लगातार कोई भी कार्य कर सकता है । इसे किसी भी प्रकार की थकान या कमजोरी नहीं होती है और मशीन होने के कारण इसपर मौसम का कोई प्रभाव भी नहीं पड़ता है ।

गोपनीयता (Secrecy) : कंप्यूटर में डाटा की सुरक्षा के लिए पासवर्ड विकल्प होता है , जिसके उपयोग से कंप्यूटर के डेटा को गोपनीय बनाया जा सकता है ।

कम्प्यूटर की कमियाँ(Drawbacks of Computer) कम्प्यूटर में यहाँ एक ओर बहुत सारी विशेषताएँ है तो दूसरी ओर अनेक कमियां भी हैं । इनका विवरण निम्नलिखित रुप में प्रस्तुत है :–

1. **बुद्दिमता की कमी :**
   कम्प्यूटर एक मशीन है । इसका कार्य उपयोगकर्ता द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करना है । किसी भी मामले में , कम्प्यूटर निर्देशों से न तो अधिक और न ही कम काम करता है ।
2. **स्वयं की रक्षा करने में अक्षम :–** कम्प्यूटर कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो , किन्तु उसका नियंत्रण मानव के हाथ में ही है । कम्प्यूटर किसी भी तरह से आत्म सुरक्षा नहीं कर सकता है
3. **निर्णय लेने में अक्षम :** कम्प्यूटर में निर्णय लेने की क्षमता नहीं है क्योंकि कम्प्यूटर एक बुद्दिमान मशीन नहीं है , यह सही या गलत की पहचान नहीं कर सकता है ।

4. **मानव का गुलाम :–** कम्प्यूटर को जब तक कार्य करने की अनुमति नहीं दी जाती है तब तक वह कार्य नहीं करता , इसलिए वह मानव का गुलाम है ।
5. **ई–वेस्ट कचरा : –** कम्प्यूटर के व्यर्थ के सामान को इलैक्ट्रानिक कचरा वेस्ट कहते हैं । इसमें बहुत से हानिकारक तत्व होते हैं , जैसे –लैड , मरकरी , कैडियम आदि जो मानव के स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा खतरा है ।
6. **मूल्य :–** इस इंटरनेट के युग में निःसन्देह कम्प्यूटर मानव जीवन की एक आवश्यकता बन चुका है किन्तु फिर भी ऊँचे दाम के कारण सामान्य नागरिक की पहुँच से बाहर है ।

कंप्यूटर का उपयोग अथवा महत्व (Application of Computer in)

- **शिक्षा (Education) :** कंप्यूटर ने पूरी दुनिया की शिक्षा प्रणालियों (Education Systems) को पूरी तरह से अलग स्तर पर ले गया हैं । पारंपरिक क्लासरुम (Traditional Classroom) कंप्यूटर के आगमन के साथ आधुनिक बन गए हैं । मल्टीमीडिया (Multimedia) और कंप्यूटर आधारित शिक्षा की मदद से अब छात्रों को पाठयक्रम को समझना आसान हो गया है ।
- **वैज्ञानिक अनुसंधान (Scientific Research) : विज्ञान** के कई जटिल रहस्यों को सुलझाने के लिए कंप्यूटर की मदद ली जा रही है । यह बड़ी तीव्रता के साथ गणना करने के लिए भी बहुत उपयोगी है । कंप्यूटर में परिस्थितियों का उचित आकलन करना भी संभव है , इसलिए वैज्ञानिक अनुसंधान (Scientific Research) में भी कंप्यूटर का विशेष उपयोग किया जा रहा है ।

- **बैंक (Bank) : बैंकिंग** में , कंप्यूटर के उपयोग ने क्रांति ला दी है । इसका उपयोग ग्राहकों के लेनदेन की रिपोर्ट बनाने , एटीएम (Automated Teller Machine) , ऑनलाइन बैंकिंग , चेकों का भुगतान , इ. सी. एस. (Electronic Clearing Service) , पैसों की गिनती , पासबुक अपडेट करने आदि में उपयोग किया जा रहा है ।

- **अस्पताल (Hospital) : अस्पतालों** में कंप्यूटर की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है , हम विभिन्न दवाओं , उनके वितरण और स्टॉक आदि का रिकॉर्ड रख सकते हैं । कंप्यूटर का उपयोग शरीर के अंदर की बीमारियों का पता लगाने और विश्लेषण और निदान करने में बड़े पैमाने पर किया जा रहा है , जेसे डिजिटल एक्स–रे (Digial X-Ray) , अल्ट्रासाउंड (Ultrasound) , सीटी स्कैन (CT Scan) , ईसीजी (ECG) मशीनें आदि । कंप्यूटरों का उपयोग करके रोगियों के मेडिकल रिकॉर्ड संग्रहीत किए जाते हैं ।

- **रक्षा (Defence) :** रक्षा के क्षेत्र में कंप्यूटर के कई उपयोग हैं जैसे रक्षा अनुसंधान (Defense Research) , वायुयान नियंत्रण प्रणाली (Aircraft Control System) , रक्षा संचार प्रणाली (Defence Communication System) , मिसाइल ट्रैकिंग सिस्टम (Missile Tracking System) , रडार सिस्टम (Radar System) आदि में कम्पयूटर का उपयोग किया जा रहा है ।

- **संचार (Communication) :** कंप्यूटर के उपयोग के बिना आधुनिक संचार संभव नहीं है । टेलीफोन (Telephone) और इंटरनेट (Internet) ने संचार क्रांति को जन्म दिया है । संचार के लिए कंप्यूटर बहुत महत्वपूर्ण होता हैं ।

- **उद्योग व व्यापार (Industry & Business) : उद्योगों में कंप्यूटर** का उपयोग कर बेहतर गुणवता (Better Quality) वाले वस्तुओं का उत्पादन (Production) संभव हो पाया है । व्यवसाय में कंप्यूटर का उपयोग कार्यों का रिकॉर्ड बनाए रखने और खर्चों , मुनाफे और नुकसान की गणना करने के लिए किया जाता है ।

- **मनोरंजन (Entertainment) :** आज के डिजिटल युग में लगभग हर क्षेत्र में कंप्यूटर का उपयोग किया जा रहा है । आजकल यह मनोरंजन के क्षेत्र में एक बहुत ही महत्वपूर्ण और लोकप्रिय उपकरण है । सिनेमा (Cinema)] टेलीविजन (Television) , संगीत (Music) , वीडियो गेम (Video Game) आदि में कंप्यूटर का उपयोग करके प्रभावी मनोरंजन प्रस्तुत किया जा रहा है ।

- **प्रकाशन (Publication) :** कंप्यूटर का उपयोग प्रकाशन और मुद्रण (Publishing and Printing) उद्योग में बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है । कंप्यूटर का उपयोग इसे सुविधाजनक और आकर्षक बनाता है ।

- **प्रशासन (Administration) :** सरकारी कार्यालयों में कंप्यूटर का व्यापक रुप से उपयोग किया जाता है । सरकारी कर्मचारियों को कई तरह की रिपोर्ट तैयार करनी होती है । सरकार के विभिनन विभागों के सभी प्रशासनिक कार्य कंप्यूटर द्वारा किए जाते हैं ।

<u>B.A Fifth Semester</u>

Ability Enhancement Compulsory Course

(AECC)

Course Code : UHILTS501

Title : कंप्यूटर शिक्षण

इकाई : दो

- कंप्यूटर सॉफ्टवेयर :
    - प्रयुक्ति सॉफ्टवेयर (Application Software)
    - कस्टम सॉफ्टवेयर (Custom Software)
    - सिस्टम सॉफ्टवेयर (System Software)
- कंप्यूटर हार्डवेयर
    - कंप्यूटर स्क्रीन, कुंजी पटल, सी.पी.यू.
    - हार्डडिस्क, प्रिंटर, स्मृति, शब्द संसाधन

प्रो. दवेन्द्र कुमार शर्मा

राजकीय महाविद्यालय

Edit with WPS Office

सुन्दरबनी (राजौरी)

कंप्यूटर शिक्षण

इकाई–दो

कंप्यूटर सॉफ्टवेयर

भूमिका :– कंप्यूटर सॉफ्टवेयर दो अलग–अलग शब्दों के मूल से बना है। कंप्यूटर + सॉफ्टवेयर। कंप्यूटर एक प्रकार की मशीन होती है जो दिए गए निर्देशों के अनुसार डाटा प्रोसैस का काम करती है, दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि कंप्यूटर एक इलैक्ट्रॉनिक मशीन होती है जो इनपुट के तौर पर यूजर से डाटा प्राप्त करता है तथा इस डाटे को निर्देश के अनुसार प्रोसैस करता है तथा नतीजा देता है।

सॉफ्टवेयर :– सॉफ्टवेयर कंप्यूटर को दिए जाने वाले निर्देशों या प्रोग्रामों का समूह है। यह कार्यप्रणाली, नियमों और डाटा का समूह भी है, जो कंप्यूटर को निर्देश प्रदान करता है कि कार्य कैसे करना है। कंप्यूटर को कोई भी काम करने के लिए

Edit with WPS Office

निर्देश चाहिए। ये निर्देश कंप्यूटर को समझ आने वाली किसी भी भाषा में लिखे जाते हैं। इन निर्देशों के समूह को प्रोग्राम कहा जाता है। इन प्रोग्रामों के समूह को कंप्यूटर सॉफ्टवेयर कहा जाता है।

सॉफ्टवेयर, कंप्यूटर के सही ढंग से कार्य करने के लिए बहुत आवश्यक है। यह हार्डवेयर के हिस्सों को नियंत्रित करता है। यह हार्ड डिस्क में स्टोर होता है। सॉफ्टवेयर पैकेज प्रोग्रामों का समूह है जिनका प्रयोग कंप्यूटर में किसी विशेष फंक्शनों के लिए किया जाता है। जैसे एम.एस.ऑफिस, आप्रेटिंग सिस्टम, अडोबफोटोशॉप, ट्राँसलेटर इत्यादि भिन्न–भिन्न सॉफ्टवेयर हैं।

सॉफ्टवेयर की किस्में (Types of Software) :–

भिन्न–भिन्न ऑपरेशनज़ के लिए कंप्यूटर को भिन्न–भिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर की आवश्यकता होती है। ऑपरेशनज़ के आधार पर सॉफ्टवेयर को निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है।

1. प्रयुक्ति सॉफ्टवेयर (Application Software)
2. कस्टम सॉफ्टवेयर (Custom Software)
3. सिस्टम सॉफ्टवेयर (System Software)

सिस्टम सॉफ्टवेयर (System Software) :– सिस्टम सॉफ्टवेयर प्रोग्रामों का समूह है, जो कंप्यूटर के सारे कार्यों को नियंत्रित करता है। सिस्टम सॉफ्टवेयर हार्डवेयर और ऐप्लीकेशन सॉफ्टवेयर के बीच एक पुल के रूप में कार्य करता है। सिस्टम सॉफ्टवेयर के बिना ऐप्लीकेशन सॉफ्टवेयर कार्य नहीं कर सकता। कंप्यूटर सिस्टम को चलाने के लिए यह बहुत आवश्यक है। यह कंप्यूटर के आप्रेशनज़ को कंट्रोल करने कंप्यूटर में डाटा भरने और बाहर निकालने और ऐप्लीकेशनज़ प्रोग्रामों को

Edit with WPS Office

चलाने आदि के कार्य को करने के लिए निर्देश देता है। यह ऐप्लीकेशन प्रोग्रामों के कार्यों को नियंत्रित करता है। सिस्टम सॉफ्टवेयर का मुख्य कार्य हार्डवेयर घटकों को मैनेज एवं नियंत्रित करना है ताकि डप्लीकेशन सॉफ्टवेयर अपना काम ठीक तरह से कर सके। सिस्टम सॉफ्टवेयर को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है–

(i) आप्रेटिंग सिस्टम (Operating System)

(ii) भाषा ट्रांसलेटर (Language Translator)

(iii) यूटिलिटी प्रोग्रामज़ (Utility Programs)

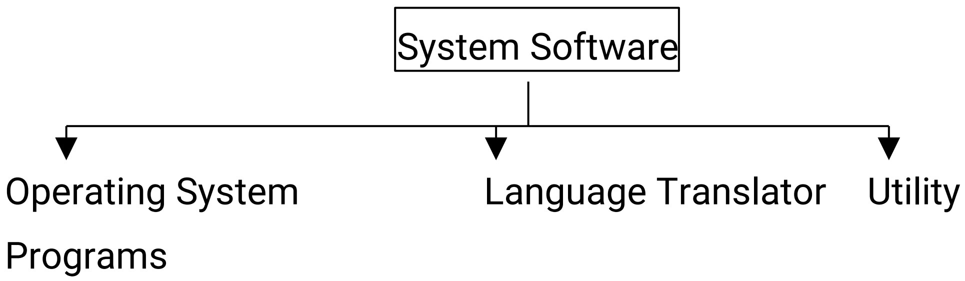

1) ऑप्रेटिंग सिस्टम (Operating System) :–

ऑप्रेटिंग सिस्टम एक प्रोग्राम है जो हार्डवेयर और यूज़र में इंटरफेस का कार्य करता है। यह कंप्यूटर में सभी ऐप्लीकेशनज़ के लिए सुपरवाइज़र के रूप में कार्य करता है। ऑप्रेटिंग सिस्टम के बिना सिस्टम कार्य नहीं कर सकता। यह सारे सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर को नियंत्रित और व्यवस्थित करता है। जब कंप्यूटर को ऑन किया जाता है तो ऑप्रेटिंग सिस्टम पहला प्रोग्राम होता है जो कंप्यूटर की मैमोरी में लोड होता है।

Edit with WPS Office

2) भाषा ट्रांसलेटर (Language Translator) :– कंप्यूटर केवल बाइनरी भाषा को ही समझ सकता है इसको मशीनी भाषा कहा जाता है। परन्तु दी गई सूचनाएं असैंबली भाषा या उच्च स्तरीय भाषा में होती हैं। इसलिए कंप्यूटर में कुछ ऐसे सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया जाता है जो असैंबली भाषा या उच्च स्तरीय भाषा को बाइनरी भाषा में बदलने का कार्य करते हैं। इनको भाषा ट्रांसलेटरज़ (Language Translators) कहा जाता है। ट्रांसलेटर की इनपुट को सोर्स कोर्ड (Source Code) और आउटपुट को ऑब्जैक्ट कोड (Object Code) कहा जाता है। आम तौर पर भाषा ट्रांसलेटर तीन प्रकार के होते हैं–

Language Translator

Assembler   Interpreter   Compiler

1) असैंबलर (Assembler) :– कंप्यूटर को जो इनपुट दी जाती है वह असैंबली भाषा में होती है। परन्तु इन कोडों को कंप्यूटर द्वारा समझने योग्य बनाने के लिए, इस भाषा को भाषा ट्रांसलेटर सॉफ्टवेयर के द्वारा मशीन भाषा में बदला

Edit with WPS Office

जाता है। असैंबलर एक ट्रांसलेटर प्रोग्राम है जो कि असैंबली भाषा को मशीन भाषा में बदलता है। इस तरह यह कोड़ों को कंप्यूटर द्वारा समझने योग्य बनाता है।

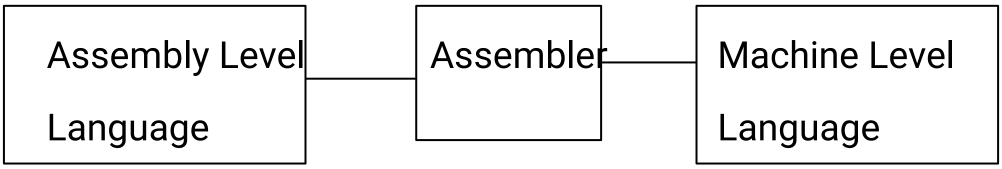

इंटरप्रैटर :– इंटरप्रैटर एक ट्रांसलेटर प्रोग्राम होता है जो कि एक हाई लैवल भाषा प्रोग्राम को मशीन भाषा प्रोग्राम में बदलता है यह हाई लैवल भाषा प्रोग्राम में एक मंथन (Statement) को मशीन कोड में बदलना और उसको लागू करता है। यह इस तरह ही आगे चलता रहता है। जब तक सारे कथनों का अनुवाद नहीं हो जाता और वे लागू नहीं हो जाते। यदि किसी लाइन में कोई ऐरर होता है तो उसी समय रिपोर्ट करता है और जब तक ऐरर खत्म नहीं किया जाता प्रोग्राम आगे नहीं चलता। इंटरप्रैटर द्वारा बनाए गए आब्जैक्ट कोड के कथन को सेव नहीं किया जा सकता। इसलिए हर समय जब प्रोग्राम चलाया जाता है, तो आब्जैक्ट कोड प्राप्त करने के लिए उसको फिर इंटरप्रैटर द्वारा बदलना पड़ता है, इंटरप्रैटर कंपाइलर से धीमा होता है–

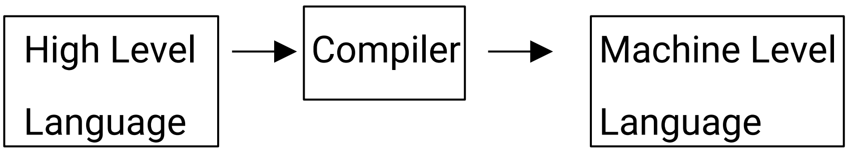

3) **कंपाइलर (Compiler)** :– वह इनपुट जोकि कंप्यूटर को दी जाती है वह हाई लैवल भाषा में होती है। परन्तु कंप्यूटर द्वारा समझने योग्य कोड़ों को बनाने के लिए उनको भाषा ट्रांसलेटर सॉफ्टवेयर द्वारा मशीन भाषा में बदलना पड़ता है। कंपाइलर एक ट्रांसलेटर प्रोग्राम होता है जो कि हाई लैवल भाषा को मशीन भाषा

Edit with WPS Office

प्रोग्राम में बदलता है। यह सारे प्रोग्राम को एक ही समय में बदलता है और प्रोग्राम कोड के बीच के सारे ऐररज़ को उसी समय साइन नंबरों के साथ रिपोर्ट करता है। यह बहुत तेजी के साथ कार्य करता है–

High Level Language → Compiler → Machine Level Language

3) **यूटिलिटी प्रोग्राम** :– यूटिलिटी प्रोग्रामज़ विशेष प्रोग्रामों का समूह होते हैं। ये प्रोग्रामज़ सिस्टम की देखरेख करते हैं। ये प्रोग्रामज़ कंप्यूटर का अच्छा प्रयोग करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। कई यूटिलिटी आपको डाटा का बैकअप लेने के लिए, कई आपको पुरानी फाइलों को डिलीट करने के लिए और कई बार गलती के साथ डिलीट हो गए डाटा को दुबारा लाने के लिए मदद करते हैं। कई आपको वायरस से बचाने के लिए या वारस डिलीट करने के लिए मदद करते हैं। दूसरे शब्दों में यूटिलिटी प्रोग्राम हमारे घर की देखाभाल वाले काम करते हैं। जैसे– बैकअप, ऐंटीवायरस आदि।

यूटिलिटी प्रोग्रामज़ के कार्य :– यूटिलिटी प्रोग्राम के कार्य निम्नलिखित हैं–

1. इसका प्रयोग फाइलों का बैक अप लेने के लिए किया जाता है। यह आपको डाटा का बैकअप या कॉपी को हार्ड डिस्क पर लेने की अनुमति देता है। यदि आपका कंप्यूटर खराब हो जाता है और अगर डाटा का बैकअप लिया गया हो तो असली फाइलों को दुबारा प्राप्त किया जा सकता है।

2. यह एक वायरस मुक्त वातावरण प्रदान करता है। इसका प्रयोग कंप्यूटर पर वायरस को स्कैन करने के लिए किया जाता है। यह कंप्यूटर को वायरस से बचाता है। यह कंप्यूटर को स्कैन करता है और वायरस को डिलीट करता है।

Edit with WPS Office

3. यह बड़ी फाइलों को इकट्ठा करके हार्डडिस्क पर जगह बचाता है। जब इन फाइलों पर दुबारा काम करना हो तो इनको अपने असली रूप में बदल दिया जाता है।

4. यह फाइलों और खाली जगह को दुबारा व्यवस्थित करके डिस्क के वर्गीकरण को कम से कम करने में मदद करता है। यह फाइलों को पास की जगह पर स्टोर करता है और खाली जगह को इक्ट्ठा करता है।

5. इसका प्रयोग टैक्स्ट फाइलों को बनाने और एडिट करने के लिए किया जाता है। इस प्रोग्राम का प्रयोग करके कोई भी टैक्स्ट लिखा और सेव किया जा सकता है। इन फाइलों को किसी भी समय दुबारा प्राप्त किया जा सकता है और ऐडिट या सही भी किया जा सकता है।

6. इसका प्रयोग हार्ड डिस्क की स्टोरेज कपैस्टी की जाँच करने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग हार्ड डिस्क, फ्लॉपी डिस्क को फार्मेट करने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग फाइलों और फोल्डरों को ढूँढने के लिए किया जाता है।

ऐप्लीकेशन सॉफ्टवेयर

Application Software

ऐप्लीकेशन प्रोग्रामों के समूह को ऐप्लीकेशन सॉफ्टवेयर कहा जाता है जो विशेष कार्य करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। कंप्यूटर हार्डवेयर को चलाने के लिए ऐप्लीकेशन सॉफ्टवेयर (जैसे ऑप्रेटिंग सिस्टम) की आवश्यकता होती है। ऐप्लीकेशन सॉफ्टवेयर का प्रयोग प्रयोगकर्ता की आवश्यकता के अनुसार ही किया जाता है। इनका प्रयोग विशेष कार्यों के लिए किया जाता है। भिन्न–भिन्न प्रयोग कर्ताओं की आवश्यकता भी भिन्न–भिन्न ही होती है। इसलिए प्रत्येक यूजर अपनी आवश्यकता के

Edit with WPS Office

अनुसार भिन्न–भिन्न ऐप्लीकेशन सॉफ्टवेयर का प्रयोग करता है।

बाजार में कई प्रकार के ऐप्लीकेशन सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं। इन सॉफ्टवेयर की कई किस्में हैं। इनमें से कुछ किस्में हैं–

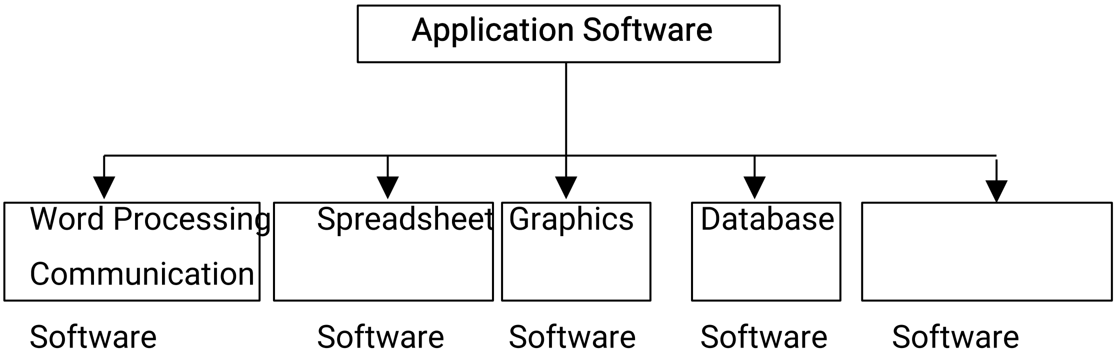

1) **वर्ड प्रोसैसिंग सॉफ्टवेयर** :– वर्ड प्रोसैसिंग सॉफ्टवेयर एक प्रोग्राम है जो लैटरज़, रिपोर्टज़ इत्यादि दस्तावेजों को टाइप, सेव, प्रिंट, ऐडिट और फॉर्मेट करने में सहायता करता है। डाक्यूमैंट को और भी अच्छा तथा प्रभावशाली बनाने के लिए वर्ड प्रोसैसिंग सॉफ्टवेयर का प्रयोग होता है। इनका प्रयोग स्कूलों, घरों, उद्योगों आदि में ज्यादा किया जाता है। एम.एस.बर्ड, नोट पैड, वर्डपैड, पेज मेकर आदि कुछ वर्ड प्रोसैसिंग सॉफ्टवेयर हैं।

2) **स्प्रैडशीट सॉफ्टवेयर** :– स्प्रैडशीट सॉफ्टवेयर वह प्रोग्रामज़ हैं, जो डाटा का नंवरज़ और डिजिटस में प्रोसैस करते हैं। इसमें गणनाएं की जाती हैं। और उनका विश्लेषण भी किया जाता है। वह सैलों का बना होता है। सैलज़ कालमज और रोअज़ का समूह है। इस सॉफ्टवेयर का प्रयोग मुख्य रूप में आय व्यय का हिसाब रखने, विद्यार्थियों के ग्रेडों और अंकों का रिकार्ड रखने और टाइम टेबल इत्यादि बनाने के लिए किया जाता है। एम.एस.ऐक्सल, लॉटस आदि स्प्रैडशीट सॉफ्टवेयर के उदाहरण हैं।

Edit with WPS Office

3) **ग्राफिक्स सॉफ्टवेयर** :– ग्राफिक्स सॉफ्टवेयर वह प्रोग्राम हैं जो कंप्यूटर में चित्र और रेखा बनाने के लिए प्रयोग किये जाते हैं। यह यूजर को डिजाइन, चित्र, रेखाचित्र, ग्राफ आदि बनाने, ऐडिट करने, व्यू करने, स्टोर करने, और प्रिंट करने के योग्य बनाना है। इसका प्रयोग चलचित्र बनाने के लिए भी किया जाता है। एम.एस. पॉवर, एम.एस.पेंट, ऐडोब फोटोशॉप, कोरल ड्रा आदि ग्राफिक्स सॉफ्टवेयर के उदाहरण हैं।

4) **डाटाबेस सॉफ्टवेयर** :– डाटावेस सॉफ्टवेयर प्रोग्रामों का एक समूह है जिनका प्रयोग डाटाबेस को बनाने और संभालने के लिए किया जाता है। यह डाटावेस में बड़ी गिनती में डाटा स्टोर करने में हमारी सहायता करता है। यूजर अपनी आवश्यकतानुसार भिन्न–भिन्न टेबल बना सकता है। इस सॉफ्टवेयर के प्रयोग के साथ यूजर के लिए डाटा को शामिल करना, डिलीट करना, प्रिंट और अपडेट करना बहुत आसान होता है। एम.एस. ऐक्सैस, फॉक्स प्रॉअ, आदि डाटाबेस सॉफ्टवेयर हैं।

5) **संचार सॉफ्टवेयर** :– संचार सॉफ्टवेयर का प्रयोग सारे संसार के लोगों के साथ संचार करने के लिए किया जाता है। आजकल संचार के अनेकों साधन हैं जैसे टैलीफोन, इंटरनैट इत्यादि। दूसरे लोगों के साथ संचार करने के लिए कंप्यूटर में संचार सॉफ्टवेयर डाले जाते हैं। यह सॉफ्टवेयरज़ प्रयोगकर्ता के संदेशों, मेल और तस्वीरों आदि को भेजने और प्राप्त करने का कार्य करते हैं। इंटरनैट ऐक्सपलोरर संचार सॉफ्टवेयर की महत्वपूर्ण उदाहरण है।

ऑपरेटिंग सिस्टम की प्रमुख परिभाषाएँ :– ऑपरेटिंग सिस्टम की प्रमुख परिभाषाएँ निम्न हैं–

ऑपरेटिंग सिस्टम एक ऐसा सॉफ्टवेयर प्रोगामों का समूह है जो मानव, एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर और कंप्यूटर हार्डवेयर के बीच संवाद स्थापित करता है।

Edit with WPS Office

– ऑपरेटिंग सिस्टम एक ऐसा प्रोग्राम है जो कंप्यूटर के विभिन्न अंगों को निर्देश देता है कि किस प्रकार से प्रोसेसिंग का कार्य सफल होगा।

– ऑपरेटिंग सिस्टम एक ऐसा सॉफ्टवेयर है, जो यूजर एवं कंप्यूटर हार्डवेयर के बीच एक माध्यम की भाँति कार्य करता है।

ऑप्रेटिंग सिस्टम के कार्य (Functions of Operating System) :–

ऑप्रेटिंग सिस्टम कई तरह के कार्य करता है, उसमें से कुछ इस प्रकार हैं–

1) **मैमरी प्रबंध का कार्य (Memory Management Function)** :– यह मुख्य मैमरी की देखभाल करता है। ऑप्रेटिंग सिस्टम मैमरी प्रबंध में मदद करने के लिए यह रिकार्ड करता है कि किस प्रोग्राम के लिए कौन सी मैमरी प्रयोग हो रही है और कौन–सी खाली है। यह इस बात का भी निर्णय करता है कि किस कार्य को मैमरी मिलेगी और उस कार्य को मैमरी स्पेस प्रदान करता है।

2) **प्रोसैसर के प्रबंध का कार्य (Processor Management Function)** :– यह सी.पी.यू. की कार्य प्रणाली को नियंत्रित करता है। यह प्रोसैसर के ऊपर नियंत्रण रखने के लिए रिकार्ड करता है कि प्रोसैसर खाली है या नहीं यदि नहीं तो कौन इसका प्रयोग कर रहा है। यह निर्णय करता है कि जिस काम ने प्रोसैसर का उपयोग करना है और वह पसंद किए हुए कार्य को प्रोसैसर प्रदान करता है।

3) **डिवाइस प्रबंध का कार्य (Device Management Function)** :–यह हार्डवेयर उपकरणों से और के लिए इनपुट और आउटपुट का प्रबंध करता है। यह इनपुट और आउटपुट उपकरणों की जानकारी रखता है जैसे कौन–सा उपकरण प्रयोग में है और किस कार्य के लिए। यह निर्णय करता है कि किस कार्य ने उपकरण का प्रयोग करना है और उस कार्य को उपकरण प्रदान करता है।

Edit with WPS Office

4) फाइलों/प्रोग्रामों का प्रबंध कार्य (File/Program Management Function) :– यह फाइलों के साथ संबंधित क्रियाओं जैसे स्टोरेज़, स्ट्रिवल, नामकरण, सुरक्षा आदि करता है। यह फाइलों का रिकार्ड रखता है जैसे कि कौन–सी फाइल प्रयोग में है और किस काम के लिए और फाइल की डायरैक्ट्री बनाता है। यह निर्णय करता है कि किस कार्य ने फाइल प्रयोग करनी है और किस काम के लिए जैसे रीड/राइट/ऐग्जिक्यूट आदि। यह प्रयोग के लिए फाइलों को निर्धारित करता है।

5) सुरक्षा प्रबंध का कार्य (Security Management Function) :– यह कंप्यूटर को सुरक्षा प्रदान करता है। यह पासवर्ड सैट करने और यूजर को अधिकार प्रदान कर अनअधिकारण प्रयोग (Unauthorized access) को रोकने की सुविधा प्रदान करता है।

ऑप्रेटिंग सिस्टम के प्रकार (Types of Operating System) :–

1) **बैच प्रोसेसिंग ऑपरेटिंग सिस्टम** :– इस प्रकार के ऑपरेटिंग सिस्टम में एक प्रकार के सभी कार्यों को एक (Batch) के रूप में संगठित करके साथ में क्रियान्वित किया जाता है। इस कार्य के लिए बैचत मॉनीटर सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के ऑपरेटिंग सिस्टम का प्रयोग ऐसे कार्यों के लिए किया जाता है। जिनमें उपयोगकर्ता के हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं होती।

2) **सिंगल यूज़र ऑरेटिंग सिस्टम** :– इस प्रकार के ऑपरेटिंग सिस्टम में एक बार में केवल एक उपयोगकर्ता को ही कार्य करने की अनुमति होती है। यह सबसे अधिक प्रयोग किया जाने वाला ऑपरेटिंग सिस्टम है।

3) **मल्टी यूज़र ऑपरेटिंग सिस्टम** :– मल्टी–यूज़र ऑपरेटिंग सिस्टम एक समय

Edit with WPS Office

में एक से अधिक उपयोगकर्ता को कार्य करने की अनुमति देता है। ये ऑपरेटिंग सिस्टम सभी उपयोगकर्ता के मध्य संतुलन बनाकर रखता है। प्रत्येक प्रोग्राम की संसाधन संबंधी जरूरत को पूरा करता है।

4) **सिंगल टास्किंग ऑपरेटिंग सिस्टम** :– सिंगल टास्किंग ऑपरेटिंग सिस्टम में एक समय में केवल एक प्रोग्राम को ही चलाया जा सकता है। उदाहरण के लिए पॉम कंप्यूटर में प्रयोग किया जाने वाला ऑपरेटिंग सिस्टम को दो भागों में विभाजित किया गया है।

(i) प्रीम्पटिव ऑपरेटिंग सिस्टम।

(ii) कोऑपरेटिंग मल्टी टास्किंग ऑपरेटिंग सिस्टम।

5) **टाइम शेयरिंग ऑपरेटिंग सिस्टम** :– इस प्रकार के ऑपरेटिंग सिस्टम में, एक साथ एक से अधिक उपयोगकर्ता या प्रोग्राम कंप्यूटर के संसाधनों का प्रयोग करते हैं। इस कार्य में कंप्यूटर अपने संसाधनों के प्रयोग हेतु प्रत्येक उपयोगकर्ता या प्रोग्राम को समय का एक छोटा भाग आबंटित करता है जिसे टाइम स्लाइस या क्वांटम कहते हैं।

6) **रीयल टाइम ऑपरेटिंग सिस्टम** :– रीयल टाइम ऑपरेटिंग सिस्टम एक ऐसा मल्टी टास्किंग ऑपरेटिंग सिस्टम होता है, जिसमें रीयल टाइम एप्लीकेशन्स का क्रियान्वन किया जाता है। रीयल टाइम ऑपरेटिंग सिस्टम को दो भागों में बाँटा गया है।

(i) हार्ड रीयल टाइम सिस्टम

(ii) सॉफ्ट रीयल टाइम सिस्टम

Edit with WPS Office

कंप्यूटर हार्डवेयर

कंप्यूटर हार्डवेयर कंप्यूटर का वह भाग जिन्हें हम देख तथा छू सकते हैं उन्हें हार्डवेयर कहते हैं। यह कंप्यूटर के भौतिक भाग होते हैं जिनमें मिलकर हमारे कंप्यूटर का शरीर बनता है। जैसे कीबोर्ड, माउस, मॉनिटर, प्रिंटर आदि सभी हार्डवेयर कहे जाते हैं।

(i) कंप्यूटर का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। कंप्यूटर को कार्य करने के लिए कुछ सहायक उपकरणों तथा प्रोग्रामों की जरूरत होती है, ये उपकरण तथा प्रोग्राम्स ही कंप्यूटर को असल कंप्यूटर बनाते हैं। इन सभी सहायक उपकरणों को मिलाकर एक कंप्यूटर टर्म बनती है जिसे कहते हैं– हार्डवेयर यानि वे डिवाइस जिनसे मिलकर एक कंप्यूटर बनता है।

(ii) सॉफ्टवेयर इन हार्डवेयर में जान डालता है और कंप्यूटर को कार्य करने लायक बनाता है। तब जाकर हमें एक जीवित तथा काम करने योग्य कंप्यूटर मशीन प्राप्त होती है। कंप्यूटर के पूर्जों को एक बार असेम्बल करने के बाद यदा–कदा ही बदला जाता है, खासकर तभी जब कोई हार्डवेयर प्रचलन में बाहर हो जाता है या फिर सॉफ्टवेयर रिक्वायरमेंट को पूरा नहीं कर पाता। कंप्यूटर हार्डवेयर का सबसे अच्छा उदाहरण है मॉनिटर। जिस डिवाइस पर आप इस लेख को पढ़ रहे हैं क्योंकि सक्रीन (Screen) भी एक प्रकार का हार्डवेयर है।

हार्डवेयर अपग्रेडेशन :– कंप्यूटर की कार्य क्षमता, फीचर, निष्पादन (Performance) को बढ़ाने के लिए किसी एक या अधिक उपकरण को नई तकनीक और क्षमता के उपकरण से बदलना हार्डवेयर अपग्रेड करना कहलाता है। जैसे अभी आपके कंम्पयूटर में 2 GB DDR2 RAM लगी है। यदि आप से 4GB DDR2 से बदल लेते हैं तब यह रैम अपग्रेड करना कहलाता है और यही नियम अन्य

Edit with WPS Office

हार्डवेयर उपकरणों पर भी लागु होता है।

हार्डवेयर अपग्रेड करना एक महंगी प्रक्रिया है, इसलिए जरूरत होने पर ही उपकरणों को अपग्रेड करना चाहिए।

कंम्प्यूटर हार्डवेयर के प्रकार :–

कंम्प्यूटर स्क्रीन, कुंजी पटल (Keyboard) सी.पी.यू., हार्डडिस्क, प्रिंटर, स्मृति, शब्द संसाधन (वर्ड प्रोसेसिंग)

कम्प्यूटर स्क्रीन :– कंप्यूटर स्क्रीन (Monitor) यह एक आम प्रयोग में आने वाला आऊटपुट उपकरण है। मॉनीटर टी.वी. स्क्रीन की तरह होता है। मोनीटर प्रयोगकर्ता को नजीते दिखाता है। इसको विजुअल डिस्पले युनिट भी कहा जाता है। यह एक सबसे महत्वपूर्ण आउटपूट डिवाइस है। जिसके बिना कंप्यूटर अधूरा होता है।

मॉनिटर द्वारा प्रदर्शित रंगों के आधार पर यह तीन प्रकार के होते हैं।

1) Monochrome Monitor :– यह शब्द दो शब्दों से मोनो अर्थात् सिंगल तथा क्रोम अर्थात रंग से मिलकर बनता हैं इस प्रकार के मॉनीटर आउटपुट को Black and White रूप में प्रदर्शित करते हैं।

2) Gray-Scale Monitor :- यह मॉनीटर विशेष प्रकार के मॉनीटर होते हैं। जो विभिन्न ग्रे शेड्स में आउटपुट प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार के मॉनीटर अधिकतर हेन्डी कंप्यूटर जैसे लैप–टॉप में प्रयुक्त किये जाते हैं।

3) Colour Monitor :– इस प्रकार के मॉनीटर RGB 'Red, Green, Blue) रंगों से आउटपुट प्रदर्शित करते हैं। यह मॉनीअर उच्च रेजोलूशन में ग्राफिक्स को प्रदर्शित करते हैं। यह मॉनीटर उच्च रेजोलूशन में ग्राफिक्स को प्रदर्शित करने में सक्षम होते हैं। कंप्यूटर मेमोरी की क्षमतानुसार ऐसे मॉनीटर कलर से करोड़ों कलर

Edit with WPS Office

प्रदर्शित करने की क्षमता रखत है।

मॉनीटर के मुख्य लक्ष्य :–

1) रेजोलूशन :– कंप्यूटर स्क्रीन का महत्वपूर्ण गुण रेजोलूशन या स्क्रीन की स्पष्टता होता है। मॉनीटर में चित्र को निर्माण छोटे–छोटे बिन्दुओं से मिलकर होता है जिसे पिक्सेल कहा जाता है। जब यह बिन्दु चमकते हैं तो चित्र का निर्माण होता है। इकाई क्षेत्रफल में उपस्थित बिन्दुओं की संख्या रेजोलूशन को व्यक्त करती है। मॉनीटर की रेजोलूशन क्षमता अधिक होनी चाहिए। रेजोलूशन अधिक होगा तो चित्र की स्पष्टता अधिक होगी।

2) **रिफेशर दर (Refresh Rate)** :– मॉनीटर लगातार कार्य करता रहता है। कंप्यूटर स्क्रीन पर इमेज दायें से बायें एवं ऊपर से नीचे मिटती बनती रहती है। जो इलेक्टॉन गन से व्यवस्थित होता रहता है। इसका अनुभव हम तभी कर पाते है। तब स्क्रीन क्लिक करती है या रिफ्रेश दर कम होता है। मॉनीटर में रिफ्रेश रेट को हर्टज में नापा जाता है।

3) **डॉट पिच (Dot Pitch)** :– डॉट पिच एक प्रकार की मापन तकनीकी है, जो यह प्रदर्शित करती है कि दो पिक्सेल के मध्य Horizontal दूरी कितनी है। इसका मापन मिलीमीटर में किया जाता है। यह मॉनीटर की गुणवत्ता को प्रदर्शित करता है। मॉनीटर में डॉटपिच कम होना चाहिए इसको फास्फर पिच भी कहा जाता है। कलर मॉनीटर की डॉट पिच 0.15MM से 0.30 MM तक होती है।

कुंजीपटल (Keyboard) :– कुंजीपटल एक आम इस्तेमाल होने वाला इनपुट उपकरण है। की–बोर्ड टाईप मशीन के साथ काफी समानता रखता है। की–बोर्ड कई प्रकार के बटनों का संग्रह है। जब भी किसी बटन को दबाया जाता है तो

Edit with WPS Office

की–बोर्ड अक्षर को कंप्यूटर में भेज देता है। की–बोर्ड प्रयोगकर्ता द्वारा दिए गए निर्देशों को प्राप्त करके उस रूप में बदल देता है जिसे कंप्यूटर समझ सके। दो प्रकार के की–बोर्ड प्रमुख रूप से इस्तेमाल किए जाते हैं।

1) **आम की–बोर्ड** :– एक आम की–बोर्ड में 101 से 104 बटन होते हैं जिन्हें पाँच किस्मों में बांटा गया है–

Function Keys => F1 to F12

Alphanumeric Keys => A-Z, 0-9

Special Symbol Keys => ; ! @ # $ % ^ & * ( ) etc

Cursor Movement Keys => Up, Down, Left, Right

Numeric Key Pad => 0-9, +, -, *, /

इन बटनों के इलावा की–बोर्ड में कुछ ऐसे बटन भी होते हैं जो किसी खास उद्देश्य के लिए बनाए जाते हैं इन खास बटनों में Alt, Ctrl, Enter, Home, End और Esc आदि शामिल हैं।

2) **मल्टीमिडिया की बोर्ड** :– इसमें मल्टीमिडिया से संबंधित बटन होते हैं। इन बटनों में Volume Up, Down, Play, Pause, Stop शामिल हैं। इन बटनों के अलावा कुछ और बटन भी होते हैं जिनका इस्तेमाल इंटरनैट चलाने में किया जाता है। जैसे–

1. अक्षर बटन (Alphabet Keys) :– ये A से Z तक होते हैं। इनसे बड़े अक्षरों तथा छोटे अक्षरों के रूप में डाटा एंटर किया जाता है।

Edit with WPS Office

2. अंक बटन (Numeric Keys) :– ये बटन अंक एंटर करने के लिए होते हैं। ये 0-9 तक होते हैं। यह बटन की–बोर्ड में दो जगह होते हैं।

3. चिन्ह बटन (Symbol Key) :– की–बोर्ड पर कई प्रकार के चिन्ह बटन होते हैं। जैसे – ~ # $ % ^ & आदि।

4. ऐडिटिंग बटन (Editing Keys):– इस वर्ग में **Insert, Delete, Pg up, pg down, Home, End** बटन आते हैं। ये बटन अक्सर ऐडिटिंग के लिए प्रयोग होते हैं।

5. तीर बटन (Arrow Keys) :– ये चार बटन होते हैं। ये करसर को दाएं, बाएं, ऊपर, नीचे ले जाने के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

6. फंक्शन बटन (Function Key) :– ये F1 से F12 तक होते हैं। इनका प्रयोग विभिन्न साफ्टवेयरों में अलग–अलग होता है। इनका प्रयोग किसी खास कार्य के लिए किया जाता है।

7. मल्टीमिडिया बटन (Multimedia Keys) :– आजकल कुछ की–बोर्ड आ रहे हैं जिनमें मल्टीमिडिया बटन होते हैं। ये बटन मल्टीमिडीया कार्यों अर्थात् फिल्म देखना, गाने सुनना आदि से संबंधित होते हैं।

सी.पी.यू (CPU) :– सी.पी.यू. कंप्यूटर का प्रमुख भाग होता है। सी.पी.यू. का प्रारंभिक काम प्रोग्रामों को मिलाना और बाकी यंत्र जैसे मैमरी, इनपुट और आउटपुट उपकरण के कार्यों को कंट्रोल करना होता है। सी.पी.यू. के मुख्य भाग– ए.एल.यू. (ALU), कंट्रोल यूनिट (Control Unit) और अंदरूनी मैमरी होते हैं।

1) **ए.एल.यू. (आरिथमैटिकल और लोजीकल यूनिट)** :– कंप्यूटर की सारी गणना अरिथमैटिकल और लॉजीकल यूनिट के द्वारा की जाती है। ए.एल.यू. के द्वारा जमा,

Edit with WPS Office

घटाव, गुणा, विभाजन आदि प्रारंभिक हिसाब किए जाते हैं। यह तार्किक काम जैसे > < = इत्यादि भी करता है। जब भी किसी गणना की जरूरत होती है तो कंट्रोल यूनिट, मैमरी यूनिट से आंकड़े ए.एल.यू. को भेजता है। जब गणना पूरी हो जाती है तो कंट्रोल यूनिट परिणामों को मैमरी यूनिट की तरफ भेजता है और बाद में परिणाम प्रदर्शित करने के लिए आउटपुट युनिट की तरफ भेजता है।

2) **कंट्रोल यूनिट (Control Unit)** :– कंट्रोल यूनिट इनपूट इकाई को निर्देश देता है कि प्रयोगकर्ता से डाटा प्राप्त करके कहाँ स्टोर करना है। यह मैमरी यूनिट से ए.एल.यू. के आकंड़ों के बहाव को भी कंट्रोल करता है। यह ए.एल.यू. से मैमरी यूनिट के परिणामों के बहाव को भी कंट्रोल करता है।

3) **मैमरी यूनिट (Memory Unit)** :– मैमरी यूनिट में आंकड़ों और निर्देश होते हैं जो प्रयोगकर्ता की तरफ से कंप्यूटर में भेजे जाते है। यह परिणामों को दोबारा प्रयोग के लिए भी संभालकर रखता है।

हार्ड डिस्क :– हार्ड डिस्क (Hard Disk) कंप्यूटर में प्रयोग में आने वाली मुख्य स्टोरेज़ डिवाइस है। हार्ड डिस्क डाटा स्टोर करने अथवा साफ्टवेयर स्टोर करने के लिए इस्तेमाल की जाती है। हार्ड डिस्क की डाटा स्टोर करने की क्षमता बाकी डिस्कों से बहुत ज्यादा होती है। हार्ड डिस्क 20GB से 1 TB तक उपलब्ध है। हार्ड डिस्क में कई सारी मैगनेटिक प्लोटर के दो रीड/राइट (Read/Write) हेड होते हैं। हार्ड डिस्क को कंप्यूटर में पक्के तौर पर फिक्स किया जाता है। इसको बार–बार निकाला नहीं जाता। इस का प्रयोग काफी ज्यादा डाटा स्टोर करने के लिए किया जाता है। इसके अंदर एक चुबंकिय प्लेट लगी होती है। इसका आकार एक छोटे बॉक्स के रूप का होता है। इसके अंदर एक मोटर लगी लगी होती है जो गोलाकार डिस्क को घूमाता है।

Edit with WPS Office

हार्डडिस्क कई आकारों और क्षमताओं में मिलती है, लेकिन इस बनावट और कार्यप्रणाली लगभग एक ही होती है। किसी हार्ड डिस्क में डिस्क को तेज गति से घुमाया जाता है। इनके घूमने की गति 3600 चक्कर/मिनट (Rotation Per Minute) से 1200 चक्कर/मिनट तक होती है।

आधुनिक हार्ड डिस्कों की क्षमता 200 गीगाबाइट तक होती है। पर्सनल कंप्यूटरों के लिए विशेष प्रकार की हार्ड डिस्क भी उपलब्ध है जिन्हें विचेस्टर डिस्क कहा जाता है। इनकी क्षमता 20 गीगावाइट से 80 गीगावाइट तक होती है। हार्ड डिस्क सूचनाओं को स्थायी रूप से संग्रहीत करने का बहुत विश्वसनीय माध्यम है और इनका उपयोग करने की गति भी पर्याप्त होती है। लेकिन ये धूल आदि के प्रति बहुत ही संवेदनशील होती है जिसके कारण इनकी एक डिब्बे में स्थायी रूप से बन्द रखा जाता है और सिस्टम यूनिट के भीतर लगा दिया जाता है।

प्रिंटर (Printer) :– प्रिंटर एक आऊटपुट उपकरण है जो आज कागज के ऊपर डाटा प्रिंट निकालने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसकी आऊटपुट स्थाई होती है। प्रिंटर तीन प्रकार के होते हैं–

1. डाट मैट्रिक्स प्रिंटर
2. इंकजैट प्रिंटर
3. लेज़र प्रिंटर

1) **डाट मैट्रिक्स प्रिंटर** :– डाट मैट्रिक्स प्रिंटर बिंदियों के मेल से अक्षर छापते हैं। ये धीरे चलते हैं तथा काफी आवाज़ करते हैं। इनकी छपाई इतनी बढ़िया नहीं होती। इनके हैड ऊपर पिनों कीउ एक मैटरिक्स होती है। जब कोई अक्षर छापना होता है तो मैटरिक्स में से वो पिनें आकर रिबन द्वारा कागज़ पर अक्षर छापती है।

Edit with WPS Office

2) **इंकजैट प्रिंटर** :– ये प्रिंटर कागज़ पर स्याही की बूंदों को छिड़क कर छपाई करते हैं, जो कागज़ के ऊपर अक्षर और तस्वीरें छोटी–छोटी बूंदों द्वारा बनाते हैं। स्याही को कागज़ जल्दी ही सोख लेता है और जो जल्दी ही सूख जाता है। इन प्रिंटरों में डाट मैट्रिक्स प्रिंटरों से ज्यादा योग्यता है। यह चुपचाप काम करते हैं। यह रंगदार प्रिंटिंग के लिए भी प्रयोग किए जाते हैं। इनसे रंगीन तस्वीरें भी छापी जा सकती हैं।

3) **लेज़र प्रिंटर** :– ये डिजीटल प्रिंटर होते हैं जो लेज़र का प्रयोग करते हैं। इनकी गति तथा क्वालटी अच्छी होती है। ये ब्लैक एंड बाईट तथा रंगीन दोनों प्रकार के होते हैं। ये एक बार में पूरा का पूरा पेज़ छाप देते हैं। ये फोटा स्टेट

Edit with WPS Office

मशीन की तरह काम करते हैं। इनमें स्याही के तौर पर टोनर (Toner) का इस्तेमाल किया जाता है।

स्मृति (Memory) :– कंप्यूटर में डाटा स्टोर करने के लिए मेमरी का प्रयोग होता है। मैमरी में हम डाटा स्टोर कर सकते हैं। मैमरी कंप्यूटर का एक अहम हिस्सा है। मैमरी दो प्रकार की होती है–

1. प्राइमरी मैमरी –	'i) Ram	'ii) Rom
2. सैकेंडरी मैमरी –	(i) फ्लापी डिस्क	(ii) हार्ड डिस्क
	(ii) सी.डी.	(iv) डी.वी.डी.
	(v) पैन ड्राइव	(vi) मैमरी कार्ड

1) **रैम (RAM/ Random Access Memory)** :– रैम मैमरी का वो क्षेत्र है जहाँ डाटा और निर्देश उस समय स्टोर होते हैं जब कंप्यूटर चल रहा है। रैम अस्थाई मैमरी है। इसमें डाटा तब तक ही स्टोर रहता है जब तक कंप्यूटर चलता है।

2) **रौम (ROM/Read Only Memory)** :– रौम केवल पढ़ी जा सकने वाली मैमरी होती है। रौम उस जगह प्रयोग की जाती है जहाँ पर डाटा पक्के तौर पर

Edit with WPS Office

स्टोर करना होता है। कंप्यूटर की BIOS सैटिंग 'Basic Input Output Settings) रौम में ही स्टोर होती है। रौम की कई किस्मे हैं जिनका वर्णन आगे दिए अनुसार है–

– प्रोग्रामेबल रौम 'Programmable Rom/PROM):– प्रोग्रामेबल रौम में डाटा केवल एक ही बार स्टोर किया जा सकता है। इसका डाटा रौम की चिप को बनाते समय स्टोर किया जाता है।

– ई.पी.रोम 'Erasable Programable ROM/ EPROM):– ई.पी.रौम एक मिटाई जा सकने वाली प्रोग्रामेबल रौम है। इसके डाटा को खास अल्ट्रा वाइलट किरणों द्वारा मिटाया जा सकता है। इस रोम में डाटा मिटाने के बाद दुबारा लिखा भी जा सकता है।

– ई.ई.पी.रौम (Electrically Erasable Programmable ROM/EEPROM) इस रौम का डाटा बिजली द्वारा मिटाया या दुबारा लिखा जा सकता है। इसका मुख्य लाभ यह है कि डाटा को मिटाने के लिए चिप को मेन बोर्ड से हटाने की जरूरत पड़ती है। हम मैमरी के एक छोटे हिस्से में भी डाटा मिटा सकते हैं।

सैकंडरी मैमरी (Secondary Memory) :–सैकंडरी मैमरी में डाटा पक्के तौर पर स्टोर किया जा सकता है। इसका उपयोग डाटा को एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर में भेजने के लिए भी किया जाता है। इन उपकरणों की डाटा स्टोर करने की क्षमता बहुत ज्यादा होती है। फ्लापी डिस्क, हार्ड डिस्क, आप्टीकल डिस्क कुछ सैकंडरी मैमरी के उदाहरण हैं।

1) **फ्लापी डिस्क** :– यह एक प्लास्टिक की डिस्क होती है। इसमें डाटा स्टोर किया जाता है। इसके अंदर चुंबकीय गोलाकार डिस्क होती है। इसके ऊपर डाटा

Edit with WPS Office

स्टोर होता है। यह डिस्क कई आकार में आती है। जैसे 3.5 इंच, 5.25 इंच, 8 इंच।

आजकल इस डिस्क का प्रयोग काफी कम हो रहा है। सिर्फ 3.5 इंच वाली डिस्क ही प्रयोग में आती है। इस पर डाटा बार–बार स्टोर किया जा सकता है। इसका प्रयोग एक कंप्यूटर से डाटा दूसरे कंप्यूटर में भेजने के लिए किया जाता है। फ्लापी डिस्क में 1.44 एम.बी. डाटा स्टोर किया जा सकता है।

2) **हार्ड डिस्क** :– हार्ड डिस्क ज्यादा डाटा स्टोर करने के लिए प्रयोग की जाती है। इसको कंप्यूटर में पक्के तौर पर फिक्स किया जाता है। इसको बार–बार निकाला नहीं जाता। इसका प्रयोग काफी ज्यादा डाटा स्टोर करने के लिए किया जाता है। इसके अंदर एक चुबंकीय प्लेट लगी होती है। इसकी भंडारण की क्षमता गीगा बाइट में होती है। इसका आकार एक छोटे बॉक्स के रूप का होता है। इसके अंदर एक मोटर लगी होती है जो गोलाकार डिस्क को घूमाता है।

3) CDROM :- CDROM का पूरा नाम Compact Disk Read Only Memory है। यह एक चमकदार डिस्क होती है। इसमें काफी ज्यादा मात्रा में डाटा स्टोर किया जा सकता है। इस पर डाटा स्टोर करने के लिए लेज़र लाइट का प्रयोग किया जाता है। इस डिस्क की भंडारण क्षमता 700एम.बी. होती है। सी.डी. आम तौर पर दो प्रकार की होती है–

1. CD-R

Edit with WPS Office

2. CD-RW

CD-R का अर्थ है Compact Disk Read इस प्रकार की डिस्क में डाटा सिर्फ एक बार लिखा जाता है। उसको बार–बार पढ़ा जा सकता है। इसको मिटाया नहीं जा सकता।

CD-RW का अर्थ है Compact Disk Read Write इस प्रकार की डिस्क में डाटा लिखा तथा पढ़ा जा सकता है। इसका बार–बार प्रयोग किया जा सकता है। सी.डी. का पयोग करते समय निम्न सावधानियों का प्रयोग किया जाता है–

1. इसको हमेशा कवर में रखो।
2. इसको मरोड़ो मत।
3. इसको मिट्‌टी, धूल से बचाकर रखो।
4. सी.डी. को हमेशा मुलायम कपड़े से साफ करो।
5. सी.डी. को धूप से बचाकर रखो।
6. सी.डी. पर नुकीले पैन से मत लिखो।

4) डी.वी.डी. (DVD) :–DVD का अर्थ है Digital Verstile Disk in Digital Video Disk

यह सी.डी. की अगली पीढ़ी की डिस्क है। इस पर सीडी से ज्यादा मात्रा में डाटा स्टोर किया जा सकता है। इसका आकार सीडी के बराबर ही होती है। इसका प्रयोग फिल्में, तस्वीरें, डाटा, आवाज़ें तथा गाने आदि स्टोर करने के लिए किया जाता है।

Edit with WPS Office

शब्द संसाधन (Word Processing)

कंप्यूटर की भाषा में 'वार्ड प्रोसेसिंग' शब्द संसाधन उस तकनीक को कहते हैं जो प्रलेखों को टाइप करते, बदलने(Editing), फॉमेटिंग(Formating) करने, सुरक्षित करने(Saving) तथा छापने(Printing) में सहायता करती है। पहले पत्र–लेखन का कार्य हाथ से हुआ करता था, समय बदलने तथा टाइपराइटर का प्रयोग किया जाने लगा। आधुनिक समय में इस कार्य के लिए व्यापक स्तर पर कंप्यूटर का प्रयोग होने लगा। पहले टाइपराइटर में तैयार किए गए प्रलेख में यदि कोई त्रुटि हो जाती थी तो उसे पुनः टाइप किया जाता था। कंप्यूटर में वर्ड–प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर द्वारा व्यापारिक–पत्र, रिपोर्ट, प्रोजेक्ट आदि कम समय में तथा अधिक सुंदर ढंग से तैयार किए जा सकते हैं। वर्ड प्रोसिंग के द्वारा त्रुटियों की संभावना लगभग न के बराबर होती है। इसके कारण प्रलेख में त्रुटियों को सुधारने, नई पंक्ति या नए शब्द जोड़ने, तालिका बनाने तथा गणित कार्य आदि करने के लिए वर्ड–प्रोसेसिंग बहुत सहायता कर सकता है। इसके द्वारा शब्द विन्यास (Spelling) की त्रुटियों में भी सुधारा जा सकता है तथा पृष्ठ की लंबाई व चौड़ाई को आवश्यकतानुसार कम या अधिक किया जा सकता है। वर्ड प्रोसेसिंग तकनीक के द्वारा हम कंप्यूटर की सहायता से निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं–

(1) टाईपिंग (2) फार्मेटिंग

(3) इडीटिंग (4) सेविंग

(5) प्रिटिंग (6) शब्द विन्यास।

Edit with WPS Office

एम.एस.– वर्ड का परिचय

'Introduction to MS-Word)

एम.एस.वर्ड एक वर्ड प्रोसेसिंग प्रोग्राम है जैसे कि आप जान चुके हैं, वर्ड प्रोसेंसिंग प्रोग्राम का अर्थ है– करेक्टरों के समूह अर्थात् शब्द की विभिन्न क्रियाएँ और उससे बनने वाले दस्तावेजों को तैयार करना, उन्हें व्यवस्थित रूप देना व संग्रहीन करके भविष्य के लिए रखना और प्रिंटर पर पत्रों, लेखों को छापना। इस प्रकार, एक वर्ड प्रोसेसिंग प्रोग्राम में निम्नलिखित क्रियाएँ की जाती हैं– टाइपिंग, एडीडिंग, फॉर्मेटिंग, संग्रहीन करना और प्रिंट करना।

एम.एस.वर्ड प्रोग्राम में टैक्सट टाइप करके दस्तावेज को नया रूप दिया जाता है जो इसके टैक्सट के करेक्टरों को विभिन्न छोटे–बड़े आकार, रंग, स्टाइल में परिवर्तित कर स्क्रीन पर सुव्यवस्थित किया जाता है। अब जैसा स्क्रीन पर दिखाई देता है, वैसा ही प्रिंटर से छपकर कागज पर प्राप्त होता है। इसलिए यह प्रोग्राम WYSIWYG 'What You See Is What You Get) प्रोग्राम कहलाता है।

इस वर्ड प्रोसेसर का नवीनतम संस्करण ऑफिस 2000 के अंतर्गत एमएसवर्ड 2000 है। जिसमें असंख्य सुविधाएँ हैं लेकिन इसका सबसे अधिक प्रचलित संस्करण एम.एस.वर्ड 97 के नाम से पाया जाता है। इसके बाद वर्ड के कई संस्करण आ चुके हैं जैसे कि 2000, 2003, 2010, 2013 सबसे नवीनतम संस्करण वर्ड 2016 है।

माईक्रोसॉफ्ट वर्ड की विशेषताएँ (Features of Microsoft Word) :–

माईक्रोसॉफ्ट वर्ड एक लोकप्रिय वर्ड प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर है जिसे एक अनभिज्ञ व्यक्ति भी आसानी से चला सकता है और इस सॉफ्टवेयर पर कार्य कर सकता है। एम.एस.वर्ड की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

Edit with WPS Office

1. टेक्सट एडिटिंग :– एमएस–वर्ड में किसी टेक्स्ट को लिखना, लिखे हुए टेक्स्ट को एडिट करना, डिलीट करना, टेक्स्ट के कंपोनेंट को मोडीफाई करना आदि करना बहुत ही आसानी से होता है। यदि किसी टेक्स्ट को कट कर दिया है तो कट किया हुआ टेक्स्ट क्पिल बोर्ड में अस्थाई रूप से स्टोर रहता है। जब उसे पेस्ट कर देते हैं तो बोर्ड से कट किया हुआ टेक्स्ट हट जाता है।

2. फॉर्मेट टेक्स्ट :– एमएस–वर्ड में किसी टेक्स्ट या शब्द को अनेक प्रकार की शब्द डिजाइन से मोडीफाई कर सकते हैं। विभिन्न प्रकार की स्टाइल का प्रयोग करके टेक्स्ट के एपीरियस को बदल सकते हैं।

3. इंडेटेशन :– इंडेटेशन का तात्पर्य पेज की बाउंड्री और टेक्स्ट के बीच के अंतर से है। इसके प्रयोग से टेक्स्ट और पेज़ बाउंड्री के बीच में चारों तरफ से गैफ का कम या ज्यादा कर सकते हैं।

4. पेज ओरिएंटेशन :– MS-Word में दो प्रकार के पेज ओरिएंटेशन होते हैं– क्षैतिज ओरिएंटेशन, ऊध्वधिर ओरिएंटेशन। इसका प्रयोग किसी टाइप किए हुए टेक्स्ट को एक क्षैतिज पेज में या उर्ध्वाधर पेज में प्रिंट करने के लिए किया जाता है।

5. फाइंड एंड रिप्लेशन :– MS-Word में टाइप किए गए टेक्स्ट में से किसी विशेष कैरेक्टर या शब्द को आसानी से फाइंड किया जा सकता है। इसमें फाइंड किए गए कैरेक्टर या शब्द को किसी दूसरे कैरेक्टर या टेक्स्ट से बदला जा सकता है।

6. स्पेल चेक :– इसमें स्पेलिंग और ग्रामर को चेक करने की सुविधा होती है। यह ऑटोमेटिकली स्पेलिंग और ग्रामर (Grammar) की गलतियों को

Edit with WPS Office

ढूँढता है तथा उसे सही भी करता है।

7. शब्दकोष :– इस सॉफ्टवेयर में एक कॉम्प्रेहेंसिव डिक्शनरी (Comprehensive Dictionary) और शब्दकोष होता है। जो एक शब्द के कई पर्यायवाची देता है।

8. बुलेट्स एंड नंबरिग 'Bullets and Numbering) :– इस सॉफ्टवेयर में अनेक प्रकार के बुलेट्स और नंबर गिनती के अंक, रोमन अंक और अंग्रेजी के अक्षर होते हैं। जिसका प्रयोग करके पेज में एक लिस्ट बना सकते हैं और पेज में लिखे हुए डेटा को एक क्रम में भी रख सकते हैं। मेल–मर्ज (Mail Merge) मेल–मर्ज MS-Word की वह सुविधा है जिसके द्वारा एक पत्र अनेक व्यक्तियों को भेज सकते हैं अथवा कुछ सूचनाएँ बदलते हुए किसी दस्तावेज की अनेक प्रतियाँ निकाल सकते हैं। इससे दो फाइलों से सूचनाएँ लेकर उन्हें आपस में मिलाकर या विलय (Merge) करके वास्तविक दस्तावेज तैयार किया जाता है। जिसमें एक फाइल को डेटा फाइल या डाटा स्त्रोत तथा दूसरी फाइल को फार्म लेटर या मुख्य दस्तावेज (Main Document) कहा जाता है।

9. ग्राफिक्स :– यह MS-Word में ड्राइंग बनाने की अच्छी सुविधा होती है जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार की आकृति, जैसे कि वृत, आयत, रेखाएँ त्रिभुज आदि अनेक प्रकार की ड्राइंग आसानी से बना सकते हैं। इसमें ड्राइंग बनाने का ड्राइंग टूलवार उपलब्ध होता है जिसमें अनेक प्रकार की ड्राइंग होती हैं।

10. आब्जेक्त लिंकिंग एंड एबेडिंग (Object Linking and Embeding):– यह एक प्रकार की प्रोग्राम इंटीग्रेशन टैक्नॉलोजी है। जिसका प्रयोग करके वस्तुओं के द्वारा सूचनाओं का प्रोग्राम के मध्य साझा किया जाता है तथा

Edit with WPS Office

प्रदर्शित किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के ऑब्जेक्ट, जैसे चार्ट्स (Charts), समीकरण (Equations), वीडियोक्लिप, पिक्चर आदि पाए जाते हैं जो सूचनाओं को साझा करने तथा प्रदर्शित करने में प्रयोग किए जाते हैं।

11. क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर स्क्रोल बार (Horizontal and Vertical Scroll Bar) इस सॉफ्टवेयर में दो स्क्रोल बार होते हैं, जो पेज को डॉक्यूमेंट विंडो के ऊपर नीचे या दाएँ बाएँ मूव कराते हैं। इसमें क्षैतिज स्क्रोल बार होता है जो स्टेट्स बार के ऊपर स्थित होता है। यह सक्रोल बार पेज की दायीं तरफ या बायीं तरफ मूव करा सकता है। दूसरा ऊध्वधिर स्क्रोल बार होता है जो स्क्रीन के दाईं तरफ होता है। यह स्क्रोल बार पेज को डॉक्यूमेंट विंडों में ऊपर नीचे मूव कराता है।

एम.एस.वर्ड में कार्य करना (Working in MS-Word)

हम जानते हैं कि MS-Word में किसी दस्तावेज को तैयार करने के लिए अथवा अन्य कार्य के लिए निम्नलिखित चरण होते हैं– (1) टाइपिंग (2) संशोधन (Editing) (3) फॉर्मेटिंग (4) सेव करना (5) प्रिंट करना।

1. टाइपिंग (Typing) :– की बोर्ड से उचित रूप में टेक्स्ट को टाइप किया जाता है। MS-Word में टैक्स्ट को टाइप करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि एक पंक्ति समाप्त होने पर Enter दबाने की आवश्यकता नहीं है। टैक्स्ट, स्वतः ही लाइन समाप्त होने पर अगली लाइन पर टाइप होने लगता है। यह क्रिया वर्ड रैप कहलाती है। पैराग्राफ की समाप्ति पर हमें Enter दबाना चाहिए। डॉक्यूमेंट विंडो में कर्सर (Cursor) को इंसर्शन प्वाइंट (Insertion Point) कहते हैं। इसकी दायी दिशा में प्रायः एक और चिह्

Edit with WPS Office

प्रदर्शित होता है जिसे एंड मार्क कहते हैं। यह सदैव इंसर्शन प्वाइंट के आगे रहता है जो फाइल का अंत व्यक्त करता है। टाइपिंग के दौरान यदि टाइपिंग में त्रुटि हो जाए तो की–बोर्ड की बैक–स्पेस (Backspace) अथवा Del Key का प्रयोग कर करेक्टर मिटा सकते हैं।

2. संशोधन :– टैक्स्ट टाइप करने के बाद हम इसमें कोई भी संशोधन कर सकते हैं– जैसे किसी वाक्य को मिटाना, वर्तनी में परिवर्तन या शब्दों को बदलना आदि। लेकिन एडटिंग के लिए टैक्स्ट का चुनाव भी आवश्यक है जिसमें हम केवल चुने हुए टैक्स्ट पर ही कोई एडीटिंग कंमाड क्रियान्वित कर सकें।

3. सलेक्शन का चुनाव :– टाइप किए हुए टैक्स्ट में किसी शब्द, वाक्य या पैराग्राफ पर एडीटिंग करने के लिए उसे चुनना आवश्यक है। MS-Word चुने हुए टैक्स्ट को विपरीत विडियो में प्रदर्शित करता है जिससे टैक्स्ट का पृष्ठ भाग काला और करेक्टर सफेद रग में दिखाई देते हैं। सलेक्टशन की निम्नलिखित विधियाँ हैं–

सलेक्शन	विधि
(i) शब्द (Word)	शब्द पर प्वाइंटर ले जाकर माउस से डबल–क्लिक करना।
(ii) लाइना (Line)	सलेक्शन एरिया में लाइन के सामने प्वाइंटर ले जाकर सिंगल क्लिक करना अथवा Key दबाना।
(iii) वाक्य	जिस वाक्य को चुनना है उसमें माउस प्वाइंट

Edit with WPS Office

		ले जाकर **Ctrl Key** के साथ सिंगल क्लिक करना।
(iv)	पैराग्राफ	पैराग्राफ के सामने सलैक्शन ऐरिया में डबल क्लिक करना
(v)	संपूर्ण डॉक्यमेंट	सलेक्शन एरिया में ट्रिपल क्लिक अर्थात् तीन बार क्लिक करना अथवा **Ctrl+** सलेक्शन एरिया में सिंगल क्लिक करना।

(B) टैक्स्ट डिलीट करना :– चुने हुए शब्द वाक्य शब्द वाक्य, पैराग्राफ या संपूर्ण डॉक्यूमेंट को **Del Key** दबाकर एक बार में मिटाया जा सकता है।

(C) टैक्स्ट प्रतिस्थापन :– किसी टाइप किए हुए डॉक्यूमेंट में किसी शब्द अथवा वाक्यांश को ढूँढकर उसमें नये शब्द से प्रतिस्थापित कर सकते हैं।

यदि हम किसी शब्द को चुनकर नया शब्द टाइप करते हैं तो चुना हुआ शब्द स्वतः डिलीट हो जाता है और नया शब्द जो हम टाइप कर रहे हैं टाइप होने लगता है। इसी प्रकार किसी लाइन, पैराग्राफ या संपूर्ण डॉक्यूमेंट के साथ होता है।

(D) वर्तनी :– MS-Word के Tools मेन्यू में टाइप किये टैक्स्ट की वर्तनी जाँचकर सही की जा सकती है।

3) फॉर्मेटिंग :– एडीटिंग के बाद टैक्स्ट को फॉर्मेट करना चाहिए। टैक्स्ट के करैक्टरों के फांट, पैराग्राफों के मार्जिन, पेज का आकार, आदि सेट करना फॉर्मेटिंग कहलाता है। इससे दस्तावेज या लेख का रूप अच्छा हो जाता है और दस्तावेज उचित प्रारूप में प्रेषित किया जा सकता है। फॉर्मेटिंग द्वारा टैक्स्ट के करेक्टरों को विभिन्न आकारों, रंगों और आकृतियों में फार्मेट किया जा सकता है। दस्तावेज में

Edit with WPS Office

यदि किसी चित्र की आवश्यकता है तो वह तैयार किया जा सकता है अथवा पहले से तैयार चित्र की दस्तावेज में कॉफी करवायी जा सकती है।

4) सेविंग :– जब हम टैक्स्ट को डॉक्यूमेंट विंडों में टाइप करते हैं तो यह केवल कंप्यूटर की मैमोरी में सेव रहता है जो एक अस्थायी सेविंग होती है। स्थायी रूप से फाइल को डिस्क पर सेव करना चाहिए। डिस्क पर फाइल को किसी फाइल नेम से संग्रहीत करना सेविंग कहलाता है। MS-Word File मेन्यू में फाइल सेव करने के निम्नलिखित पद (Step) होते है।

Step-1 : File मेन्यू में Save या Save as पर क्लिक कीजिए।

Step-2 : यह एक सेव डायलॉग बॉक्स को स्क्रीन पर प्रदर्शित करता है जिसके टैक्स्ट में फाइल नेम की–बोर्ड से टाइप करते और सेव बटन पर क्लिक करते हैं। यहाँ हम किसकी निश्चित डायरेक्ट्री को लिस्ट बाक्स से डबल क्लिक करके खोल सकते हैं और फिर फाइल नेम को टैक्स्ट बॉक्स में टाइप करते हैं तो फाइल हमारी निश्चित डायरेक्टरी में सेव होगी, इसी प्रकार यदि किसी फाइल हमारी निश्चित डायरेक्ट्री में सेव होगी। इसी प्रकार यदि किसी डिस्क ड्राइव को हमें चुनना है जिसमें फाइल सेव करेंगे, तो Save in ड्रॉप डाउन लिस्ट बाक्स पर क्लिक करके हम उचित डिस्क ड्राइव चुनते हैं।

5) **प्रिटिंग** :– फॉर्मेट और सेव करने के बाद यदि दस्तावेज कागज पर छापना है तो इसे हम प्रिंटर करते हैं। इससे पहले हम इस दस्तावेज की Final Form देख सकते हैं कि यह Print होने के बाद कैसा लगेगा। इसके लिए File Print कमांड का प्रयोग किया जाता है।

Edit with WPS Office

इकाई तीन

1. इंटरनेट सेवाएँ : ईमेल (Email) ( )

भूमिका

हम इंटरनेट के माध्यम से अनेक तरह की जानकारियाँ प्राप्त करते हैं , चर्चाएँ करते हैं , एक–दूसरे से अपने मन की बात साँझा करते हैं , अपने संदेश दूसरों तक पहुँचाते हैं , अनेक तरह की सूचनाएँ प्राप्त करते हैं तथा दूसरे कई साधनों का भी आदान –प्रदान करते हैं । इन सभी प्रकार की गतिविधियों को इंटरनेट पर प्राप्त सेवाएँ कहा जाता है । अतः इन सभी प्रकार की गतिविधियों को हम ई मेल की सूविधा के कारण ही प्राप्त कर सकते हैं क्योकि ई मेल ही इस इंटरनेट के युग में एकमात्र ऐसा विकल्प है जिसमें सभी प्रकार की सेवाएँ उपलब्ध हैं ।

2. ई मेल क्या है ?

आज इंटरनेट पर यूजर्स की संख्या बढ़ रही है किन्तु फिर भी कई ऐसे इंटरनेट यूजर्स हैं जिन्हें ई मेल क्या है ? तथा इमेल के प्रयोग करने का ढंग पता नहीं लग पाता । किन्तु वास्तव में ई मेल का प्रयोग करना काफी आसान है । जिस तरह फेसबुक तथा वट्सएप में हमारा आकउंट होता है ठीक उसी प्रकार ई मेल का भी एक अकाउंट होता है । इसे ई मेल आई डी भी कहते हैं तथा यह जी मेल अकाउंट गूगल द्वारा हमें मुफ्त में बनाने की सूविधा दी जाती है । अतः इसका अर्थ है कि हम फेसबुक की तरह ही आपने समार्टफोन में एक दो नहीं अपितु अनेक ई मेल आई. डी. बना सकते हैं ।

ई. मेल. आई. डी. (E- Mail ID) क्या है ?

लोगों के बीच इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस की सहायता से संदेशों का आदान–प्रदान ई–मेल का काम होता है । पहले के समय में ई मेल (Email) करने के समय भेजने वाला (Sender) तथा प्राप्तकर्ता (Reciever) दोनों को उस समय पर ऑनलाइन रहना आवश्यक होता था । जिससे इन्सटेट मैसेजिंग (Instant Messaging) की जाती थी । परन्तु आज ई मेल सिस्टम स्टोर एंड फारवर्ड (E-mail System Store & Forward) मॉडल पर काम करता है ।

ई मेल (E-mail) के प्रयोग से एक यूजर दूसरे ई मेल यूजर्स को टेक्सट इमजेस तथा डॉक्यूमेंट के रुप में सन्देशों (मैसेजेस) को भेज सकता है । यह सन्देश

इमेल सर्वर में सेव (Save) होते हैं तथा इंटरनेट की सहायता से सन्देशों को भेजा जाता है । भेजे गए सन्देश तथा प्राप्त किए गए सन्देशों को भविष्य में आप कभी भी खोल (Open) सकते हैं । क्योकि इमेल सर्वर सन्देशों (Messages) को स्टोर , फारवर्ड तथा डिलीवर करने का काम करता है ।

ई मेल पता (E-mail ID) कैसे बनाऐं ?

ईमेल अकाउंट बनाने के लिए नीचे दिए गए निर्देशों को ध्यानपूर्वक समझना होगा जिसके बाद हम अपने मोबाइल या कंप्यूटर में ईमेल आईडी बना सकते हैं । जैसें :–

1 सबसे पहले अपने स्मार्टफोन के सेटिंग्स (Settings) में जाएं ।
2 अब यहाँ अकाउंट (Add Account) पर क्लिक करें । अब यहाँ गूगल (Google) पर टैप (Tap) करें ।
3 उसके बाद सबसे नीचे क्रिएट अकाउंट (Create Account) का विकल्प (Option) होगा । अब यहाँ पहला नाम (First Name) तथा अन्तिम नाम (Last Name) एंटर करें । उसके बाद नेक्सट (Next) बटन पर क्लिक करें । अब आप यहाँ अपनी जन्मतिथि डालिए । उसके बाद लिंग (Gender) सेलेक्ट करें ।
4 अब यहाँ आपको ईमेल पता बनाना होगा । उदाहरण के लिए यदि आप अरुण सिंह हैं तो यह arunsingh200@gmail.com आप इस तरह इमेल आईडी बना सकते हैं । इमेल पता इंटर करने के बाद नेक्स्ट बटन पर क्लिक करें ।
5 उसके बाद यहाँ क्रिएट पासवर्ड (Create Password) पर क्लिक करे नया पासवर्ड सेट कर दीजिए ।
6 पासवर्ड सेट करने के बाद आप फोन नम्बर डाल (Add) सकते हैं या फिर छोड़ (Skip) सकते हैं । उसके बाद गोपनीयता नीति पृष्ठ (Privacy Policy Page) को स्वीकार (Agree) कीजिए ।

   इतना करते ही आपकी इमेल आईडी (E-mail ID) बनकर तैयार हो जाएगी ।
7 ईमेल के लाभ क्या हैं ?

   आज के समय में एक इे मेल अकाउंट (E-mail account) के बहुत सारे लाभ है किन्तु यहाँ निम्नलिखित रुप में कुछ महत्वपूर्ण लाभ के बारे में चर्चा करेंगें :–

1) इे मेल संदेशों के आदान –प्रदान का एक अच्छा साधन है और हम इे मेल के द्वारा घर में बैठे किसी को भी अपना संदेश भेज भी सकते है और प्राप्त भी कर सकते हैं ।
2) इे मेल के द्वारा भेजा हुआ मेल (mail) या सन्देश सुरक्षित रहता है । उसको आप कागज़ की तरह जला नहीं सकते और ना ही उसके खोने का डर रहता है । इे मेल द्वारा भेजा गया सन्देश इेमेल सर्वर (E-mail Server) पर सुरक्षित रहता है ।
3) इे मेल अकाउंट बनाने के लिए कोई पैसा खर्च नहीं करना पड़ता ।
4) आप जितना चाहो उतना लम्बा सन्देश भेज सकते हैं ।
5) आप इे मेल में मल्टीमिड़िया (चित्र , संगीत , वीडियो , आडियों , फाईल) भेज सकते हैं ।

ई–मेल कैसे भेजे ?

ईमेल भेजने के लिए सबसे पहले स्मार्टफोन में जीमेल ऍप को खोलें या आप जीमेल . काम साइट से भी अपने ईमेल अकाउंट को एक्सेस कर सकते हैं । तथा जीमेल ऍप होने पर दाईं और नीचे प्लस का सिम्बल दिखाई देगा उस पर क्लिक कीजिए ।

अब यहाँ फ्राम (From) , टू (To) , स्वजेक्ट (Subject) , तथा कम्पोज (Compose) ई मेल के चार विकल्प हैं :–

1) फ्राम (From) अर्थात् जिस व्यक्ति की ओर से संदेश भेजा जाता है , अर्थ यदि आप ईमेल भेजते हैं तो आपका ईमेल पता (ID) सामने दिखाई देगा ।
2) टू (To) अर्थात् जिस व्यक्ति को आप ईमेल करना चाहते हैं उस व्यक्ति का ईमेल आईडी डालिए ।
3) अब स्वजेक्ट (Subject) में अपने संदेश के विषय को टाईप कीजिए ।
4) अब कम्पोज ईमेल में संदेश के टेक्स्ट को टाइप कीजिए । इसके साथ ही यदि आप इ मेसज , वीडियो या डॉक्यूमेंट उस व्यक्ति को भेजना चाहते हैं , तो आप अटैच फ़ाईल (Attach File) पर क्लिक कर अपने डिवाइस से फ़ाइल सेलेक्ट कीजिए तथा सैंड आइकॉन (Send Icon) पर टैप (Tap) कर उस व्यक्ति को सेंड कर दीजिए ।

इस तरह आप सफलतापूर्वक किसी व्यक्ति को ईमेल (E-mail) कर पाएंगें ।

7 सर्च इंजन (Search Engine) क्या है ओर इसका उपयोग क्या है ?

प्रतिदिन हम इंटरनेट से कई सूचनाएँ ढूंढ कर निकालते हैं और इसके लिए एक माध्यम का अवश्य प्रयोग करते हैं परन्तु क्या हमने यह जानने का प्रयास किया की ये सर्च इंजन क्या है और इसका उपयोग क्या है ? इसकी विस्तारपूर्ण चर्चा हम निम्न रुप में करेंगे । यथा

1) सर्च इंजन क्या है ?

सर्च इंजन एक तरह का सॉफ्टवेयर (Software) या प्रोग्राम होता है जो इंटरनेट के माध्यम से काम करता है , जो यूजर द्वारा डाले गए क्वेरी (Query) के आधार पर जानकारी को डाटाबेस (संग्रह) तक पहुँचाता है और फिर अच्छे से अच्छा परिणाम (Result) यूजर को देता है । जिससे यूजर द्वारा खोजी जा रही सूचना के लिए सबसे अच्छी सूचना प्राप्त होती है ।

इंटरनेट पर बहुत सारे सर्च इंजन उपलब्ध हैं जिनमे मुख्य रुप से हैं :–

1) गूगल (Google)
2) बिंग (Bing)
3) याहू (Yahoo)
4) आस्क डॉट कॉम (Ask.com)
5) एओयल डॉट कॉम (AOL.Com)
6) वायडू (Baidu)
7) वोलफ्रेम अल्फा (Wolhamalpha)
8) डकडकगो (DuckDuckgo)
9) इंटरनेट आर्चिव (Internet Archive)
10) चाचा डॉट काम (Chacha.Com)

सर्च इंजन का उपयोग :–

हम इंटरनेट का उपयोग हर दिन करते है किन्तु क्या कभी यह जानने का प्रयास किया की सर्च इंजन के उपयोग क्या –क्या हैं ? अब हम इस पर विस्तृत चर्चा करेंगें :–

1) रिसर्च :– कई लोग अपना रिसर्च का काम करने के लिए इसका उपयोग करते हैं ।
2) शॉपिंग :– बड़ी संख्या में लोग सर्च इंजन का उपयोग शॉपिंग करने के लिए करते हैं । आजकल फ्लिपकार्ट , अमेज़न अपने यूजर को खुद के बेबसाइट के अन्दर ढूँढ़ने के लिए सरल फीचर देने लगे हैं , लेकिन फिर भी कोई विजिटर इससे संतुष्ट नहीं होता हैं तो वो गूगल खोलता है और वहाँ पर मनपसंद वस्तु को ढूंढ़ना शुरु कर देता है ।
3) मनोरंजन :– सर्च इंजन का उपयोग मनोरंजन के लिए भी किया जाता है । आज के युवा हर समय मनोरंजन कुछ अवश्य करते हैं । इसके द्वारा मनोरंजन के लिए वीडियों , ऑडियों, गेम्ज ढूँढ़ते है – इत्यादि

इंटरनेट की सेवाओं के माध्यम से हम और भी बहुत सारी सुविधाएँ प्राप्त करते हैं । जैसे :–

1) दूसरे व्यक्ति से वार्तालाप करना (Chat with other people) :-
   - यदि हम अनजान व्यक्ति से बातचीत करना तथा नए दोस्त बनाना चाहते हैं तो इंटरनेट सबसे उत्तम माध्यम है ।
   - चैट (Chat) प्रोग्राम द्वारा बिना किसी व्यक्ति की भौगोलिक स्थिति जानते हुए हम बातचीत कर सकते हैं ।
   - चैट के अन्तर्गत यूजर किसी विषय पर लिखित रुप से चर्चा करते हैं ।
   - इंटरनेट से जुड़े कम्प्यूटरों का उपयोग कर दो या दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा वार्तालाप करना चैंटिंग (Chatting) कहलाता है ।

2) टेलनेट (Telnet) :-

- टेलनेट प्रोग्राम का प्रयोग हम दूसरे कम्प्यूटर को जोड़कर कार्य कर सकते हैं तथा उसके संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं । इसे रिमोट लॉगइन (Remote Login) भी कहा जाता है ।

3) यूज़नेट (Usenet) :-

- यह लोगों का समूह है , जो सभी जगह मान्यता प्राप्त कर एक या अधिक लेवल News group के द्वारा विषय (article) की अदली–बदली (Exchange) करते हैं ।
- यूजर अपने उपभोगकर्ता के लिए उपलब्ध ग्रुप के सेट के बारे में निर्णय लेता है ।
- यह सेट हर साइट के लिए भिन्न –भिन्न होता है ।

4) वर्ल्ड वाइड वेब (World Wide Web : WWW)

- वर्ल्ड वाइड वेब (WWW) और इंटरनेट दोनों अलग –अलग चीजें हैं परन्तु दोनों एक–दूसरे पर निर्भर हैं ।
- वर्ल्ड वाइड वेब जानकारी युक्त पेजों का विशाल संग्रह है जो एक –दूसरे से जुड़ा हुआ है इसे वेब पेज कहते हैं ।
- वेब पेज HTML भाषा में लिखा होता है जो कम्प्यूटर में प्रयुक्त एक भाषा है ।
- हर पेज टेक्स्ट , चित्र ध्वनि क्लिप , वीडियो क्लिप , एनीमेशन और विभिन्न चीजों का संयोग है ।
- वेब पेज को जो रोचक बनाता है , वह है हाइपरलिंक , जिसे अक्सर लिंक (Link) कहा जाता है ।
- हर लिंक किसी दूसरे पेज को इंगित करता है और जब हम इस लिंक पर क्लिक करते हैं , हमारा ब्राउजर लिंक से जुड़े पेज को उपलब्ध कराता है ।

अतः वर्ल्ड वाइड वेब एक विशाल सूचनाओं का डाटाबेस (संग्रह) है तथा हर सूचना एक–दूसरी सूचना से जुड़ी रहती है ।

5) फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल (FTP)

- यह इंटरनेट पर जुड़े दो कम्प्यूटरों के बीच फाइल स्थानान्तरण करने की सुविधा है ।
- वेब ब्राइजर का उपयोग कर हम फाइल को डाउनलोड तो कर सकते हैं , पर अपलोड नहीं कर सकते हैं ।

- एफ टी पी (FTP) अनुप्रयोग हमें वेब साइट पर फाइल अपलोड करने में सहायता करता है ।

6) ई कॉमर्स (E-Commerce) :.

- ई कॉमर्स बिना कागज़ के व्यापार जानकारी का इलेक्ट्रॉनिक डेटा के द्वारा आदान–प्रदान है ।
- ई कामर्स के अन्तर्गत वस्तुओं या सेवाओं की खरीद –बिक्री इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम यानि इंटरनेट के द्वारा होती है ।
- यह इटंरनेट पर व्यापार है ।

7) वीडियो कान्फ्रेंसिंग (Video Conferencing)

वीडियो कान्फ्रेंसिंग आधुनिक संचार तकनीक है , जिसके माध्यम से दो या दो से अधिक स्थानों से एक साथ ऑडियो –वीडियों के माध्यम से कई लोग जुड़ सकते हैं । इसे वीडियों टेलीकॉन्फ्रेंस भी कहा जाता है । इसका प्रयोग विशेषकर किसी बैठक या सम्मेलन के लिए तब किया जाता है , जब कई लोग अलग –अलग स्थानों में बैठे हों । वीडियों कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अभिलेखों और कम्प्यूटर पर चल रही सूचनाओं का आदान –प्रदान भी किया जा सकता है ।

वीडियों कॉन्फ्रेंसिंग में वीडियों कैमरा या वेब कैम , कम्प्यूटर मॉनिटर , टेलीविजन या प्रोजेक्टर माइक्रोफोन , लाउडस्पीकर और इंटरनेट की आवश्यकता होती है ।
जिन देशों में टेलीमेडिसिन और टेलीनर्सिंग को मान्यता प्राप्त है , वहाँ लोग आपातकाल में नर्स और डाक्टरों से वीडियो कॉन्फेंसिंग के माध्यम से संपर्क कर सकते हैं ।

आजकल इस आधुनिक तकनीक का प्रयोग शिक्षा , और विदेश में बैठे लोगों की न्यायालयों में गवाही और कंपनियों द्वारा अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए भी होने लगा है । विश्व के कई विश्वविद्यालयों ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता को देखते हुए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग को अपनाया है । भारत सहित कई देशों में सरकारी बैठकों और कार्य निर्देश भी अब इसके द्वारा हो रहे हैं । इस प्रकार समय और खर्च दोनों की बचत होती है ।

(वीडियो कांन्फ्रेंसिंग का चित्र)

सहायक सामग्री

1) WWW.Futuretricks.org
2) https://hindi.edufever.com
3) Computerhindinotes.com
4) https/www.wtechni.com
5) Wikipedia.org.
6) Wikihelp.in
7) www.exceed.net.in
8) Tutorialpandit.com
9) Atstudy.in

ईकाई एक

1) कम्प्यूटर क्या है ?
2) कम्प्यूटर की परिभाषा
3) मुख्यरुप से कम्प्यूटर निम्नलिखित कार्य करता है :7
   1) इनपुट 2) प्रोसेसिंग 3) आउटपुट 4) स्टोरेज

4) कम्प्यूटर के जनक कौन हैं ?
5) कम्प्यूटर के प्रकार (Types of Computer)
   कम्प्यूटर के प्रकार मुख्य रुप तीन भागों में विभाजित है :–

   1) कार्यप्रणाली के आधार पर
   2) उद्देश्य के आधार पर
   3) आकार के आधार पर
   1) कार्यप्रणाली के आधार पर (Based on work) :-
      1) एनालॉग कम्प्यूटर (Analog Computer)
      2) डिजिटल कम्प्यूटर (Digital Computer)
      3) हाइब्रिड कम्प्यूटर (Hybrid Computer)

   2) उद्देश्य के आधार पर (Based on Purpose) :-
      1) सामान्य कम्प्यूटर (General Purpose Computer)
      2) विशेष कम्प्यूटर (Special Purpose Computer)
   3 आकार के आधार पर (Based on Size))

1) सुपर कम्प्यूटर (Super Computer)
2) मेनफ्रेम कम्प्यूटर (Mainframe Computer)
3) माइक्रो कम्प्यूटर (Microcomputer)
4) मिनी कम्प्यूटर (Mini Computer)

4 कम्प्यूटर की संरचना अर्थात् कम्प्यूटर के महत्वपूर्ण भाग (Important Parts of Computer) :-

1) इनपुट यूनिट (Input Unit)
2) सेन्ट्रल प्रोसेसिंग युनिट (ALU)
3) अर्थमेटिक लॉजिक युनिट (ALU)
4) कंट्रोल युनिट (Control Unit)
5) मेमरी युनिट (Memory Unit)
6) आउटपुट युनिट (Output Unit)

5 हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर (Hardware and Software)
1) हार्डवेयर 2) सॉफ्टवेयर

6 कम्प्यूटर के भाग (Parts of Computer
7 कम्प्यूटर के विकास का इतिहास अथवा कम्प्यूटर का परिचयात्मक इतिहास
8 कम्प्यूटर की पीढ़ियाँ
9 कम्प्यूटर की विशेषताएँ (Characteristics of Computer
1) स्वचालित (Automatic 2) गति (Speed)
3) त्रुटिहीनता (Accuracy) 4) ऑटोमेशन (Automation)
5) भंडारन क्षमता (Storage Capacity
6) सार्वभौमिकता (Versatieity)
7) सक्षमता (Diligence)
8) गोपनीयता (Secrecy)

10 कमियां
11 कम्प्यूटर का उपयोग अथव महतव : –
(Importance of Computer

1) शिक्षा

2) वैज्ञानिक अनुसंधान
3) बैंक
4) अस्पताल
5) रक्षा
6) संचार
7) उघोग व व्यापार
8) मनोरंजन
9) प्रकाशन
10) प्रशासन